वसंत मंजरी

तुर्गनेव

अनुवाद: ठाकुर राजबहादुर सिंह

1962

वसन्त-मञ्जरी

वसन्त-मञ्जरी

तुर्गनेव

ठाकुर राजबहादुरसिंह

ज्ञा न प्र का श न

दिल्ली

प्रारम्भिक

.........रात को दो बजे वह अपने पढ़ने के कमरे में वापस आया। नौकर को उसने चिराग़ जलते ही छुट्टी दे दी थी। अकेले अँगीठी के पास आराम-कुर्सी पर पड़कर उसने दोनों हाथों से मुँह ढक लिया।

उसे कभी अपने शरीर और मन पर ऐसे भारी बोझ का अनुभव नहीं हुआ था। अभी-अभी शाम को उसने आकर्षक महिलाओं और सुसंस्कृत पुरुषों के साथ हास्य-विनोद किया था। कुछ स्त्रियाँ असाधारण रूपवती थीं; लगभग सभी पुरुष बुद्धिमान और मेधावी थे। उसने स्वयं उन सब से अच्छी तरह बात की थी, पर इस क्षण से पहले उसके मन का इस बेरोक नीरसता और गला घोंटू विचार का आभास नहीं मिला था। यदि उसकी उम्र आज कुछ कम होती तो ऐसे अवसर पर वह दुःख, थकान और कुढ़न से चिल्लाये बिना न रहता। काठ के कीड़े की भाँति एक अजीब कड़ुवाहट और जलन उसके दिल को काटे खाती और आत्मा में धँसी जाती थी। एक अद्‌भुत अरुचि और घृणा का भार उसे चारों ओर से विकट अन्धकार की भाँति घेरे हुए था। इस अन्धकार और कटुता से बचने का उसे कोई मार्ग नहीं सूझता था।

वह धीरे-धीरे, अप्रतिहित गति और क्रोध के साथ सोचने लगा ....“मानवीय वस्तुएँ कैसी निस्सार, व्यर्थ, ओछी और मिथ्या हैं!” इस बावन वर्ष की अवस्था में मनुष्य-जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का चित्र उसकी मानसिक दृष्टि के सामने आ गया, पर

उसके मन में कोई भी अवस्था ठीक नहीं जँची। हर जगह वही छलनी में अनन्त जल-धार का-सा प्रपात; वही प्रखर वायु और वही आत्म-प्रवंचना—आधा सद्विश्वास और आधी चेतनता—रोते बच्चे को बहलाने और फुसलाने की भाँति—नज़र आती थी। फिर सहसा वृद्धावस्था भयानक और नाशकारी मृत्यु की विभीषिका साथ लेकर सिर पर आ पड़ती है·········और अन्ततः गहरी खन्दक में ढकेल देती है! सो भी, यदि इसी प्रकार जीवन का अन्त हो जाय, तो हमें अपने को भाग्यवान समझना चाहिए! यह भी तो सम्भव है कि अन्त के पहले लोहे में जंग की तरह जीवन में कष्ट और निर्बलता का सामना करना पड़े। उसने कवियों द्वारा वर्णित जीवन-समुद्र को तूफ़ान की उत्ताल तरंगों से घिरा हुआ नहीं देखा—नहीं; उसने उस समुद्र को शान्त, समतल, स्थिर और गहरे-से-गहरे स्थल पर भी पारदर्शी के रूप में देखा। अपने आपको उसने एक बल खाती हुई छोटी डोंगी में बैठे हुए गहरे और कीचड़-युक्त समुद्र-तल को देखते हुए पाया, भयकंर मछलियों की भाँति वह घृणित राक्षसों का रूप देखता है—और देखता है जीवन की समस्त विशेषताएँ, रोग, शोक, उन्माद, दरिद्रता और अन्धता।······उसने क्षण-भर रुककर उन राक्षसों में से एक को अन्धकार से पृथक् देखा। वह पल-पल में बढ़कर ऊँचा और स्पष्ट होता गया, जिससे उसे देखकर घृणा भी उसी परिमाण में बढ़ती गई······जिस नाव में वह सवार है, क्षण-भर बाद वह उलटने वाली है! पर उधर तो देखो, वह—राक्षस पुनः अस्पष्ट होने लगा! ओ हो! वह तो डोंगी से कूदकर समुद्र में लुप्त हो गया—नीचे कीचड़ में वह अब भी अस्पष्ट पुतला-सा हिल-डुल रहा है।······पर अन्तिम दिन आने वाला है, जब इसी प्रकार उसकी डोंगी भी उलटकर रहेगी।

उसने सिर हिलाया और उछलकर आराम-कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। थोड़ी देर कमरे में चेहलकदमी करने के बाद लिखने की

मेज़ के पास जाकर बैठ गया और एक-एक दराज़ खोलकर कुछ कागज़ात और स्त्रियों के पास से आये हुए पत्र उलट-पुलटकर कुछ ढूँढ़ने लगा। वह ऐसा क्यों कर रहा है और क्या ढूँढ़ रहा है, इस का कारण वह खु.द भी नहीं बता सकता था—वास्तव में वह कोई चीज़ न ढूँढ़कर अपने उन विचारों से, किसी अन्तर्प्रेरणा-द्वारा पीछा छुड़ाना चाहता था, जो उसे दबा रहे थे। यों-ही उलट-पुलट-कर उसने कई पत्र देखे। एक पत्र में मैले-से फीते के साथ एक सूखा फूल बँधा हुआ था। उसने अपने कन्धे हिलाकर अँगीठी की ओर देखा और सम्भवतः इस विचार से उस तरफ मुड़ा कि इस व्यर्थ के कूड़े को जला डाले। जल्दी से वह दराज़ों में हाथ डालकर सब निकालने लगा। सहसा उसके हाथ एक पुराने ढंग की अठ-पहलू डिबिया आ गई, जिसे देखकर वह चौंक-सा उठा। उसने धीरे-से डिबिया का ढक्कन खोला। डिबिया की पैंदी में रुई की दो मैली तहों के बीच एक क़ीमती क्रास[1] रखा था।

कुछ देर तक वह क्रास की ओर टकटकी बाँधकर किंकर्तव्य विमूढ़-सा देखता रहा—हठात् उसके मुँह से एक हलकी-सी चीख़ निकल गई।……उसके मुख-मण्डल पर शोक और आनन्द के मिश्रित भाव छा गए। जैसे कोई बहुत दिनों से बिछुड़ा हुआ प्रेमी अकस्मात उसके सामने आ गया। प्रेमी वही है, काल-चक्र से उसका रूप बिल्कुल बदल गया है।

वह उठ खड़ा हुआ और फिर अँगीठी के पास आराम कुर्सी पर दोनों हाथों से मुँह ढककर बैठ गया……"वह बात आज ही क्यों घटित हुई ?" मन-ही-मन सुदूर-भूत की अनेक बातों पर विचार करते हुए उसने सोचा।

उसने यह बातें सोचीं………

---

१. धन (+) के आकार का धार्मिक पदक।

पर पहले उसका पूरा नाम सुन लीजिए। एसका नाम था मित्री पालोविच सैनिन।

आराम-कुर्सी पर पड़े-पड़े उसने जो-जो बातें याद कीं अब आगे हम उनका वर्णन करेंगे।

१

सन् १८४० की बात है। गर्मियों के दिन थे। सैनिन ने उस समय बाईसवें वर्ष में प्रवेश किया था। इटली से रूस लौटते समय वह रास्ते में फ्रैंकफोर्ट[1] में ठहर गया था। उसकी जायदाद मामूली थी; पर वह स्वतन्त्र और लगभग सभी पारिवारिक बन्धनों से मुक्त था। उसके पास कुछ हज़ार रूबल[2] थे। उन्हें वह सरकारी नौकरी में जुटने से पहले देशाटन में ख़र्च कर देना चाहता था, क्योंकि सरकारी नौकरी किये बिना वह अपनी आजीविका अच्छी तरह नहीं चला सकता था। सैनिन ने अपने इस उद्देश्य के अनुसार कार्यक्रम बना लिया था और लौटकर फ्रैंकफोर्ट पहुँचने पर उसके पास पीटर्सबर्ग पहुँचने के लिये काफ़ी ख़र्च बच रहा था। सन् १८४० में बहुत थोड़ी रेलगाड़ियाँ जारी हुई थीं, यात्रियों को घोड़ा-गाड़ियों-द्वारा सफ़र करना पड़ता था। सैनिन ने अपने लिये गाड़ी में स्थान ले लिया था; पर गाड़ी रात के ग्यारह बजे तक नहीं रवाना हुई, जिससे तैयारी के लिये काफ़ी समय बच रहा था। समय बड़ा सुहावना था। सैनिन ने वहाँ के प्रसिद्ध ह्वाइट स्वान होटल में भोजनादि करने के बाद शहर की सैर करने का विचार किया! कई जगह इधर-उधर चक्कर लगाने के बाद वह महाकवि गेटे का स्मारक देखने गया, जिसकी कृतियों में से केवल एक का अनुवाद उसने फ्रेंच-भाषा में पढ़ा था। इसके बाद वह मेन-नदी के किनारे जाकर एक कुशल यात्री की भाँति

---

१. फ्रैंकफ़ोर्ट जर्मनी का एक साधारण नगर है।

२. रूसी सिक्का जिसका मूल्य लगभग डेढ़ रुपये के बराबर होता है।

टहलने लगा। टहलते-टहलते जब छः बज गये और उसे थकावट मालूम हुई, तो वह वहाँ से शहर की एक छोटी सड़क पर जा पहुँचा। रेत में घूमने के कारण उसके बूट गर्द से ढक गये थे। जिस सड़क पर वह पहुँचा, वह ऐसी थी, जिसे वह बहुत दिनों तक नहीं भुला सका। उस सड़क पर उसने गिवनी रोज़ेली के नाम का एक साइन-बोर्ड देखा। यह एक इटली के हलवाई की दुकान थी। सैनिन एक गिलास लेमनेड पीने के अभिप्राय से उस दुकान के अन्दर गया। दूकान के भीतरी हिस्से में मेज़ पर दवाफरोशों की दुकान की तरह सुनहले लेबिलों की अनेक बोतलें, गिलास, बिस्कुट, चॉकलेट, रोटियाँ और मिठाइयाँ क़ायदे से सजाई रखी थीं; पर वहाँ कोई भी दुकान-दार नहीं नज़र आया—खिड़की के पास एक सफ़ेद बिल्ली कुर्सी पर बैठी उसे अपने पञ्जों से खुरच रही थी। दुकान से मिले हुए दूसरे कमरे से कुछ शोर-सा सुनाई दे रहा था। क्षण-भर खड़े रहने के बाद उसने ज़ोर-से घंटी बजाई और अन्दर की तरफ़ देखकर "कोई है ?" की आवाज़ लगाई। उसी क्षण किसी ने अन्दर के कमरे के किवाड़ जोर से धक्का देकर खोल दिए और उसके बाद सैनिन ने जो दृश्य देखा उससे वह आश्चर्य-चकित होकर सन्नाटे में आ गया।

२

एक उन्नीस साल की लड़की सिर खोले और बाल बिखेरे हुए अन्दर के कमरे से दौड़कर दुकान में आई और सैनिन को देखते ही उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए बोली—"जल्दी चलिए, उसकी जान बचा दीजिए !" लड़की की बात न मानने के अभिप्राय से नहीं, बल्कि आश्चर्य की अधिकता से सैनिन लड़की के पीछे नहीं गया। वह अपनी जगह से टस-से-मस नहीं हुआ। उसने अपने जीवन-भर में ऐसी सुन्दरी लड़की नहीं देखी थी। लड़की ने हताश-सी होकर फिर

कहा—"चलिए; जल्दी कीजिए।" सैनिन अब चुपचाप खड़ा न रह सका और फ़ौरन उस लड़की के पीछे-पीछे अन्दर के कमरे में घुसा।

कमरे में एक पुराने ढंग के सोफ़े पर एक चौदह साल का लड़का, जिसका बदन पीला पड़ गया था, लेटा था। उसकी सूरत से स्पष्ट मालूम होता था कि वह उपरोक्त लड़की का भाई है। लड़के की आँखें बन्द थीं और उसका चेहरा सुस्त हो रहा था। उसके होंठ नीले और दाँत जकड़ें-से दीखते थे। ऐसा मालूम होता था कि उसकी श्वास-क्रिया भी बन्द हो चुकी है। उसका एक हाथ सोफ़े से नीचे की ओर लटक रहा था और दूसरा माथे पर स्थिर था। लड़के ने कपड़े पहन रखे थे और उसके बटन बन्द थे। गुलूबन्द भी कसकर गले में बाँधा हुआ था।

लड़की दौड़कर उसके पास पहुँची और घबराहट से चिल्ला उठी—"ओह! मर गया! मर गया!!" फिर रोकर बोली—"ओह! अभी-अभी यह यहाँ बैठा मुझसे बातें कर रहा था—अकस्मात् गिर-कर निर्जीव-सा हो गया!......हे भगवान्! क्या किसी तरह यह बच सकेगा? माँ भी यहाँ नहीं है। पैंतलिवन, डॉक्टर!" उसने हठात् इटैलियन भाषा में कहा—"तुम डॉक्टर के पास गये थे?"

"नहीं, मैं तो नहीं गया; लुई को भेजा है।" दरवाज़े की ओर से एक आदमी ने मोटे स्वर में कहा। यह छोटे क़द का बुड्ढा और कुरूप-सा आदमी था। उसकी पोशाक-ही इस बात की द्योतक थी कि वह कोई नौकर-पेशा आदमी है।

"लुई दौड़ गया है, मुझसे तो जल्दी चला भी नहीं जाता," बुड्ढे ने इटैलियन-भाषा में कहा—"मैं पानी लाया हूँ।"

उसने अपनी सूखी और टेढ़ी उँगलियों में एक बोतल पकड़ रखी थी।

"पर तब तक तो एमिल मर जाएगा!" लड़की ने चिल्लाकर कहा। फिर सैनिन की ओर हाथ बढ़ाकर बोली—"महाशय, दयालु

महाशय ! क्या आप इस पर कृपा कर सकते हैं ?"

"यह मृगी रोग है;—इसकी चाँद के बाल काट देने चाहिए।" बुड्ढे पैंतलिवन ने कहा।

यद्यपि सैनिन को चिकित्सा का कुछ भी ज्ञान न था, पर वह इतना जरूर जानता था कि चौदह वर्ष के लड़कों को मृगी रोग नहीं हुआ करता।

"नहीं यह मामूली बेहोशी है," उसने पैंतलिवन की ओर रुख करके कहा—"तुम्हारे पास ब्रुश है ?"

बुड्ढे ने 'ब्रुश' का अर्थ न समझते हुए पूछा—"क्या ?"

"ब्रुश, ब्रुश !" सैनिन ने जर्मन और फ्रेंच भाषाओं में कहा—साथ ही कपड़ों पर इस तरह हाथ फेरे जिससे ब्रुश का बोध हो।

आखिर बुड्ढे ने बात समझ ली।

"हाँ, हाँ, है हमारे पास !" बुड्ढे ने कहा।

"अच्छा तो ले आओ जल्दी से ! लड़के का कोट उतारकर उसके शरीर पर मालिश होनी चाहिए।"

"बहुत अच्छा......! और क्या सिर और मुँह पर पानी नहीं छिड़कना चाहिये ?"

"नहीं, पानी बाद में; अब तो जल्दी से ब्रुश लाओ।"

पैंतलिवन ने बोतल ज़मीन पर रख दी और दौड़कर दो ब्रुश लाया, जिनमें से एक बाल साफ़ करने का था और दूसरा कपड़े साफ़ करने का। बुड्ढे के साथ एक झबरा कुत्ता भी दुम हिलाते हुए कमरे में आया और बारी-बारी से तीनों के मुँह देख-देखकर आँखों से प्रश्न-सा करने लगा।

सैनिन ने फ़ौरन लड़के का कोट उतार दिया और क़मीज ऊपर उठाकर लगा उसकी छाती और बाहों पर ब्रुश फेरने। पैंतलिवन भी उसकी मदद पर लग गया और बाल साफ़ करनेवाला ब्रुश लड़के की टाँगों पर फेरने लगा। लड़की घुटनों के बल सोफ़े के पास

बैठ गई और दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर टकटकी बाँधे अपने भाई को देखती रही।

सैनिन ब्रुश फेरते-फेरते बीच-बीच में लड़की की ओर भी देखता जाता था। ओह! कैसी सुन्दरी लड़की थी वह!

३

लड़की का सौन्दर्य सचमुच अद्वितीय था। इस विपत्ति के समय भी उसके कान की बालियों, चमकीले केशों और बड़ी-बड़ी काली आँखों की खूबसूरती सैनिन की आँखों में खुब-सी गई······उसे लड़की के उस सुन्दर देश—इटली—की याद आ गई, जहाँ की यात्रा करके वह वापस आ रहा था······पर इटली में भी तो ऐसी सुन्दरता कहीं देखने में नहीं आई। लड़की गहरी साँस ले रही थी, उसका चित्त अपने भाई को चैतन्यावस्था में देखने के लिए विकल हो रहा था।

सैनिन ने ब्रुश फेरना जारी रक्खा। उसने पैंतलिवन की ओर ध्यान से देखा। बुड्ढा ब्रुश फेरते-फेरते थककर हाँफने लगा था। वह बड़ा ज़ोर लगाकर थम-थमकर ब्रुश फेर पाता था। उसके बेहिसाब बढ़े हुए बाल पसीने से तर हो गए थे और वह इधर से उधर झुककर करवट-सी बदलने लगा था।

"तुम लड़के का बूट उतार लो।" सैनिन ने बुड्ढे से कहा।

झबरा कुत्ता यह असाधारण दृश्य देखकर भौंकने लगा।

"चुप रह!" बुड्ढे ने कुत्ते को डाँट बताई। इस समय लड़की के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखा दौड़ गई। उसकी भवें ऊपर उठीं और उसकी आँखें खुशी से चमक-सी उठीं।

सैनिन ने देखा······लड़के के चेहरे पर सुर्खी दौड़ गई थी और आँखें फिरती नज़र आती थीं······नथनों से साँस लेने के चिह्न

स्पष्ट दीखते थे और भिंचे हुए दाँतों से ठँढी आह-सी निकलती दिखाई देती थी……।

"एमिल !" लड़की ने पुकारा……"एमिलियो !!…"

धीरे-धीरे उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें उभरीं। अब भी उसकी आँखें पूर्णतः नहीं खुलती थीं; पर चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कराहट दौड़ गई। इसके बाद उसने नीचे लटका हुआ हाथ उठाकर छाती पर रख लिया।

"एमिलियो !" लड़की ने फिर पुकारा और वह उठकर खड़ी हो गई। उसका चेहरा उग्र होकर ऐसा प्रदीप्त हो रहा था कि मालूम होता था क्षण-भर में ही या तो वह रो उठेगी या जोर से हँस पड़ेगी।

"एमिल ! क्या हो गया तुम्हें ? एमिल !" बाहर से आकर प्रवेश करते हुए एक साफ़-सुथरे कपड़ों वाली बुढ़िया ने कहा। उसके चेहरे पर गम्भीरता छाई हुई थी।

उसके पीछे-पीछे एक अधेड़ आदमी भी अंदर आया। दोनों के पीछे एक नौकरानी थी।

लड़की दौड़कर उनसे मिली।

"भाई की जान बच गई माँ ! अब वह होश में आगया !" कहकर लड़की ने पूरे आवेग में उपरोक्त स्त्री का आलिंगन किया।

"पर यह क्या ?" स्त्री ने कहा—"मैं लौटी……अकस्मात् मुझे डॉक्टर और लुई मिल गए……"

लड़की ने बतलाना शुरू किया कि किस प्रकार लड़के का यह हाल हुआ। डॉक्टर लड़के के पास जाकर उसे देखने लगा। लड़के के होश-हवास अब दुरुस्त होते दीखते थे और वह मुस्करा रहा था। ऐसा मालूम होता था कि वह अपने द्वारा ऐसी खलबली पैदा हो जाने पर लज्जित हो रहा है।

"अच्छा, आप लोग ब्रुश से रोगी का शरीर रगड़ रहे थे ?"

सैनिन और पैंतलिवन से डॉक्टर ने कहा—"बहुत अच्छा उपचार किया.. अच्छा, अब आगे क्या करना चाहिए···" डॉक्टर ने कहा।

उसने नब्ज़ देखी। "ज़बान दिखाओ!" उसने लड़के से कहा।

उपरोक्त स्त्री अब चिन्तित भाव से लड़के के पास गई और झुककर उसका चेहरा देखने लगी। लड़का फिर मुस्कराया और स्त्री की ओर देखकर उसके चेहरे पर लज्जा-मिश्रित हल्की-सी लाली दौड़ गई।

इसी समय सैनिन को यह बात सूझी कि अब वहाँ उसके ठहरने की ज़रूरत नहीं रही है। वह दुकान में गया और बाहर निकलना ही चाहता था कि लड़की ने आकर उसे रोक लिया।

"ओ हो! आप जा रहे हैं!" लड़की ने कहा—"मैं आपको रोक तो नहीं सकती; पर आज रात को आप हमारे यहाँ अवश्य पधारें। हम आपके परम कृतज्ञ हैं—आपने मेरे भाई की ज़िन्दगी बचाई है। हम आपको धन्यवाद देना चाहते है—माँ ने भी कहा है। आप अपना परिचय और हम लोगों को मिलने-जुलने का अवसर दीजिये···।"

"पर मैं तो आज ही बर्लिन जा रहा हूँ।" सैनिन ने हिचकिचाकर कहा।

"तो भी इतना समय तो आपको मिलेगा ही," लड़की ने उत्सुकतापूर्वक कहा—"एक घण्टे में आ जाइये—सिर्फ़ चाय पीकर चले जाइयेगा। वादा कीजिए! मुझे भाई के पास जाना है। आप ज़रूर आयें!"

सैनिन बेचारा भला क्या करता?

"अच्छा, आऊँगा।" उसने कहा।

लड़की उससे हाथ मिलाकर चली गई और वह दुकान से निकलकर सड़क पर आ गया।

४

डेढ़ घण्टे बाद जब सैनिन रोज़ेली की दुकान पर फिर गया तो उसका इस प्रकार सत्कार हुआ, जैसे वह उसी परिवार का कोई प्राणी था। एमिलियो अभी तक उसी सोफ़े पर बैठा हुआ था, जिस पर वह पहले लेटा था। डॉक्टर ने नुस्खा लिखकर यह आदेश दिया कि चूँकि हृदय की कमजोरी के कारण बेहोशी हुई है और लड़के के स्नायु तंतुओं पर धक्का लगा है, इसलिए उसे शांत-चित्त होकर विश्राम करने दिया जाय। उसे पहले भी सिर में चक्कर की शिकायत रहा करती थी; पर वह इस तरह इतनी देर तक बेहोश कभी नहीं हुआ था। तो भी डॉक्टर ने सब को निश्चय दिला दिया कि अब कोई खतरे की बात नहीं है। एमिल को अब ढीले कपड़े पहना दिये गए थे। वह अब ख़ूब प्रसन्न नज़र आता था। सोफ़े के सामने एक बड़ी गोल मेज पर साफ़ मेज़पोश बिछा था, जिस पर बड़े चीनी के बर्तन में चॉकलेट और क्रमशः बिस्कुट, शराब, मक्खन और काफ़ी के बर्तन सजाकर रखे थे। गुलदान और शमादान अपनी-अपनी जगह क़ायदे से सजाकर रखे गए थे। सोफ़े से ज़रा हटकर एक गद्देदार कुर्सी रखी हुई थी जिस पर सैनिन को बैठाया गया। उस दुकान के सारे स्त्री-पुरुष—झबरे कुत्ते और सफ़ेद बिल्ली सहित—उस समय हाज़िर थे। सभी उस समय खुश थे। कुत्ता भी अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा था—हाँ, बिल्ली ज़रूर अभी तक अर्द्ध-निद्रित अवस्था में थी। दुकानवालों ने सैनिन का परिचय प्राप्त करना चाहा और उसने बतलाया कि वह एक रूसी है। दोनों माँ-बेटियों ने आश्चर्य प्रकट किया कि वह रूसी होकर भी ऐसी शुद्ध जर्मन भाषा बोल लेता है। फिर उन्होंने सैनिन से कहा कि यदि वह चाहे तो फ्रेन्च भाषा में बातचीत कर सकता है, क्योंकि वे दोनों उक्त

भाषा भली भाँति समझ और बोल लेती हैं। सैनिन ने तुरन्त फ्रेंच भाषा में बोलना शुरू कर दिया। सैनिन का नाम सुनकर दोनों बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने कहा कि रूसी होकर भी उसका नाम इतना सरल और सहज उच्चारणीय है। उसका ईसाई नाम 'मित्री' भी उन्होंने पसन्द किया। लड़की की माँ ने बतलाया कि अपनी युवास्था में उसने 'मित्रियो' नाम का एक नाटक देखा था, पर 'मित्री 'मित्रियो' से भी अच्छा है। इस प्रकार सैनिन लगभग घण्टे भर उनसे बात करता रहा। माँ-बेटियों ने उसे अपने कुटुम्ब का भी सारा हाल कह सुनाया; पर विशेष बातें लड़की की बुढ़िया माँ ने ही कीं। उसने सैनिन को बतलाया कि उसका नाम लियोनारा रोज़ेली है और पच्चीस वर्ष पहले उसके पति गिवनी बैतिस्ता रोज़ेली ने फ्रैंकफ़ोर्ट में हलवाई की दुकान खोली थी। बाद में उसका देहान्त हो गया। फिर उसने बतलाया कि उसका पति विसेन्जा (इटली) का निवासी था और बड़ा क्रोधी और चिड़चिड़े मिजाज़ का आदमी था। इटली के प्रजातन्त्र दल से उसका सम्बन्ध था। यह बातें रोज़ेली ने सोफ़े के पास रखी हुई अपने पति की प्रतिमा को दिखा दिखाकर कहीं। "यह भी निश्चित बात है कि मूर्तिकार भी प्रजातन्त्रवादी था," रोज़ेली ने ठंडी साँस लेकर कहा। उस प्रतिमा में गिवनी बैतिस्ता का पूर्ण सादृश्य नहीं दीखता था, क्योंकि प्रतिमा के मुख मण्डल से कुछ ऐसा रूखापन और कटुता टपकती थी कि देखने वाला उसे डाकू के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकता था। अपना परिचय देते हुए श्रीमती रोज़ेली ने इस प्रकार बतलाया—"मेरा पितृ-कुल तो परमा के प्राचीन नगर से, जहाँ कोरीज़ियो का बनाया हुआ प्रसिद्ध बुर्ज है, सम्बन्ध रखता है; पर बहुत दिनों से जर्मनी में रहने के कारण मैं बिल्कुल जर्मन बन गई हूँ।" इसके बाद उसने विषाद-युक्त मुँह बनाकर सिर हिलाते हुए लड़के और लड़की की ओर इशारा करके कहा—"अब तो मेरे पास बस यही सम्पत्ति—एमि-

लियो (पुत्र) और जेमा (लड़की)—रह गई है। मैं दोनों ही को प्यार करती हूँ - ये आज्ञाकारी हैं—ख़ासकर एमिलियो......।"

इस पर लड़की ने कहा—"क्या मैं तुम्हारी आज्ञा नहीं मानती ?"

"नहीं, अपने बाप की तरह तुम भी प्रजातन्त्रवादिनी हो !" माँ ने जवाब दिया।

इसके बाद रोज़ेली ने बतलाया कि उसका व्यापार पहले की अपेक्षा किस प्रकार गिर गया है, और उसका स्वर्गीय पति पाक-विद्या का कैसा विशेषज्ञ था...(पैंतलिवन ने भी इस बात का समर्थन किया), फिर ईश्वर की कृपा का आधार मानकर उसने किसी तरह गुज़र-बसर करने पर सन्तोष प्रकट किया।

५

जेमा ने अपनी माँ की बात ध्यान से सुनी और क्षण-भर हँसने के बाद ठंडी साँस ली, फिर माँ के कन्धे पर हाथ रखकर सैनिन की ओर देखा। आख़िर वह उठ खड़ी हुई और झुककर माँ का आलिंगन करके उसका चुम्बन किया। इस पर रोज़ेली ज़ोर से हँसकर चिल्ला उठी। पैंतलिवन सैनिन के सामने आ-खड़ा हुआ। उसके रँग-ढँग से मालूम होता था कि वह अपने जीवन में पहले कभी गायक रह चुका है और बहुत दिनों पहले वह काम छोड़कर रोज़ेली के परिवार में एक मित्र और नौकर की मध्यवर्ती स्थिति में काम करने लगा था। अधिक समय तक जर्मनी में रहकर भी उसने जर्मन-भाषा का बहुत कम ज्ञान प्राप्त किया था। हाँ, जर्मन-भाषा में गाली देना और क़सम खाना उसने विशेष परिश्रम से सीखा था और प्रत्येक जर्मन को एकाध गाली की बानगी ज़रूर सुना देता था। इटैलियन-भाषा वह बड़े फर्राटे के साथ बोलता था, क्योंकि उसका जन्म-स्थान सिनोगाली था। एमिलियो घरेलू लाड़-प्यार के कारण

बिगड़ गया था। उसे सब को परेशान करने में आनन्द आता था। उसने माँ के कहने पर लजाते हुए सैनिन को धन्यवाद दिया और चुपचाप बिस्कुट और मिठाइयाँ खाने में लग गया। सैनिन को विवश होकर चॉकलेट के दो प्याले पीने पड़े और अब बिस्कुटों का नम्बर आया। सैनिन ज्यों-ही एक बिस्कुट खाने लगता, जेमा उसके हाथ में दूसरा और थमा देती—और इन्कार करना तो वहाँ असम्भव था ही! इस प्रकार सैनिन वहाँ ऐसा आनन्द-विभोर हो गया कि उसे इस बात का खयाल भी नहीं रहा कि समय कितना गुज़र गया। अभी सैनिन को उन्हें अपनी रामकहानी सुनानी थी—रूस की खास बातें, वहाँ का जलवायु, सामाजिक जीवन, कृषकों की दशा—विशेषतः क़ज़्ज़ाकों[१] और सन् १८१२ ई० के युद्ध के साथ-साथ महान् पीटर, क्रेमलिन और रूसी गानों के सम्बन्ध में भी बहुत-कुछ बतलाना था। उन माँ-बेटियों ने रूस के सम्बन्ध में बहुत कम बातें सुन रखी थीं। वे, विशेषतः रोज़ेली जिसका असली नाम लीनोर था, तरह-तरह के प्रश्न करने लगीं। सैनिन ऐसे प्रश्नों से घबरा गया। रोज़ेली ने यह भी पूछा कि क्या पीटर्सबर्ग में वह बरफ़ का घर अब भी मौजूद है जो गत शताब्दी में बनाया गया था और जिसका अद्भुत वर्णन उसने अपने पति की एक पुस्तक में पढ़ा था? इसके जवाब में जब सैनिन ने लीनोर से पूछा कि क्या आपकी समझ में रूस में ग्रीष्म ऋतु होती ही नहीं? तो उसने स्वीकार किया कि वह रूस के सम्बन्ध में ऐसी ही कल्पना करती थी कि वह सदा बरफ़ से ढका रहता होगा; सब ऊन से अच्छी तरह शरीर ढककर बाहर निकलते होंगे और सभी सैनिक मेहमाँनेवाज़ और कृषक आज्ञाकारी होते होंगे! सैनिन ने माँ-बेटियों को रूस का सच्चा हाल बताने की

१ क़ज़्ज़ाक फ़ारसी शब्द है जिसका व्यवहार रूस में 'लूटमार का भी पेशा करने वाले डाकुओं' के अर्थ में होता है।

कोशिश की। इसके बाद जब रूसी संगीत की बात छिड़ी तो उन्होंने उससे कोई रूसी लय सुनाने की प्रार्थना की और कोने में पड़ा हुआ एक छोटा-सा पुराना प्यानो दिखलाया, जिसमें काले की जगह सफ़ेद और सफ़ेद की जगह काले पर्दे लगे हुए थे। सैनिन बिना किसी संकोच के ही प्यानो पर बैठ गया और पर्दों पर अपनी अभ्यस्त उँगलियाँ फेरने लगा। उसने धीमे स्वर में दो गाने सुनाए। माँ-बेटियों ने उसके स्वर और गाने की प्रशंसा की तथा रूसी भाषा की कोमलता और मिठास से प्रभावान्वित होकर सैनिन से उस गाने का मतलब समझने के लिए कहा। उसने उक्त रूसी गानों का शाब्दिक अनुवाद उन्हें सुना दिया, किन्तु उससे माँ-बेटियों की रूसी-कविता के सम्बन्ध में कोई बहुत अच्छी धारणा नहीं बन सकी। अनुवाद के पश्चात् उसने पुश्किन का एक गाना सुनाया, जिसकी स्वर-लिपि प्रसिद्ध स्वरकार ग्लिका ने बाँधी थी; परन्तु वह उसकी लहर को ठीक नहीं निभा सका—फिर भी दोनों श्रोताओं को उसमें अद्भुत आनन्द मिला। लीनोर ने रूसी और इटैलियन-भाषा में आश्चर्य-जनक समानता देखी। पुश्किन और ग्लिका के नाम भी उसे नितान्त अपरिचित नहीं मालूम हुए। अपना गाना समाप्त करके सैनिन ने उन दोनों से भी कुछ गाने की प्रार्थना की। लीनोर अधिक संकोच न कर प्यानो पर बैठ गई और दोनों माँ-बेटियों ने संयुक्तस्वर से इटैलियन-भाषा का एक गाना सुनाया। माँ का स्वर काफ़ी ऊँचा था; लड़की की आवाज ऊँची न होने पर भी मीठी थी।

६

परन्तु सैनिन तो जेमा के स्वर पर ध्यान न देकर उसके सौन्दर्य की प्रशंसा कर रहा था। वह उसके बग़ल बैठा मन-ही-मन उसके रूप-लावण्य की उपमा कवियों की वर्णित वस्तुओं से दे रहा था।

गाने के ख़ास-ख़ास पर्दों को उभारते समय जब वह अपनी आँखें ऊपर उठाती, तो सैनिन यही सोचता था कि ऐसी चितवन पर स्वर्ग का भी फाटक खुले बिना नहीं रह सकता। बुड्ढा पैंतलिवन भी, जो खम्भे के सहारे खड़ा-खड़ा संगीत-पारखी की भाँति गाना सुन रहा था, मन-ही-मन लड़की की ख़ूबसूरती की प्रशंसा कर रहा था, यद्यपि उसकी वह उम्र बीत चुकी थी जब पुरुष यौवनावस्था और सौंदर्य से आकर्षित होता है। गाना ख़तम करने के बाद लीनोर ने सैनिन को बतलाया कि एमिलियो का गला बहुत-ही महीन और मीठा है, लेकिन चूँकि उमकी वह उम्र हो गई है जब स्वर बदलता है, इसलिये बातचीत में भी उसका स्वर मोटा होता जा रहा है और उसे गाने के लिए मना कर दिया गया है; पर पैंत-लिबन अब भी मेहमान की ख़ातिरदारी में एकाध गाने सुना सकता है। यह सुनते ही पैंतलिवन ने भवें चढ़ालीं और नाराज़ होकर बोला कि उसने बहुत पहले-ही गाना-बजाना छोड़ दिया है, यद्यपि अपनी जवानी में उसका गाने का ढंग-भी निराला था और उस ज़माने के गवैयों से आजकल के गला फाड़ने वालों की कोई तुलना नहीं हो सकती। फिर उसने बतलाया कि उन दिनों गाने के उप-लक्ष्य में उसे मदीने से इनाम मिला था। एक बार उसके गाने पर मुग्ध होकर थियेटर में चिड़ियाँ उड़ने लगी थीं और रूस के प्रिंस तरबस्की से उसकी मित्रता हो गई थी। तरबस्की ने उसे अपने साथ भोजन करने के बाद रूस आने के लिए आग्रहपूर्ण निमन्त्रण दिया था और कहा था कि वह रूस आने पर पैंतलिवन को सोने के ढेर दे देगा!......पर वह महाकवि दान्ते की प्यारी भूमि इटली को कब छोड़ने वाला था। बाद में दुर्भाग्यवश बुरी परिस्थितियों में पड़कर उसे अपनी-ही बेवक़ूफ़ी से......मातृभूमि छोड़नी पड़ी। इसके बाद बुढ्ढे का गला रुँध गया और दो बार ठंडी साँस लेने के बाद वह उदास हो गया और फिर उस ज़माने की संगीत-कला और उसके

प्रधान परिडत गार्शिया का बड़ी श्रद्धा के साथ गुण-गान करने लगा। "गार्शिया आजकल के लफ़ंगे गवैयों की तरह गला नहीं फाड़ता था; वह जो-कुछ गाता था; दिल से गाता था।" कहकर बुड्ढे ने दिल का स्थान दिखलाने के लिए अपनी छाती पर ज़ोर-ज़ोर से कई मुक्के जमाए और फिर बोला—"ऐक्टर भी कैसा ? बिल्कुल ज्वालामुखी था। मैंने उसके साथ ओथेलो में (शेक्सपियर का इसी नाम का एक दुखान्त नाटक) गाया था। वह ओथेलो बना था, मैं आइयागो—जिस समय उसनेपद उठाया" इतना कहने के बाद पैंतलिवन का मुँह बरबस खुल गया और उसने अपने मोटे, क्षीण और भर्राये हुए स्वर से गाने की दो कड़ियाँ सुनाईं और फिर कहने लगा—"सारा थियेटर थर्रा उठा था। मैंने भी गार्शिया के स्वर-में-स्वर मिला दिया था।" वह कहकर दो कड़ियाँ और गाने के बाद बुड्डा बिजली की तरह उछलकर शेर की भाँति दहाड़ने के बाद फटे हुए गले से उसकी लय सुनाने की चेष्टा करने लगा—"कैसे सुन्दर पद थे वे !" कहकर बुड्डा ऐसा भावापन्न हो उठा कि आधी कड़ी पर ही उसका गला जवाब दे गया और वह गाना बन्द करके मुँह फेरकर बड़बड़ा उठा—"और ! मेरे हृदय में कितना सन्ताप भर गया है !" जेमा फौरन उठ खड़ी हुई और बुड्ढे का हाथ पकड़कर बोली—"शाबास बाबा······शाबास !" एमिल ज़ोर-से हँस पड़ा।

सैनिन ने बुड्ढे गवैये को शान्त करने के लिये इटैलियन-भाषा में उससे कुछ आश्वासन-सूचक बातें कीं और तत्पश्चात् महाकवि दान्ते की एक कविता की प्रशंसा करने लगा; पर पैंतलिवन को इन बातों में बिल्कुल रस न आया—उसकी चढ़ी हुई भवें और विषाद-युक्त मुखाकृति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इसके बाद एमिल ने लजीले भाव से अपनी बहिन से कहा कि वह माल्ज़ की उस कविता को भी सुना दे जिसके पढ़ने में वह विशेष पटु है। जेमा ने हँसकर भाई के हाथ पर एक हल्की-सी चपत लगाकर कहा—"तुम्हें ऐसी-

ही बातें सूझती हैं !" और अपने कमरे में जाकर एक किताब उठा लाई और लैम्प के पास बैठकर किताब के पन्ने उलट-पलटकर, खाँस-कर गला साफ़ करने के बाद पढ़ना शुरू किया।

७

माल्ज़ फ्रैंकफ़ोर्ट का ही एक लेखक था जिसका अविर्भाव सन् १८३०ई० में हुआ था। उसके सुखान्त नाटक स्थानीय भाषा में लिखे गए थे, इसलिए वहीं के आदमियों को प्रसन्न करने का विशेष गुण रखते थे। फिर भी जेमा ने उन्हें जिस लोच और हाव-भाव के साथ पढ़कर सुनाया, उससे प्रतीत होता था कि कोई ऐक्ट्रेस पढ़ रही है। नाटक में स्थल-स्थल पर आये हुए गानों के गाने में उसने इस बात का विचार नहीं किया कि सारे गानों को गा-गाकर सुनाने में वह अपने सुरीले गले और कोमल स्वभाव के साथ अन्याय कर रही है। आवश्यकतानुसार वह अपने गले को ऊँचा-नीचा करती और मुँह, आँख, नाक और उँगलियों से इशारे करके भाव-प्रदर्शन भी करती थी।······पढ़ते समय वह एक बार भी नहीं हँसी पैंतलिवन के अतिरिक्त बाक़ी सब श्रोता जब, एक स्थल का वर्णन सुनने पर यकायक हँस पड़े, तो उसने भी किताब जाँघ पर रखकर हँसी में भाग लिया। सिर हिला हिलाकर पढ़ने के कारण उसके केश अस्त-व्यस्त हो गए थे। हँसी बन्द होने के बाद उसने फिर किताब सँभाली और गम्भीरता-पूर्वक आगे पढ़ने लगी। सैनिन प्रशंसा के साथ-साथ इस बात से आश्चर्य में डूब गया कि ऐसी सुन्दरी लड़की नाटक के विशेष स्थलों पर प्रसङ्ग-वशात् गँवारपन और ओछेपन का भी भाव-प्रदर्शन सफलता-पूर्वक कर लेती है। हाँ, जहाँ प्रेम-प्रदर्शन का पार्ट आता था, उस जगह किसी नव-युवती का पार्ट आने पर वह उसकी शब्दावली को उतनी पटुता के साथ नहीं व्यक्त

कर सकती थी और उस जगह अपना स्वर भी हल्का कर लेती थी। इसका कारण यह था कि वह ऐसे प्रेम-प्रसंग में उच्च भावनाओं और आह्लादपूर्ण प्रतिज्ञाओं पर विश्वास नहीं करती थी और इसे लेखक की एक भारी त्रुटि मानती थी।

सैनिन को इस बात का ध्यान भी नहीं आया कि रात कितनी बीत गई। जब कमरे में टँगी हुई घड़ी ने दस बजाए तो वह सहसा कुर्सी पर से इस प्रकार उछलकर उठ खड़ा हुआ जैसे उसे बिच्छू ने डङ्क मार दिया हो।

"क्या बात हुई ?" लीनोर ने पूछा।

"आज ही मुझे बर्लिन के लिए रवाना होना था और मैंने गाड़ी में स्थान भी ले लिया है !"

"गाड़ी कब रवाना होती है ?"

"साढ़े दस बजे !"

"तब तो आप वह गाड़ी नहीं पकड़ सकते," जेमा ने कहा—"ठहरिए,...मैं किताब समाप्त करूँगी।"

"आपने सारा किराया चुका दिया है या सिर्फ़ कुछ पेशगी दिया है ?" लीनोर ने पूछा।

"सारा किराया दे दिया है !" सैनिन ने उदास होकर कहा।

जेमा ने सैनिन की ओर अर्द्ध-मुकुलित नेत्रों से देखकर हँस दिया। इस पर उसकी माँ उसे धमकाकर बोली—"इनका तो सारा किराया व्यर्थ-हुआ, और तू हँस रही है !"

"क्या हर्ज है," जेमा ने कहा—"इससे इनका कौन-सा नुक़सान हो जाएगा, यहाँ हम सब इन्हें प्रसन्न रखेंगे। लेमनेड लाऊँ आपके लिए ?"

सैनिन ने एक गिलास लेमनेड पी और जेमा ने माल्ज़ का अवशिष्टांश सुनाने के लिए फिर किताब सँभाली। फिर पूर्ववत् हास्य-विनोद जारी हो गया।

घड़ी ने बारह बजाए। सैनिन ने उठकर विदा माँगी।

"अभी आप फ्रैंकफ़ोर्ट में कुछ दिन और ठहरें," जेमा ने कहा—"इतनी जल्दी क्या है? और शहरों में आपको यहाँ से अधिक आनन्द नहीं मिलेगा।" वह फिर कुछ देर ठहरकर मुस्कराते हुए बोली—"सच कहती हूँ।" सैनिन ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप अपने जेब खाली होने और बर्लिन के किसी दोस्त को लिख कर रुपये मँगाने की बात सोचने लगा।

"हाँ, ठहरिये अब तो," लीनोर ने भी कहा—"हम आप का परिचय कार्ल से करा देंगी। जेमा के साथ उसकी सगाई हो चुकी है। आज अपनी दुकान पर व्यस्त रहने के कारण वह नहीं आ सका...आपने रेशम और कारचोबी की एक बहुत बड़ी दुकान देखी होगी—वही 'जीले' वाली। वह वहीं मैनेजर है। वह आप से मिल कर बहुत प्रसन्न होगा।"

न जाने क्यों सैनिन के दिल में इस समाचार से कुछ प्रसन्नता होने के बजाय एक हल्का-सा धक्का लगा। "तब तो वह एक भाग्यवान् पुरुष है!" उसने सोचा। उसने जेमा की ओर देखा और मन-ही-मन सोचा कि उसकी चितवन कुछ कठोर हो गई है! उसने विदाई माँगकर हाथ बढ़ाया।

"विदा कल तक के लिए? कल तक के लिये ही न?" लीनोर ने पूछा।

"हाँ, कल तक के लिए।" जेमा ने इस प्रकार कहा, मानों वही सैनिन की ओर से जवाब दे रही है।

"अच्छा, कल तक के लिये ही।" सैनिन ने कहा।

एमिल, पैंतलिवन और झबरे कुत्ते तारतालिया ने सैनिन को सड़क के दूसरे छोर तक पहुँचाया। पैंतलिवन जेमा के पढ़ने पर अप्रसन्नता प्रकट करने से अपने को नहीं रोक सका।

"उसे शर्माना चाहिये था! मुँह बना-बनाकर चिल्लाती है!

कोई पार्ट भी करे तो मेरोप का-सा जबर्दस्त और सन-सनीदार। वह मुँह बनाकर जर्मन औरत की नक़ल करती है—इससे अच्छा तो मैं ही कर सकता हूँ……" कहकर बुड्ढे ने उँगलियाँ घुमा-घुमाकर मोटे स्वर से जर्मन स्त्री का पार्ट शुरू कर दिया। तार-तालिया इस कौतुक को देखकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा और एमिल ठठाकर हँस पड़ा। बुड्ढा अब घर की ओर वापस लौटा।

सैनिन अब बड़ी घबराहट के साथ ह्वाइट स्वान होटल लौटा। उस सन्ध्या को फ्रेंच, जर्मन और इटैलियन भाषाओं में उसने जो बातें की थीं, वह उसके कानों में गूँज रही थीं।

"सगाई हो चुकी है !" उसने अपने कमरे में पलँग पर लेटते हुये मन-ही-मन कहा—"कैसी अनिन्द्य सुन्दरी है ! पर मैं यहाँ ठहर क्यों गया ?"

दूसरे दिन उसने अपने बर्लिन-वाले मित्र को पत्र लिखा।

८

प्रातःकाल उठकर वह अभी कपड़े ही पहन रहा था कि इतने में नौकर ने आकर ख़बर दी कि दो आदमी आपसे मिलने के लिए आए हैं। दोनों में से एक एमिल था और दूसरा था उससे बड़ी उम्र का सुन्दर नवयुवक हर कार्ल क्लुबर, जिसके साथ सुन्दरी जेमा की सगाई हुई थी।

फ्रैंकफोर्ट में यह बात प्रसिद्ध थी कि उस समय वहाँ की किसी भी दुकान का मैनेजर ऐसा सजीला, शानदार, मधुरभाषी और सुसभ्य नहीं था जैसा हर क्लुबर था। उसका पहनावा अप-टू-डेट और रंग-ढंग निराला, सुन्दर और अंग्रेज़ों से मिलता-जुलता था, क्योंकि वह दो वर्ष इंगलैंड रहकर आया था। उसके चाल-चलन और बर्ताव में बड़ा आकर्षण था। एक बार उसे देखते ही इस बात

का निश्चय हो जाता था कि यह सुन्दर, स्वच्छ और सुगठित नव-युवक अपने से छोटों पर प्रभाव डालने और बड़ों का समादर करके उनकी आज्ञा का पालन करने में अभ्यस्त है। उसकी दुकान के ग्राहक परोक्ष में भी उसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रहते थे। उसकी ईमा दारी में कभी किसी को अणुमात्र भी सन्देह नहीं हो सकता था। उसका स्वर भी उसके शरीर के अनुकूल गम्भीर और स्वावलम्बन का द्योतक था, साथ-ही उसमें काफी मधुरता की भी पुट थी— सारांश यह कि उसकी आवाज़ में नौकर-चाकरों को थर्रा देने और भद्र पुरुषों और महिलाओं को गद्गद कर देने की शक्ति थी।

हर क्लुबर स्वयं अपना परिचय देते हुए इस प्रकार झुका जिस से देखने वालों को तुरन्त मालूम हो जाता कि वह बड़े उच्च सामाजिक जीवन का अभ्यस्त नवयुवक है। उसने दाहिने हाथ में से दस्ताना निकालकर टाएँ हाथ में ले लिया और शीशे-सा चमकता हुआ हैट सिर से उतारकर बाएँ हाथ में पकड़ा, और गम्भीरता के साथ दाहिना हाथ सैनिन की ओर बढ़ाया। फिर उसने शुद्ध जर्मन-भाषा में कहा कि वह ऐसे विदेशी सज्जन से मिलने के लिए उत्सुक था जिसने उसके भावी सम्बन्धियों की ऐसी सहायता की और उसकी भावी पत्नी के प्यारे भाई की जान बचाने के लिए ऐसा कष्ट उठाया। जिस समय वह अपना हैट हिला-हिलाकर सैनिक से बातें कर रहा था, एमिल शर्मिन्दा होकर मुँह में उँगली डाले खिड़की की ओर मुँह किए खड़ा था। हर क्लुबर ने यह भी कहा कि यदि वह किसी प्रकार सैनिन की कोई सेवा कर सका तो अपने को धन्य समझेगा। सैनिन ने भी कुछ कठिनाई के साथ जर्मन-भाषा में ही उत्तर दिया कि वह उससे मिलकर प्रसन्न हुआ है..... और उसने जो-कुछ सेवा उसके सम्बन्धियों की की है, वह नगण्य है। अन्त में सैनिन ने दोनों से बैठने की प्रार्थना की। हर क्लुबर ने उसे धन्यवाद दिया और कोट सँभालते हुए कुर्सी पर इस तरह बैठा, जिससे

देखने वाले को फ़ौरन मालूम हो जाता कि वह ऐसे ढंग से बैठा हुआ है जिससे उसके तुरन्त ही फिर उठ जाने की सूचना मिलती है। बात भी ऐसी ही थी। वह थोड़ी ही देर में उठ खड़ा हुआ और सावधानी तथा कौशल के साथ दो क़दम आगे बढ़कर बोला कि चूँकि उसे दुकान का कार-बार देखने के लिए जल्दी जाना ज़रूरी है, इसलिये अधिक देर तक न ठहर सकने के लिए उसे खेद है, लेकिन हाँ, दूसरे दिन रविवार है, अतः छुट्टी मनाने के लिए उनका सूदान जाने का कार्य-क्रम है, और फ्रॉ लीनोर और फ़्रालिन जेमा का अनुरोध है कि उसमें सैनिन भी सम्मिलित हो। साथ ही हर क्लुबर ने यह भी आशा प्रकट की कि सैनिन इस निमन्त्रण को अस्वीकार न करेगा। सैनिन ने निमन्त्रण अस्वीकार नहीं किया और हर क्लुबर ने उसे एक बार फिर धन्यवाद देकर विदा ली और जूते की मरमराहट से होटल को गुँजाते हुए बाहर निकला।

९

एमिल सैनिन के अनुरोध पर भी बैठा नहीं था और खिड़की के पास खड़ा-खड़ा बाहर की ओर देख रहा था। जब उसका भावी बहनोई कमरे में बाहर निकल गया तो उसने लजाते-लजाते होंठ बिचकाकर सैनिन से पूछा कि क्या वह कुछ देर उसके कमरे में और ठहर सकता है। "आज मेरी तबियत अच्छी है," उसने कहा—"पर डॉक्टर ने मुझे कोई भी काम करने की मनाही कर दी है।"

"ज़रूर ठहरो; तुम्हारे रुकने से हमारी कोई हानि नहीं है।" सैनिन ने तुरन्त कहा। एक सच्चे रूसी की तरह वह किसी ऐसी बात के लिये कभी किसी को इन्कार नहीं करता था जिसमें उसे स्वयं कुछ न करना पड़े।

एमिल ने उसे धन्यवाद दिया और थोड़े-ही समय में उसने

सैनिन और उसके कमरे से पूर्ण परिचय प्राप्त कर लिया। एमिल ने कमरे में रखी हुई प्रत्येक चीज़ का नाम, उसका क्रय-स्थान और मूल्य आदि पूछ डाला। उसने सैनिन के हजामत बनाते समय कहा कि वह मूँछें नाहक़ बना डालता है—उसे मूँछों पर उस्तरा न फेर-कर उन्हें बढ़ने देना चाहिए। इसके बाद उसने अपनी माँ, बहिन, पैंतलिवन और झबरे कुत्ते तारतालिया के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें बतलाकर उनके दैनिक जीवन का ख़ाका खींच दिया। लज्जा और भय का कोई चिह्न एमिल में बाक़ी नहीं रहा। वह सैनिन की ओर असाधारण रूप से आकृष्ट हो गया—इसलिए नहीं कि उसने कल उसकी जान बचाई बल्कि इसीलिए कि वह बड़ा अच्छा आदमी है।

उसने सारी गोपनीय बातें सैनिन को बता दीं। बड़ी दिलचस्पी के साथ उसने बतलाया कि किस प्रकार उसकी माँ उसे दुकानदार बनाने पर तुली हुई है जबकि उसे निश्चय है कि उसका जन्म ही कलाकार—संगीत-विशारद बनने के लिये हुआ है और पैंतलिवन ने उसे उत्साहित भी किया है, पर हर क्लुबर भी उसकी माँ की बात का समर्थन करता है और माँ उसकी हरएक बात मानती है। एमिल ने यह भी बतलाया कि दुकानदारी सिखलाने की बात ही हर क्लुबर की चलाई हुई है, क्योंकि वह दुकानदारी को ही दुनिया की सब से बड़ी न्यामत समझता है। कपड़े नापना और पब्लिक को धोखा देना और बेवक़ूफ़ रूसियों से पैसे ऐंठना× यही उसका आदर्श है।

"चलिए अब! चलिए मेरे घर!" सैनिन के हाथ मुँह धोकर

बर्लिन के लिए पत्र लिख चुकने पर एमिल ने कहा।

"अभी तो बहुत सवेरा है; जल्दी क्या है?" ओलेनिन ने कहा।

"सवेरा है तो क्या हर्ज है," एमिल ने प्रेम दिखलाते हुये कहा—"चलिये! हम लोग डाकखाने के रास्ते चलेंगे। जेमा आपको देखकर बहुत खुश होगी! खाना आपको हमारे साथ ही खाना होगा··· आप माँ से मेरे सम्बन्ध में—मेरे काम सीखने के बारे में कहियेगा····

"अच्छा, चलो चले।" सैनिन ने कहा, और दोनों होटल से रवाना हुए।

१०

जेमा सचमुच सैनिन को देखकर प्रसन्न हुई और फ्राँ लीनोर ने उसका मित्रतापूर्ण स्वागत किया। कल शाम को सैनिन ने उन दोनों पर अच्छा प्रभाव डाला था। एमिल खाना जल्दी तैयार करने के लिए कहने को दौड़ा। जाते-जाते सैनिन के कान में फुसफुसाकर यह बात कह गया कि मेरे काम सीखने के बारे में माँ से कहना न भूलिएगा।

"अच्छा, न भूलूँगा!"

फ्राँ लीनोर की तबीयत बहुत अच्छी नहीं थी। उसे कुछ सिर-दर्द था, इसलिये वह चुपचाप आराम-कुर्सी पर लेट गई। जेमा ने पीले रँग की कुर्ती पहनकर ऊपर से चमड़े की कमरबन्ध बाँध रखी थी। मालूम होता था वह भी किसी शारीरिक या मानसिक परि-श्रम के कारण थक गई है। उसके चेहरे पर मलिनता छाई हुई थी, फिर भी नई पोशाक ने उसके सौन्दर्य को दोबाला कर दिया था। सैनिन को आज उसकी खुली हुई दोनों बाँहें बड़ी भली और आकर्षक मालूम पड़ती थीं। जिस समय जेमा ने अपने अस्तव्यस्त

चमकीले और घुँघराले बालों को सँवारने के लिए हाथ ऊपर उठाए, सैनिन उसकी लम्बी और नुकीली उँगलियाँ देखकर मन्त्र-मुग्ध-सा खड़ा रहा ।

बाहर काफ़ी गर्मी पड़ने लग गई थी । भोजन के बाद सैनिन जाना चाहता था; पर घर वालों ने बतलाया कि ऐसी गर्मी में लोग बाहर न निकलकर जहाँ-कहीं भी जाते हैं, वहीं ठहरे रहते हैं। सैनिन को बात मंजूर करनी पड़ी । जिस कमरे में वह बैठा था, वह काफ़ी ठण्डा था । खिड़की के रास्ते बाहर एक छोटा बाग़ीचा दीख रहा था, जिसमें फूलदार वृक्ष दिखाई दे रहे थे । बाग़ीचे में मधु-मक्खियों का भनभनाना कमरे से सुनाई दे रहा था । रह-रहकर खिड़की की राह गर्म हवा के झोंके आ जाते थे, जिससे बाहर की गर्मी और ठण्डक का आभास सहज ही मिल जाता था ।

सैनिन ने कल की तरह आज भी माँ-बेटियों को बहुत-सी बातें सुनाईं—पर आज का विषय रूस नहीं, वरन् रूसी जीवन था । एमिल को प्रसन्न करने के लिए सैनिन को बड़ी चिन्ता थी, पर भोजन के बाद ही वह हर क्लुबर के पास हिसाब-किताब और दुकान-दारी सीखने भेज दिया गया । उसने लीनोर की तरफ़ रुख करके कला और व्यापार के लाभ-हानि पर तुलनात्मक विचार प्रकट किए । उसे यह देखकर आश्चर्य नहीं हुआ कि लीनोर व्यापार को ही श्रेष्ठ बतलाती है, क्योंकि उसकी पहले से ही यह धारणा थी कि वह व्यापार का पक्ष लेगी; पर यह देखकर उसे अवश्य ताज्जुब हुआ कि जेमा भी व्यापार के ही पक्ष में है ।

"अगर कोई कलाकार—विशेषतः गायक—है," जेमा ने ज़ोर से हाथ हिलाते हुए कहा—"तो वह प्रथम श्रेणी, दूसरी श्रेणी या बिल्कुल निकम्मी श्रेणी का कलाकार भी हो सकता है; और कौन कह सकता है कि वह प्रथम श्रेणी का ही कलाकार हो सकता है ?"

पैंतलिवन ने भी इस वार्तालाप में भाग लिया, क्योंकि इटली

निवासी, बुड्ढों को—फिर चाहे वे नौकर ही क्यों न हों—घरेलू मामलों में स्त्री-पुरुष सब को, परामर्श देने का अधिकारी समझते हैं, और इस बात को नौकर की बेअदबी नहीं मानते। पैंतालिवन ने कला के पक्ष में ज़ोरदार अपील की। यद्यपि उसमें तर्क-शैली का अभाव था, पर किसी प्रकार उसने यह सिद्ध कर दिया कि सबसे पहले मनुष्य में कोई भावना जागरित करने की शक्ति होनी चाहिए। लीनोर ने कहा कि उस (पैंतलिवन) ने भी तो एक भावना-पूर्ण कला सीखी थी, फिर भी·······।

"मेरे बहुत से दुश्मन पैदा हो गए थे।" पैंतलिवन ने उदास होकर जवाब दिया।

"और तुम्हें यह कैसे मालूम है कि अगर एमिल को कोई कला आ गई तो उसके दुश्मन नहीं पैदा हो जाएँगे?"

'अच्छा, फिर उसे व्यापारी ही बनाओ," पैंतलिवन ने घबरा-कर कहा—"पर गिवन बैतिस्ता यदि आज जीवित होते तो वे हल-वाई होते हुए भी एमिल को व्यापार में न डालते।"

"नहीं, मेरे पति एक बुद्धिमान पुरुष थे, और यद्यपि अपनी जवानी में वे··········"

पर बुड्ढा और कुछ नहीं सुनना चाहता था और यह कहता हुआ कि "हाय गिवन बैतिस्ता! आज तुम न हुए·········!" वहाँ से खिसक गया।

जेमा ने कहा कि अगर एमिल एक देशभक्त की तरह अपनी सारी शक्ति इटली की स्वाधीनता में खर्च करने का प्रण लेता तो निस्सन्देह ऐसे उच्च और पवित्र कार्य के लिए उसे कोई ठोस काम सीखने की आवश्यकता न होती—पर थिएटर के लिए ऐसा नहीं किया जा सकता। इस पर लीनोर घबरा उठी और लड़की से प्रार्थना करने लगी कि इस तरह की बातें करके कहीं वह अपने भाई का दिमाग़ न फेर दे; और ऐसी प्रजातन्त्रवादिता के भाव अपने ही

दिमाग़ में रखे । लीनोर ने यह बात अपने मेहमान का लिहाज़ रखते हुए फ्रेंच-भाषा में कही और दर्द के मारे सिर फटने की शिकायत करने लगी।

जेमा अब माँ की शुश्रूषा में लग गई। उसके माथे पर यू-डी-कोलोन[1] चुपड़ने, और धीरे-धीरे सिर दबाने के बाद उसने सिर के नीचे तकिया रख दिया और उससे न बोलने की हिदायत कर दी। फिर सैनिन की ओर देखकर उसने आधे मज़ाक और आधी गम्भीरता के साथ कहा—"मेरी जैसी अच्छी माँ किसी को भी नहीं मिल सकती!"

इसके बाद जेमा ने सफ़ेद रूमाल जेब से निकालकर माँ का मुँह ढक दिया और फिर धीरे-धीरे रूमाल हटाकर माँ से आँखें खोलने के लिए कहा। लीनोर ने आँखें खोल दीं और जेमा खुशी से गद्‌गद होकर हँस पड़ी। फ्रॉ लीनोर भी हँस पड़ी और लड़की को हाथ से ढकेलते हुए करवट बदल ली। जेमा ने भी माँ का पिण्ड नहीं छोड़ा और उसे प्यार से चुम्बन देने लगी।

आखिर फ्रॉ लीनोर ने कह दिया कि वह थक गई है……जेमा ने उसे नींद लेने के लिए कहा और वादा किया कि वह और रूसी महाशय बिल्कुल चुप रहेंगे……। फ्रॉ लीनोर यह सुनकर मुस्कराई और आँखें बन्द करके कुछ देर बाद ऊँघने लगी। जेमा चुपचाप उसके पास ही बेंच पर बैठ गई और उसके तकिए के नीचे हाथ रखकर सैनिन की ओर देखने लगी। सैनिन मूर्तिवत् अपने स्थान पर बैठा हुआ लीनोर के सोने और अद्वितीय सुन्दरी जेमा के शुश्रूषा करने के इस स्वप्नवत् दृश्य को देखने लगा। वह मन-ही-मन सोचता कि क्या वह कोई स्वप्न देख रहा है या यह किसी परियों की कहानी का दृश्य तो नहीं है! और वह इस कहानी में सम्मिलित होने के लिए कैसे आ गया?

---

१. सिरदर्द की एक प्रसिद्ध विलायती दवा।

११

बाहर वाले कमरे में घंटी बजी। एक किसान का लड़का ऊनी टोपी और लाल वास्कट पहने सड़क पर से दुकान पर आया। सुबह से और कोई ग्राहक नहीं आया था……"आप देखिए, हमारा व्यापार क्या चलता है!" भोजन करते समय फ्राॅ लीनोर ने सैनिन से ठंडी साँस लेकर कहा था। वह अब सो रहीं थी। जेमा को भय था कि तकिए के नीचे से हाथ हटाते ही उसकी माँ जग जाएगी। उसने सैनिन की ओर देखकर धीरे से कहा—'कृपया जाकर ग्राहक को देख आइए, क्या माँगता है।" सैनिन हल्के क़दम रखते हुए दुकान में गया। लड़का आध पौण्ड पिपरमेण्ट माँगता था। "कितने दाम लूँ?" सैनिन ने दरवाज़े पर से धीरे से पूछा।

"छः क्रुतज़र!" जेमा ने धीरे से जवाब दिया।

सैनिन ने पिपरमेण्ट तौलकर काग़ज की शुण्डाकार पुड़िया में डाला, फिर बाहर निकाला और फ़िर अन्दर डालने के बाद लड़के को देकर दाम लिया…। लड़के ने ताज्जुब के साथ सैनिन की ओर देखकर टोपी उतार ली और चुपचाप बाहर चला गया। दूसरे कमरे में जेमा ने मुश्किल से अपनी हँसी रोकी। पहले ग्राहक का जाना था कि दो और ग्राहक दुकान में आ धमके…"ओहो! मैं तो बड़ा भाग्यवान हूँ।" सैनिन ने सोचा। दूसरा ग्राहक एक गिलास लेमनेड पीना चाहता था। सैनिन ने फुर्ती के साथ दोनों की माँग पूरी की। पीछे मालूम हुआ कि उसने लेमनेड का दाम कम लिया है और मिठाई का दाम बहुत अधिक—यानी दो क्रुतज़र—चार्ज लिया है। जेमा धीरे-धीरे हँस रही थी और सैनिन अपनी दुकानदारी पर प्रसन्न हो रहा था। उसने ऐसा अनुभव किया, जैसे वह जन्म से ही दुकानदारी करता आया हो। जेमा की उस प्रेमपूर्ण मीठी

चितवन ने उसकी प्रसन्नता को और भी अधिक बढ़ा दिया, साथ ही सूर्य की प्रखर-किरणें वक्षों की सघन छाया को चीरती हुई खिड़की के रास्ते सैनिन के मुख-मण्डल पर पड़कर उसे और भी प्रदीप्त बना रही थीं ! उसने मन-ही-मन एक अपूर्व स्फूर्ति का अनुभव किया ।

इसी समय एक चौथा ग्राहक दुकान में आया और उसने एक प्याला कॉफ़ी माँगी। इसके लिए उसे पैंतलिवन की शरण लेनी पड़ी। एमिल अभी हर क्लुबर के पास से वापस नहीं आया था। सैनिन अब दुकान से जेमा के पास जा बैठा। फ्रॉ लीनोर अभी तक सो रही थी। जेमा के लिए यह कम प्रसन्नता की बात नहीं थी। "जब कभी माँ के सिर में दर्द होता है, वह सो जाया करती है," उसने सैनिन से कहा। सैनिन धीरे-धीरे बात करने लगा ! उसने दुकान की कई चीज़ों के दाम पूछे। जेमा ने भी गम्भीरतापूर्वक धीमे स्वर में जवाब दिया। दोनों इस प्रकार प्रसन्न हो रहे थे जैसे वह कोई मजाक़िया पार्ट कर रहे हों। सहसा सड़क पर से ऑरगन बजने की आवाज़ आई। स्वर ऊँचा और आकर्षक था। जेमा ने कहा—"बाजा सुनकर माँ जग जाएगी!" सैनिन झट बाहर गया और बजाने वाले को कुछ पैसे देकर वहाँ से चले जाने के लिए कहा। जब वह वापस आया तो जेमा ने उसे सिर हिलाकर धन्यवाद दिया और धीरे-धीरे वह वेबर कवि का वह पद गुनगुनाने लगी जिसमें मैक्स प्रथम-प्रणय की कठिनाइयों का वर्णन करता है। फिर उसने सैनिन से पूछा कि क्या वह 'फ्रीशत्ज़ को जानता है और वेबर की कविताओं का प्रेमी है ? साथ ही उसने यह भी बतलाया कि यद्यपि वह इटैलियन है फिर भी उसे वेबर के ऐसे गान (जैसा वह अभी-अभी गा रही थी) बहुत पसन्द हैं। वेबर के बाद कविताओं और प्रेम-कथाओं पर हॉफमैन की चर्चा हुई जिसकी कृतियाँ उस समय बड़े चाव से पढ़ी जाती थीं।

फ्रॉ लीनोर अब भी सो रही थी। अब वह हल्के-हल्के ख़र्राटे भी लेने लगी थी। सूर्य की किरणें खिड़कियों से छनकर जेमा के पीत-वसन और मेज़ पर रखे हुए गुलदान के फूलों पर पड़ रही थीं।

१२

ऐसा प्रतीत होता था कि जेमा को हॉफ़मैन की रचनाओं से अधिक प्रेम नहीं है......। हॉफमैन की कहानियों में वर्णित उत्तरीय प्रदेश के कुहरे से ढके हुए वातावरण के प्रणयी और प्रणयिनी इस दक्षिणी प्रदेश के स्वच्छ वातावरण में पली हुई लड़की के लिए अधिक आकर्षण की चीज नहीं थे! "यह तो बच्चों के लिए लिखी हुई परियों की कहानियाँ हैं!" उसने सैनिन से घृणा-व्यञ्जक भाव से कहा। वह स्पष्ट रूप से यह भी समझती थी कि हॉफमैन में कवित्व शक्ति का अभाव था; पर उसकी कहानियों में से एक ऐसी थी जिसे वह पसन्द करती थी! उसका शीर्षक भूल जाने पर भी कथानक चित्त से नहीं उतरता था। कहानी एक नवयुवक के सम्बन्ध में थी, जिसे कहीं—शायद किसी रेस्टोरेएट में—एक सुन्दरी ग्रीक लड़की मिली थी, जिसके साथ एक रहस्यपूर्ण और अपरिचित बदमाश बुड्ढा था। नवयुवक लड़की को देखते-ही उस पर मुग्ध हो जाता है और लड़की उसकी ओर ऐसे आर्तभाव से देखती है, मानो वह उसके द्वारा बुड्ढे के हाथ से अपनी रक्षा चाहती है...... वह क्षण भर के लिए बाहर जाता है और लौटने पर देखता है कि न तो वहाँ वह सुन्दरी लड़की है, न बुड्ढा बदमाश। वह उन्हें ढूँढने के लिए निकलता है और जगह-जगह उनका पता लगाते हुए आगे बढ़ता है। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान हो जाने पर भी उन्हें नहीं पा सकता। सुन्दरी लड़की सदा के लिए उससे बिछुड़ जाती है और उसकी विनयपूर्ण चितवन उसके मन से नहीं उतरती। उस सुन्दरी

की स्मृति नवयुवक के लिये इतनी कष्टकर सिद्ध होती है कि कदा-चित् उसके जीवन का सारा आनन्द उसके हाथ से निकल जाता है।

हॉफ़मैन ने अपनी कहानी बिलकुल इसी रूप में नहीं समाप्त की है, किन्तु जेमा के दिमाग़ में उसने यही रूप धारण कर लिया था।

"मेरी समझ में इस प्रकार का मिलन और बिछोह संसार में होता ही रहता है।" जेमा ने कहा।

सैनिन चुप रहा...कुछ ही देर बाद उसने हर क्लुबर की चर्चा छेड़ दी। यह पहला ही अवसर था जब उसने जेमा के सामने उसका नाम लिया। अब तक वह उसे याद नहीं आया था।

इस चर्चा पर जेमा चुप होकर विचार करने लगी और तर्जनी का नाखून दाँतों के नीचे दबाकर नेत्र स्थिर किए बैठी रही। इसके बाद वह हर क्लुबर की प्रशंसा करने लगी और उसके बनाये हुए दूसरे दिन के कार्यक्रम का वर्णन करके सैनिन की ओर फुर्ती से देखकर चुप हो रही।

सैनिन को अब बातचीत का कोई विषय नहीं सूझा।

इसी समय एमिल दौड़ता हुआ अँदर आया और उसने अपनी माँ को जगा दिया...उसके आने से सैनिन को शान्ति मिली।

फ्रॉ लीनोर आराम-कुर्सी से उठी। पैंतलिवन ने आकर सूचना दी कि ब्यालू तैयार है। इस परिवार के मित्र, भूतपूर्व गायक और नौकर पैंतलिवन पर भोजन बनाने का भी भार था।

१३

ब्यालू के बाद भी सैनिन वहीं ठहरा रहा। घरवालों ने आग्रह करके गर्मी के बहाने उसे रोक लिया। जब गर्मी कम होने लगी तो बाग़ीचे में जाकर पेड़ के नीचे बैठकर कॉफ़ी पीने का प्रस्ताव हुआ।

सैनिन ने प्रसन्नता-पूर्वक बात स्वीकार कर ली। जीवन की शान्त, एकरस और चिकनी धारा में बड़ी-बड़ी प्रसन्नताएँ छिपी रहती हैं। सैनिन ने इन प्रसन्ताओं को उत्साह-पूर्वक स्थान दिया और न तो उसने अपने वर्तमान के सम्बन्ध में कुछ सोचा, न भविष्य के बारे में। जेमा जैसी लड़की के संसर्ग-मात्र की इतनी अभिलाषा उसके हृदय में क्यों होनी चाहिए ? उसे शीघ्र ही उससे कदाचित् जीवन-भर के लिए विदा होना पड़ेगा। पर कवि के कथनानुसार जब तक तूफ़ान उन्हें जीवन-समुद्र में एक नाव में यात्रा करने का अवसर देता है, तब तक यात्री हँसते-खेलते यात्रा क्यों न करें ? दोनों यात्रियों को इस अवसर से असीम आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव हुआ। फ्रॉ लीनोर के अनुरोध से पैंतलिवन और सैनिन ने एक गूढ़ इटैलियन खेल खेला, जिसमें कुछ क्रुतज़र हारकर सैनिन बहुत सन्तुष्ट हुआ। पैंतलिवन ने एमिल के आग्रह पर झबरे कुत्ते तारतालिया का तमाशा दिखाया—छड़ी पकड़ना, भौंकना, दरवाज़ा बन्द करना, जूते उठा लाना, टोपी सिर पर रखना आदि कौतुक दिखाने के बाद नैपोलियन और उसके नमकहराम सैनिक का पार्ट दिखाया गया। नैपोलियन का पार्ट पैंतविलन ने अदा किया और सैनिक का झबरे कुत्ते ने। नैपोलियन (पैंतलिवन) क्रुद्ध होकर न मालूम किस लोक की फ्रेंच-भाषा में सैनिक को डाँटता है और सैनिक (तारतालिया) पिछले पैरों पर बैठकर अगले पाँव ऊपर उठाकर हाथ जोड़ता है और फिर अन्त में नैपोलियन के झपटने पर ड़रकर सोफ़े के नीचे जा दबकता है। क्षण-भर बाद ही वह ख़ुशी-ख़ुशी सोफ़े के नीचे से बाहर निकलकर भौंकता है और इस प्रकार मानो तमाशे की समाप्ति की सूचना देता है। सभी दर्शक खिलखिलाकर हँस पड़े। सैनिन के तो हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गए।

जेमा भी इस दृश्य को देखकर ख़ूब हँसी। इस हँसी से सैनिन के दिल पर उसके सौन्दर्य की और भी गहरी छाप लग गई। एकान्त

होता तो वह जेमा की इस हँसी पर उसका चुम्बन अवश्य लेता !

आखिर रात हो गई। उसे जाने के लिए आज्ञा माँगनी पड़ी। एक-एक करके सबसे हाथ मिलाकर कल फिर मिलने के वादे के साथ सैनिन विदा हुआ। एमिल का तो उसने चुम्बन भी लिया। रास्ते भर वह जेमा की विभिन्न प्रतिमूर्तियाँ अपने हृदय-पटल पर अङ्कित करता चला जा रहा था—वह किस प्रकार हँसती है, कैसे बात करती है, कैसे दुःख, क्रोध और उदासीनता के भाव प्रकट करती है। उसकी प्रत्येक भाव-भङ्गी उसे आकर्षक मालूम होने लगी। उसकी आधी मुँदी और पूरी खुली हुई बड़ी-बड़ी आँखें उसकी स्मृति को आन्दोलित करने लगीं।

हर क्लुबर के सम्बन्ध में या अपने फ्रैंकफ़ोर्ट में रह जाने के बारे में उसने उस समय कोई विचार नहीं किया।

१४

अब सैनिन के सम्बन्ध में कुछ और सुनिए।

सैनिन खूबसूरती में हज़ारों नवयुवकों में एक था। उसका सुगठित और सजीला बदन, स्नेहमयी नीली आँखें, सुनहले बाल, सुर्ख बदन और सबसे बढ़कर हँसता हुआ चेहरा किसी भी देखने वाले पर यह व्यक्त किए बिना नहीं रहता था कि युवक किसी अच्छे घराने का है। मस्तानी चाल, बच्चों का-सा हँसना, नम्र सम्भाषण ······और सबसे बढ़कर तबीयत में सदा ताज़गी, और कोमलता— यह सब उसके परमाकर्षक गुण थे। दूसरी बात यह थी कि वह कोई अशिक्षित-अर्द्धशिक्षित नहीं था। उसने पुस्तकीय और सांसारिक दोनों तरह के ज्ञान प्राप्त किए थे। देशाटन के फलस्वरूप अनुभव-गम्य सभी बातें उसमें आ गई थीं—घबराहट या फ़िक्र उसके पास नहीं फटकती थी।

हमारे आधुनिक साहित्य में नवयुवकों के एक ऐसे दल का आविर्भाव हुआ है, जो संसार में ताज़गी और नवीनता खोज करने में किसी भी ख़तरे की पर्वाह नहीं करता······पीटर्सबर्ग पहुँचकर वे पूरी ताज़गी समाप्त कर देते हैं। पर सैनिन इस प्रकार के युवकों में नहीं था। वह उक्त आदर्शों और दृष्टान्तों के चक्कर में नहीं पड़ा था, बल्कि वह तो अपने ही बाग़ के एक नए सघन और फलों से लदे हुए सेब के वृक्ष के नीचे बैठने और एक सुन्दर सुडौल और हवा से बात करनेवाले घोड़े पर सवार होने की कल्पना किया करता। जो लोग सैनिन से उस अवस्था में मिले हैं, जब वह अपनी जीवन-यात्रा में काफ़ी धक्के खा चुका था, और जवानी की स्फूर्ति और ताज़गी जाती रही थी, उन्होंने उसे नितान्त परिवर्तित रूप में पाया।

दूसरे दिन अभी सैनिन बिछौने पर से उठा भी न था कि एमिल कपड़े लत्ते से ख़ूब लैस, सिर मे सुगन्धित तैल डाले और हाथ में बेंत लिए हुए कमरे में आ धमका और सैनिन को इस बात की सूचना दी कि हर क्लुबर गाड़ी लेकर सीधे यहीं आएगा। मौसम बहुत अच्छा है और चलने की तैयारी हो चुकी है, पर उसकी माँ नहीं जा रही है; क्योंकि उसके सिर में फिर दर्द हो गया है। उसने सैनिन को जल्दी तैयार होने को कहा; क्योंकि उसकी राय में बहुत देरी हो रही थी।···बात सच थी। सैनिन अभी मुँह-हाथ ही धो रहा था कि हर क्लुबर ने दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर आकर शिष्टाचारपूर्वक आगे झुका। हर क्लुबर ने सैनिन से कहा कि कोई जल्दी नहीं है, वह आराम से निबटकर तैयार हो सकता है, और ख़ुद बैठकर शान्तिपूर्वक प्रतीक्षा करने लगा। आज क्लुबर महोदय और भी सज-धजकर आए थे— सुगन्धि के मारे कपड़े-लत्ते और सारा शरीर गमक रहा था। वह एक खुली गाड़ी में आया था जिसमें दो ज़बरदस्त घोड़े जुते थे। पन्द्रह मिनट बाद सैनिन, क्लुबर और एमिल इसी गाड़ी में बैठकर

शान के साथ श्रीमती रोज़ेली की दुकान पर पहुँचे। रोज़ेली ने साथ जाने से साफ़ इन्कार कर दिया। जेमा भी नहीं जाना चाहती थी, पर माँ ने उसे ज़बर्दस्ती भेजा।

"मुझे किसी की ज़रूरत नहीं है," लीनोर ने कहा—"मैं सोने जा रही हूँ। पैंतलिवन को भी भेजती" पर यहाँ दुकान पर कोई नहीं रह जाएगा।"

"तारतालिया को साथ ले जाँए ?" एमिल ने पूछा।

"हाँ, ले जाओ।"

कुत्ता फ़ौरन् खुशी-खुशी गाड़ी में जा बैठा। इससे प्रकट होता था कि वह इस प्रकार की यात्रा का अभ्यस्त है। जेमा ने इस अवसर के लिए सुरक्षित एक बड़ी हैट निकाली जो आगे की ओर काफ़ी लम्बी होने के कारण धूप से बचाती थी। टोपी की छाया ठीक उसके होठों पर पड़ती थी। धूप में उसके मृदुल होठों की कोमलता साफ़ झलकती थी और उसके पीछे दन्त-पंक्तियाँ चमककर मुख की शोभा बढ़ा रही थीं। जेमा सैनिन के साथ घोड़ों की तरफ़ मुँह करके बैठी और क्लुबर तथा एमिल दूसरी ओर बैठ गए। फ्रॉ लीनोर का चेहरा खिड़की के रास्ते दीख रहा था। जेमा ने उसकी ओर अपना रूमाल हिलाया और गाड़ी चल पड़ी।

१५

सूदान फ्रैंकफ़ोर्ट से आधे घण्टे का रास्ता है। यह एक बड़े सुरम्य स्थान पर तानस की पहाड़ियों की गोद में बसा हुआ है। यहाँ का जल-वायु रूसवालों में बड़ा स्वास्थ्यकर माना जाता है। और विशेषकर फेफड़े के बीमारों के लिये बड़ा गुणदायक है। किन्तु फ्रैंकफ़ोर्ट वाले मन-बहलाव के लिए सूदान की सैर किया करते हैं, क्योंकि यहाँ एक बड़ा सुन्दर बाग़ और अनेक ऐसे अड्डे हैं जहाँ

नीबू के वृक्षों के नीचे बैठकर काफ़ी और शराब पीने का अद्वितीय आनन्द लिया जा सकता है। फ्रैंकफ़ोर्ट से सूदान जाने वाली सड़क मेन नदी के दाहिने किनारे पर होकर जाती है।' जिसके दोनों ओर फलदार वृक्ष लगे हुए हैं। जिस समय गाड़ी सड़क के एक सुन्दर भाग से होकर गुज़र रही थी, सैनिन ने चोरी से यह भाँपने की चेष्टा की कि देखें हर क्लुबर के प्रति जेमा कैसा बर्ताव करती है। यह पहला ही अवसर था जब सैनिन ने इन दोनों को इकट्ठे देखा। जेमा बिल्कुल साधारण ढंग से बैठी हुई थी, बोलने-चालने में हमेशा की अपेक्षा कुछ अधिक शान्त नज़र आती थी। इसके विपरीत हर क्लुबर का हाल उस मास्टर का-सा था जो अपनी तरह अपने शिष्यों को भी स्वेच्छा-पूर्वक आनन्द करने की स्वतन्त्रता दे देता है। सैनिन ने देखा कि उस (हर क्लुबर) का जेमा के साथ कोई विशेष मनो-योग-पूर्ण व्यवहार नहीं है। उसे यह स्पष्ट दीख रहा था कि हर क्लुबर शादी के मामले को बिल्कुल तय और निश्चित समझता है, इसलिए उस सम्बन्ध में किसी प्रकार का कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं समझता। पर इस प्रकार की निश्चिन्तता क्षण-भर के लिये भी उसका पिण्ड क्यों नहीं छोड़ती ! शाम होने के पहले जब सब सूदान के आस-पास की घाटियों में टहल रहे थे और जब प्रकृति की अनुपम छटा देखकर सब लोग गद्गद हो रहे थे, तो भी हर क्लुरबर उस दृश्य-दर्शन की ओर अधिक आकर्षित नहीं हुआ—यहाँ तक कि जब लोगएक पहाड़ी नाले के बहाव की प्रशंसा कर रहे थे तो उसने स्पष्ट कह दिया कि धार सीधी बहने के कारण सौन्दर्य कम हो गया है—यदि नाला टेढ़ा-मेढ़ा चक्कर देकर बहता तो दृश्य का सौन्दर्य बढ़ जाता। एक चिड़िया का बार-बार एक स्वर में गाना भी उसे नहीं पसन्द आया। जेमा को इन सब दृश्यों से ज़रा भी क्लन्ति नहीं हुई; उल्टे वह तो उनसे काफ़ी आनन्द उठा रही थी; पर सैनिन ने उसे पहले दो दिनों की जेमा के रूप में नहीं देखा। उसके सौन्दर्य में कोई

अन्तर आ गया हो, यह बात नहीं थी; पर ऐसा मालूम होता था कि उसकी आत्मा उसके शरीर के अन्दर बद्ध कीर की भाँति परिवेष्टित हो गई है। अपनी छतरी खोले और दस्ताने के बटन बन्द किए वह एक भद्र घराने की लड़की की भाँति चल रही थी और बातें कम करती थी। एमिल भी टहलते-टहलते थक गया था और सैनिन सब से अधिक उकता गया था। इसका ख़ास कारण यह भी था कि बातचीत जर्मन-भाषा में हो रही थी। अगर कोई ख़ुश था तो वह था तारतालिया कुत्ता। वह जिस किसी पशु-पक्षी को देखता, उसी पर तीर की तरह टूट पड़ता था। घाटी की ऊबड़-खाबड़ ज़मीन उसके आक्रमण में ज़रा भी बाधक सिद्ध नहीं हुई। वह दौड़-दौड़ और भौंक-भौंककर परेशान हो रहा था, फिर भी थकता नहीं नज़र आता था। हर क्लुबर ने साथियों को प्रसन्न रखने के लिए सभी यत्न किए। उसने सब से एक बलूत के घने वृक्ष के नीचे बैठ जाने के लिए अनुरोध किया और अपनी जेब में से 'पढ़ो और हँसो' नाम की पुस्तिका निकाली और उसे पढ़कर सब को सुनाने लगा। उसने चुन-चुनकर अच्छे-अच्छे हास्य-जनक वाक्य सुनाए। प्रत्येक वाक्य के अन्त में हर क्लुबर स्वयं कृत्रिम हँसी हँसता था; पर सिवा सैनिन की मामूली मुस्कराहट के उसका और कोई परिणाम नहीं हुआ। बारह बजते-बजते पार्टी सूदान लौटी और सब ने वहाँ के सर्वश्रेष्ठ अड्डे पर डेरा डाला।

उन्हें खाने-पीने का इन्तज़ाम करना था। हर क्लुबर ने प्रस्ताव किया कि खाना चलकर उस वसन्त-वाटिका में खाया जाए, जो चारों तरफ़ से बन्द है; पर जेमा इस बात पर राज़ी नहीं हुई और खाना वहीं खुली जगह में खाने की राय दी। वह एकान्त में न जाकर वहीं उस अड्डे पर ही अन्य यात्रियों की तरह एक मेज़ पर भोजन परोसकर खाना-खिलाना चाहती थी।

हर क्लुबर अपनी भावी पत्नी की मौज पूरी करने के लिए

दुकानदार के पास खाने के सब सामानों का आर्डर देने को चला गया। जेमा मूर्तिवत् खड़ी अपने होंठ चबाती हुई ज़मीन की तरफ़ देखती रही। उसे मालूम था कि सैनिन उसकी ओर निर्निमेष और प्रश्न-सूचक दृष्टि से देख रहा है—उसके इस कृत्य से उसे क्रोध-सा आ गया। इतने में हर क्लुबर ने वापस आकर सूचना दी कि खाना आधे घण्टे में तैयार होगा, इसलिए तब तक हम लोग कोई खेल खेले, क्योंकि इससे भूख हवा हो जाएगी। उसने फौरन् गेंद उछालना शुरू कर दिया और खेल में कई तरह के कौशल दिखलाए।

थोड़ी ही देर बाद खाना आ गया और सब मिलकर खाने के लिए बैठे।

१६

जर्मन-ढंग का खाना भी क्या होता है—दालचीनी से भरा हुआ खूब रसदार शोरबा, बड़ी-बड़ी पकौड़ियाँ, पकाया हुआ सूखा मांस, सूखे भुने हुए आलू, मुलायम चुक़न्दर, मसालेदार मछली और उसके साथ मुरब्बा, अचार और सिरका। पर शराब ज़रूर वढ़िया होनी चाहिए। सूदान के दुकानदार ग्राहक को प्रसन्न करना ख़ूब जानते। खैर, किसी तरह भी सही, भोजन तुष्टि-दायक रहा। क्लुबर के भोजन करने के प्रस्ताव पर भोजन के समय कोई विशेष बात भी नहीं हुई। भोजन के बाद काफ़ी पीने का नम्बर आया। हर क्लुबर ने नम्रतापूर्वक जेमा से सिगार पीने की आज्ञा माँगी,......पर सहसा इसी मौक़े पर एक ऐसी घटना घटित हो गई जिसकी आशा नहीं थी, और जो अनौचित्य और बदनामी का कारण बन गई!

पास की एक मेज पर मेन के पहाड़ी क़िले के कई अफ़सर बैठे थे। उनकी बातचीत और चितवन से मालूम होता था कि वे जेमा

के सौन्दर्य पर रीझे हुए हैं। उनमें से एक—जो सम्भवतः फ्रैंकफ़ोर्ट में रह आया था—बार-बार जेमा की ओर परिचित दृष्टि से देखता था। वह जेमा को अच्छी तरह जानता था। हठात् वह हाथ में गिलास लिये हुए उठा और जब सब अफ़सर पीने में मस्त हो रहे थे, और उनके सामने मेज़ पर बोतलों के ढेर जमा थे—चुपचाप जेमा की मेज के पास पहुँचा। वह एक सुन्दर युवक था, पर शराब अधिक पी जाने के कारण उसका चेहरा अस्थिर था और आँखें लाल होकर नाच रही थीं। उसकी सूरत से मालूम हो रहा था कि वह किसी अशिष्टता और गुस्ताखी पर तुला हुआ है। उसके साथियों ने पहले तो उसे रोकना चाहा, पर पीछे उसकी करतूत देखने की उत्सुकता से उसे जाने दिया। वह अफ़सर लड़खड़ाते हुए पैरों से जेमा के सामने आकर खड़ा हो गया और एक अस्वाभाविक स्वर में ज़ोर से चिल्लाकर बोला—"मैं फ्रैंकफ़ोर्ट की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी हलवाई-कन्या के सुस्वास्थ्य के नाम पर यह गिलास पीता हूँ (गिलास खाली कर के) और बदले में इस सुन्दरी की पवित्र उँगलियों से तोड़ा हुआ यह फूल लेता हूँ!" यह कहकर उसने जेमा की तश्तरी के पास पड़ा हुआ गुलाब का फूल उठा लिया। पहले जेमा को आश्चर्य हुआ, फिर वह चौंककर उठ गई और उसका चेहरा पीला पड़ गया··· फिर उसे क्रोध आया और उसका सारा बदन काँप उठा। और वह एकटक उस आदमी की ओर देखने लगी। उसकी आँखें सुर्ख़ हो रही थीं और उनसे क्रोध की ज्वाला निकल रही थी। अफ़सर उसके इस तरह घूरने से घबरा गया। वह अपने-आप धीरे से कुछ बड़बड़ाया और झुककर अपनी जगह वापस चला गया। उसके दोस्तों ने हँसी और शाबाशी के साथ उसका स्वागत किया।

हर क्लुबर धीरे से अपनी जगह से उठा और अकड़कर टोपी सिर पर रखते हुए शान के साथ बोला—"अजीब गुस्ताख़ी है!"

दुकानदार को बुलाकर कड़ाई के साथ उससे बिल माँगा······फिर गाड़ी जोतने की आज्ञा देते हुए कहा—"अगर इसी तरह बेइज़्ज़ती होती रही, तो किसी भी भले आदमी का ऐसी जगह खाना खाने के लिए आना असम्भव हो जाएगा !" जेमा अब तक चुपचाप अपनी जगह बैठी हाँफ रही थी। हर क्लुबर के ये शब्द सुनकर उसने उसकी ओर देखा······और उसे भी इसी तरह घूरकर देखने लगी जैसे उक्त अफ़सर को देखा था। एमिल क्रोध के मारे जला जा रहा था।

"उठो !" क्लुबर ने स्वर की उसी कठोरता के साथ जेमा से कहा—"तुम्हारा यहाँ रहना ठीक नहीं है। हम लोग वहाँ कमरे के अन्दर चलेंगे !"

जेमा चुपचाप उठी। हर क्लुबर ने उसे मदद देने के लिए अपनी बाँह आगे बढ़ा दी और दोनों कमरे की ओर बढ़े।

पर हर क्लुबर दुकानदार के दाम चुका रहा था और उक्त घटना की सज़ा के रूप में उसे कोई भी रक़म इनाम के रूप में देने को राज़ी नहीं हो रहा था, उसी समय सैनिन जल्दी से उस तरफ़ को लपका जहाँ उपयुक्त अफ़सर बैठे थे। उसने मेज़ के पास जाकर जेमा की अप्रतिष्ठा करनेवाले आदमी से (जो उस समय जेमा के हाथ का फूल अपने साथियों को सुँघा रहा था) फ्रेंच-भाषा में कहा—"महाशय, आपने उस लड़की के साथ जो बर्ताव किया है, वह किसी भले आदमी के लिए योग्य नहीं है और आपने जो अफ़सरी की वर्दी पहन रखी है, उसके लिए शोभाजनक नहीं है। मैं आपको बतलाने आया हूँ कि आपकी यह करतूत पाजीपन के सिवा और कुछ नहीं थी !"

युवक अफ़सर फुर्ती से उठ खड़ा हुआ, पर एक अधेड़ अफ़सर ने उसे इशारे से रोका और फिर बैठा दिया, कि सैनिन की ओर देखकर फ्रेंच-भाषा में ही पूछा—"क्या आप उस लड़की के सम्बन्धी,

भाई या उम्मेदवार पति हैं ?"

"मैं उसका कोई नहीं हूँ," सैनिन ने जवाब दिया—"मैं रूसी हूँ; पर मैं ऐसी गुस्ताखी को उपेक्षा-भाव से नहीं देख सकता ! यह मेरा कार्ड और पता है, आप जाँच कर सकते हैं।"

यह कहकर सैनिन ने अपना विज़िटिंग कार्ड मेज पर डाल दिया और उसी क्षण जेमा का फूल उठा लिया जो एक अफ़सर ने सूँघने के बाद मेज पर डाल दिया था। पहला अफ़सर फिर उठाना चाहता था, पर उसके साथी ने उसे फिर यह कहकर रोक लिया—"डनहॉफ ख़ामोश रहो ! बैठ जाओ !" इसके बाद रोकने वाला अफ़सर खुद उठा और अपने हैट पर हाथ रखकर आदरसूचक ढँग से कहा— "कल सुबह हमारी सेना का एक अफ़सर आपके पास जाएगा।"

सैनिन ने भी नम्रतापूर्वक उत्तर दिया और फौरन अपनी पार्टी में जा मिला।

हर क्लुबर ने ऐसा ढोंग रचा, मानों उसने सैनिन की अनुपस्थिति, और उसको उक्त अफसर के साथ बातचीत की ओर ध्यान ही नहीं दिया। वह कोचवान से जल्दी घोड़े जोतकर गाड़ी तैयार करने को कह रहा था। ज़ेमा ने भी सैनिन से कुछ नहीं कहा— उसने उसकी तरफ नजर भी नहीं डाली। उसकी चढ़ी हुई भवें, पीले और सूखे होंठ और स्थिर आकृति देखकर यह सहज ही भाँपा जा सकता था कि वह मन-ही-मन कुछ सोचकर दुख पा रही है। अकेला एमिल सैनिन से बोलना और उससे प्रश्न करना चाहता था। उसने सैनिन को अफसरों के पास जाते और उन्हें कोई चीज— कागज़ का टुकड़ा—देते देखा था।......उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, और मुख-मण्डल जल रहा था। वह सैनिन के गले से लिपट जाना चाहता था। वह चाहता था कि उन अफ़सरों का इसी क्षण सर्वनाश कर दे ! उसने बड़ी कठिनाई से अपने रूसी मित्र से अपने हृदय की बात छिपाई और उसकी तरफ केवल

ताकता रहा !

आखिर कोचवान ने घोड़े जोत लिए और गाड़ी चलने के लिए तैयार हो गई। सब लोग अन्दर बैठ गए। एमिल तारतालिया के साथ कोच-बक्स पर जा बैठा, क्योंकि वह गाड़ी में बैठकर क्लुबर का मुँह देख-देखकर अपने आपको विक्षुब्ध नहीं करना चाहता था।

रास्ते-भर हर क्लुबर बातें करता आया—किसी ने उस की बात का न तो विरोध किया न समर्थन, यद्यपि उसकी बातें ऐसी नहीं होती थीं जिससे सब सहमत हों—ख़ासकर इस बात पर उसने काफ़ी जोर दिया कि उसके इस प्रस्ताव को, कि चारों ओर से बन्द बसन्त-वाटिका में भोजन किया जाए, न मानने के कारण ऐसी दुर्घटना हुई, क्योंकि वहाँ ऐसी बात की सम्भावना ही नहीं थी। फिर उसने सैनिकों को अनेक सुविधा और स्वतन्त्रता देने का अपराध लगाकर गवर्न्मेण्ट को खूब कोसा और बतलाया कि समय आने पर इस अनियन्त्रण के कारण बड़ा ही असन्तोष फैलेगा और इसी से क्रान्ति हो जाए तो ताज्जुब नहीं। (यहाँ उसने एक कठोर और सहानुभूतिपूर्ण साँस खींची) फ्रांस ने उन्हें काफ़ी सबक़ दिया। आगे चलकर उसने यह भी कहा कि वह अधिकारियों के प्रति अपने हृदय में काफ़ी आदर रखता है और कभी भी·········क्रान्ति-कारी नहीं बन सकता; पर अपने विचार प्रकट किए बिना और ···············ऐसे अनुचित अधिकार प्रदर्शन पर अपनी असम्मति प्रकट किए बिना भी नहीं रह सकता। इसके बाद उसने सदाचार और अनौचित्य पर अपने विचार प्रकट किए और भद्रता तथा आदर्श की व्याख्या की।

जेमा को यह सब बातें बिल्कुल नहीं भाईं। जब शाम के भोजन के पहले सब लोग टहलने लगे थे तो वह हर क्लुबर से प्रसन्न नजर नहीं आती थी। न वह सैनिन के ही पास गई। वह उसकी उपस्थिति से घबराती थी। अपने भावी पति से भी वह

लज्ज़ा का अनुभव करने लगी। सैर समाप्त: होते-होते उसका बड़ा ही बुरा हाल हो गया। यद्यपि वह पहले की तरह सैनिन से एक बार भी नहीं बोली, फिर भी सहसा एकबार उसकी ओर प्रार्थनापूर्ण दृष्टि जरूर डाली।······सैनिन हर क्लुबर की बातों पर क्रुद्ध होने की बजाय जेमा की हालत पर अधिक अफ़सोस कर रहा था; फिर भी न जाने क्यों मन-ही-मन वह आज की घटना पर प्रसन्न-सा हो रहा था, यद्यपि उसे यह भी भय था कि दूसरे दिन सुबह-ही कोई सैनिक अफ़सर उसके पास कोई-न-कोई आफ़त लेकर अवश्य आएगा।

अन्त में आज की यह अभागी सैर समाप्त हुई। गाड़ी से उतरते ही सैनिन ने जेमा के हाथ में वह फूल, जिसे वह अफ़सरों के पास से जबर्दस्ती उठा लाया था, चुपचाप दे दिया। जेमा का चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसने चुपचाप फूल छिपा लिया। यद्यपि अभी सूर्यास्त भी नहीं हुआ था; पर सैनिन उसके घर में नहीं जाना चाहता था। जेमा ने भी कोई अनुरोध नहीं किया। इसके अतिरिक्त एक बात यह भी थी कि पैंतविलन ने आकर सूचना दी कि लीनोर इस समय भी सोई हुई है।एमिल ने शर्माकर सैनिन को विदा किया। उसके मन में सैनिन के प्रति श्रद्धा और प्रशंसा के भाव भरे थे। क्लुबर ने सैनिन को उसके कमरे तक पहुँचाया और ज़रा अविनय के साथ उसने विदा ली। ऐसा चतुर और शिष्टाचार-पटु जर्मन भी विषण्ण हो उठा था, और सच पूछो तो इस समय पार्टी का प्रत्येक व्यक्ति क्षुब्धता में डूब रहा था।

किन्तु सैनिन ने इस विषण्णता को अपने मन में देर तक नहीं टिकने दिया। शीघ्र ही उसका स्थान एक अस्पष्ट पर आनन्ददायक और विजयपूर्ण भाव ने ग्रहण कर लिया। वह अपने कमरे में धीरे-धीरे सीटी बजाते हुए टहलने लगा। अब वह किसी विषय पर विचार करके मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था।

१७

"मैं दस बजे तक अफ़सर की प्रतीक्षा करूंगा," दूसरे दिन प्रातःकाल सोकर उठने पर कपड़े पहनकर तैयार होते ही उसने सोचा—"तब तक वह आ ही जाएगा।" पर जर्मन लोग उठते तड़के हैं। अभी नौ भी नहीं बजे थे कि होटल के नौकर ने आकर सूचना दी कि सेकण्ड लेफ्टिनेंट रिचर नामक एक व्यक्ति उनसे मिलना चाहते हैं। सैनिन ने जल्दी से कोट पहना और नौकर से कहा कि उन्हें भेज दो। रिचर, सैनिन की आशा के विरुद्ध एक नवयुवक—वरन् लड़का कहना अधिक उपयुक्त होगा—अफ़सर निकला। वह अपने दाढ़ी-मूँछ-रहित चेहरे पर कुछ रोब लाना चाहता था, पर उसमें असफल रहा—बल्कि उसके लिए अपनी घबराहट तक का छिपाना मुश्किल हो गया। वह कुर्सी पर बैठकर अपनी तलवार का सहारा लेकर आगे की ओर झुका और तलवार फिसल जाने के कारण गिरते-गिरते बचा। टूटी-फूटी फ्रेंच-भाषा में रुक-रुककर हिच-किचाते हुए उसने सैनिन को समझाया कि वह अपने दोस्त बैरन डनहॉफ़ के पास से एक सन्देश लाया है, जिसमें उन्होंने सैनिन को उसके कल के दुर्वचन पर माफ़ी माँगने के लिए कहा है, और अगर सैनिन माफ़ी माँगने के लिए तैयार न हो, तो उसे बैरन डनहॉफ़ से द्वन्द्व-युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए। सैनिन ने कहा कि वह माफ़ी नहीं माँग सकता और द्वन्द्व-युद्ध के लिए तैयार है। तब रिचर ने उसी हिचकिचाहट के साथ पूछा कि किस की उपस्थिति में, किस समय और किस स्थान पर वह द्वन्द्व युद्ध की आवश्यक कार्रवाई करना चाहेगा। सैनिन ने उत्तर दिया कि वह दो घण्टे बाद फिर आये, तक तक वह (सैनिन) कोई-न-कोई मध्यस्थ खोज निकालेगा। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि वह मध्यस्थ कहाँ

से लाएगा। रिचर जाने के लिए उठा······पर दरवाज़े पर जाकर वह रुका—जैसे उसकी आत्मा ने उसके शरीर को डंक मार दिया हो, और सैनिन के पास आकर बोला कि उसका मित्र बैरन डन-हॉफ़······को नहीं पहचान सका और······कुछ हद तक कल की घटना के लिए वह अपने को क़सूरवार भी समझता है, इसलिए ज़रा-सी माफ़ी माँग लेने पर ही वह सन्तुष्ट हो जायगा। इसके जवाब में सैनिन ने कहा कि वह किसी-भी तरह की—छोटी या बड़ी—माफ़ी नहीं माँग सकता, क्योंकि वह अपने को क़सूरवार नहीं समझता। "ऐसी अवस्था में" रिचर ने कहा—"आपको मित्रतापूर्ण (!) पिस्तौल चलानी होगी!"

"मैं यह कुछ नहीं समझता," सैनिन ने कहा—"क्या हम लोग हवा में पिस्तौल चलाएँगे?"

"नहीं, हवा में तो नहीं," लेफ्टिनेण्ट ने रुक-रुककर असम्बद्ध शब्दों में कहा—"लेकिन मैं समझता हूँ कि चूँकि यह मामला दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच का है······मैं आपके मध्यस्थ से बातें करूँगा," कहकर वह वहाँ से शीघ्र ही चला गया।

सैनिन कुर्सी पर पड़कर फ़र्श की ओर देखने लगा। "इन बातों का मतलब क्या है? मेरा जीवन सहसा एक दूसरे मार्ग की ओर क्यों मुड़ गया?" सारा भूत और सारा भविष्य अकस्मात् विलीन हो गया—और यही एक बात रह गई कि मैं किसी बात को लेकर किसी के साथ फ्रैंकफ़ोर्ट में लड़ने जा रहा हूँ।" उसे अपनी एक पगली मौसी की याद आई जो नाच-नाचकर सैनिन से अपनी प्रेम-कथा का गान गाया करती थी। उसे उसके गाने में से "मेरे प्यारे लेफ्टिनेण्ट' का वाक्य याद आया और वह हँस पड़ा। "पर मुझे समय नहीं गँवाना चाहिए; मुझे तैयार हो जाना चाहिए।" उसने ज़ोर से कहा और फ़ौरन् उठ खड़ा हुआ। इतने ही में पैंतलिवन एक पर्चा लेकर उसके पास आया।

"मैंने कई बार दरवाज़ा खटखटाया, पर आपने कोई जवाब नहीं दिया—मैंने समझा आप कमरे में नहीं हैं," बुड्ढे ने पुर्ज़ा सैनिन के हाथ में थमाते हुए कहा—"जेमा ने भेजा है।"

सैनिन ने पत्र हाथ में लिया और खोलकर एक साँस में पढ़ गया। जेमा ने लिखा था कि वह किसी बात के सम्बन्ध में—जिसे सैनिन जानता है—बहुत चिन्तित है और फ़ौरन उससे मिलना चाहती है।

"जेमा चिन्तित है," पैंतलिवन ने—जो पत्र के विषय से अपरिचित नहीं था—कहा—"उसने कहा है कि मैं देखूँ कि आप क्या कर रहे हैं और हो सके तो आपको अपने साथ ही लिवा लाऊँ।"

"आखिर······क्यों नहीं ?" उसने अपने-आप से पूछा।

"पैंतलिवन !" फिर उसने ज़ोर से कहा।

बुड्ढा चौंककर सैनिन की ओर ताकने लगा।

"आप जानते हैं ?" सैनिन ने कहा—"कल क्या हुआ था ?"

पैंतलिवन ने अपने होंठ चबाते और बाल फहराते हुए कहा—"हाँ।"

एमिल ने कल की सारी घटना पैंतलिवन को बता दी थी।

"अच्छा, आप जानते हैं! एक अफ़सर अभी मेरे पास से होकर गया है। उस बदमाश ने—जिसने कल जेमा के प्रति अप्रतिष्ठाजनक शब्द कहे थे—मुझे द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारा है। मैंने मंज़ूर कर लिया है। पर मुझे कोई मध्यस्थ नहीं मिलता। क्या आप मेरा मध्यस्थ बनना स्वीकार करेंगे ?"

पैंतलिवन यह बातें सुनकर चकित हो गया और भवें तानकर खड़ा रहा।

"क्या आप लड़ने के लिए बिल्कुल बाध्य हैं ?" आखिर बुड्ढे ने इटैलियन-भाषा में कहा। अब तक वह फ्रेंच-भाषा में बोल रहा था।

"बिल्कुल बाध्य हूँ—मैं और कोई उपाय नहीं करना चाहता, क्योंकि ऐसा करना अपनी इज़्ज़त में हमेशा के लिए बट्टा लगाना है।"

"अच्छा, अगर मैं आपका मध्यस्थ न बनना चाहूँ, तो आप दूसरा आदमी खोजेंगे ?"

"हाँ······बेशक !"

पैंतलिवन फ़र्श की ओर देखने लगा। "पर मुझे एक बात पूछने की आज्ञा दीजिए मि० सैनिन, आपके द्वन्द्व-युद्ध से क्या किसी भले घर की लड़की की इज्ज़त पर धब्बा नहीं लगेगा ?"

"मैं ऐसा नहीं समझता; पर किसी भी तरह यह लड़ाई टाली नहीं जा सकती !"

"अच्छा !" पैंतलिवन ने क्षण-भर चुप रहकर सहसा ऊपर की ओर देखते हुए कहा—"पर वह क्लुबर इस सम्बन्ध में क्या कर रहा है ?"

"कुछ नहीं !"

"उफ़ !" पैंतलिवन ने घृणा-पूर्वक खवे हिलाते हुए अस्थिर-स्वर में कहा—"तो भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि मेरी इस वर्तमान दशा में भी आप मुझे सज्जन समझते हैं। इस प्रकार मुझ पर विश्वास करके आपने अपनी भद्रता का परिचय दिया है। मैं आपकी बात पर विचार करूँगा।"

"पर अब सोच-विचार करने के लिए तो समय ही नहीं रहा है महाशय······"

"मैं सिर्फ़ एक घण्टे का समय चाहता हूँ······" बुड्ढे ने कहा—"मेरे मालिक की लड़की भी इस मामले में है इसीलिए मुझे इस पर विचार करना होगा······घंटे, पौन-घण्टे में आपको मेरा निश्चय मालूम हो जायगा।"

"अच्छा, मैं इन्तज़ार करता हूँ।"

"ग्रौर ग्रब......जेमा को क्या जवाब दूं ?"

सैनिन ने एक पुर्ज़ा लिखा—"अपने मन को शान्त रखिए। तीन घंटे में मैं ग्राप के पास ग्राऊँगा ग्रौर तब सब बातें बतलाऊँगा! ग्रापकी सहानुभूति के लिए मैं धन्यवाद देता हूँ।" ग्रौर उसे पैंतलिवन के हाथ में दे दिया।

बुड्ढे ने सावधानी के साथ पुर्ज़ा जेब में डाला ग्रौर फिर एक घंटे बाद ग्राने का वादा करके वह दरवाज़े की ग्रोर बढ़ा फिर उसी क्षण जल्दी से सैनिन के पास वापस ग्राकर, उसका हाथ पकड़कर ग्रपनी ग्रोर खींचते हुए कहा—"ग्राप भद्र युवक हैं! ग्रापका हृदय विशाल है। इस बुड्ढे को ग्रपना वीरता-पूर्ण दाहिना हाथ स्पर्श करने दीजिये।" फिर दो क़दम पीछे हटकर, हाथ ग्रलग हटाकर चला गया।

सैनिन ने उसकी ग्रोर देखा ग्रौर ग्रख़बार उठाकर पढ़ने की चेष्टा करने लगा। पर उसकी ग्राँखें व्यर्थ ही कागज़ पर चक्कर खा रही थीं—उसकी समझ में कुछ नहीं ग्राया।

१८

एक घंटे बाद होटल का नौकर एक पुराना ग्रौर गन्दा विज़िटिंग कार्ड लेकर सैनिन के पास ग्राया जिस पर ये शब्द लिखे थे—"पैंतलिवन सिपातोला वैरीज़, दरबारी गायनाचार्य टु हिज़ रॉयल हाईनेस दि ड्यूक ग्राफ़ मदीना।" नौकर ने ज्यों-ही कार्ड सैनिन के हाथ में दिया, त्यों-ही उसके पीछे-पीछे पैंतलिवन ख़ुद ग्राता हुग्रा दिखाई पड़ा। उसने नीचे-से ऊपर तक ग्रपनी पोशाक बदल ली थी ग्रौर काले रंग का बढ़िया लम्बा कोट, सफेद जाकेट ग्रौर काला पाजामा पहन रक्खा था। दाहिने हाथ में एक काले रंग का बढ़िया हैट था ग्रौर बाँयें में दस्ताने। उसने ग्रपना मफ़लर भी ख़ूब क़ायदे

से लगा लिया था जिसमें एक ऐसी पिन लगी थी जिसके सिरे में पैंतलिवन के कथनानुसार क़ीमती पत्थर लगे हुए थे। उँगली में स्त्री-पुरुष के मिले हुए हाथ के आकर की अँगूठी पहन रक्खी थी। कपड़ों में से पुराने-पन की गन्ध आ रही थी। कपूर और कस्तूरी की तीक्ष्ण गन्ध से सारा कमरा गमक उठा। उसके इस शृङ्गार को आज जिसने देखा होगा, वही दंग रह गया होगा। सैनिन ने उठकर उसका स्वागत किया।

"मैं आपका मध्यस्थ हूँ।" पैंतलिवन ने आते ही फ्रेंच-भाषा में सूचना दी, और एक नृत्य-काला-विशारद की भाँति अगूँठे के बल पर अपने सारे शरीर को आगे की ओर झुका दिया। "मैं आपको कुछ गुर बतलाने आया हूँ—क्या आप घातक युद्ध करना चाहते हैं ?" बुड्ढे ने पूछा।

"घातक क्यों दोस्त सिपातोला ? मैंने उस बदमाश के प्रति जो शब्द कहे हैं, वह वापस नहीं ले सकता; पर मैं ख़ून का प्यासा नहीं हूँ !......ज़रा इन्तज़ार कीजिये, मेरे विरोधी का मध्यस्थ अभी यहाँ आने वाला है। मैं दूसरे कमरे में चला जाऊँगा, आप उस से बातचीत कर लीजियेगा। मैं आपकी इस कृपा को कभी नहीं भूलूँगा और आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ।"

"सब से पहले इज़्ज़त का ख़याल होना चाहिये !" पैंतलिवन ने जवाब दिया और सैनिन के कहने का इन्तज़ार किये बिना ही वह आराम-कुर्सी पर बैठ गया। "अगर वह दुकानदार क्लुषोरियो अपना स्पष्ट कर्तव्य नहीं समझ सकता," बुड्ढे ने वाक्-प्रवाह को फ्रेंच से इटैलियन भाषा में बदलते हुए कहा—"और डरता है तो उसके लिए यह कोई अच्छी बात नहीं है !......उसकी आत्मा कमज़ोर है; कोई और बात नहीं है !......रही द्वन्द्व-युद्ध की शर्तों की बात; मैं आपका मध्यस्थ हूँ और आपका हित-चिन्तन मेरा पवित्र कर्तव्य है ....जब मैं पदुआ में रहा करता था, तो वहाँ

घुड़सवारों की एक पल्टन पड़ाव डाले पड़ी हुई थी !......मैं उनकी हरएक बात से परिचित हो गया था। मैं प्रधान तारबुस्की से भी इन विषयों पर वार्तालाप किया करता था।......क्या उसका मध्यस्थ जल्दी आने वाला है ?"

"हाँ, समय हो चुका है, अब आता ही होगा—लीजिये वह आ गया !" सैनिन ने सड़क की ओर नज़र डालते हुए कहा।"

पैंतलिवन ने उठकर घड़ी में समय देखा। फिर वह अपने लम्बे बालों पर हाथ फेरते हुए जूते की ओर देखने लगा। इतने में उस अल्प-वयस्क सब लेफ्टिनेंट ने घबराहट के साथ कमरे में प्रवेश किया। सैनिन ने दोनों मध्यस्थों का एक-दूसरे से परिचय कराया।

"महाशय रिचर सब-लेफ्टिनेंट, महाशय सिपातोला, गायनाचार्य।" लेफ्टिनेंट बुड्ढे की सूरत देखकर कुछ उखड़-सा गया...... अगर कोई उसी वक्त आकर कह देता कि ये गायनाचार्य महोदय बावर्ची का काम करके पेट पालते हैं, तो वह अफ़सर क्या कहता ! पर पैंतलिवन ने ऐसा मुँह बनाया मानों द्वन्द्व-युद्ध की मध्यस्थता जैसे काम उसे रोज़ ही करने पड़ते हैं—इस समय उसे अपने नाटकीय जीवन की याद आ गई और उसने यह सोच लिया कि उसे एक मध्यस्थ का पार्ट करना है। कुछ देर तक दोनों मध्यस्थ चुप रहे।

"अच्छा ! अब हम लोगों का काम शुरू होना चाहिये।" पैंतलिवन पहले बोला।

"ज़रूर !" सब-लेफ्टिनेंट ने कहा—"पर..... पर एक प्रधान......की उपस्थिति......"

"मैं आप लोगों के पास से चला जाता हूँ" सैनिन ने कहा। फिर वह नम्रतापूर्वक झुक कर सोने के कमरे में चला गया और किवाड़ बन्द कर लिए।

बिछौने पर लेटकर सैनिन जेमा के सम्बन्ध में सोचने लगा...

पर दोनों मध्यस्थों की आवाज़ किवाड़ के सूराख में होकर उसे साफ़ सुनाई देती थी। बातचीत फ्रेंच-भाषा में हो रही थी। दोनों ही टूटी-फूटी भाषा बोल रहे थे, और दोनों का ढंग एक दूसरे से निराला था। पैंतलिवन ने फिर वही प्रधान तारबस्की की पदुआ-वाली कथा सुनाकर अपना रोब जमाया। सब-लेफ्टिनेंट भी कुछ कहना चाहता था, पर बुड्ढा बिना अपनी कहानी समाप्त किये दूसरे की कब सुनता था। सैनिन को आश्चर्य हुआ जब एक कथा समाप्त होते-न-होते उसने एक औरत—मासूम औरत—का ज़िक्र छेड़ दिया जिसकी कानी उँगली की कीमत सारे संसार के अफ़सरों के बराबर थी......और कई बार ज़ोरदार भाषा में इस प्रकार दोहराया—"यह बड़े शर्म की बात है !......"सब-लेफ्टिनंट ने पहले तो कोई जवाब नहीं दिया, पर उसकी बात में भी क्रोधावेश स्पष्ट मालूम हो रहा था, और उसने बुड्ढे से कहा कि वह वहाँ उपदेश सुनने नहीं आया है।

"आपकी उम्र में सच्ची बात सुनना हरएक आदमी के लिए अच्छा है !" पैंतलिवन ने कहा।

दोनों मध्यस्थों की बहस ने कई बार कटुता का रूप धारण कर लिया। एक घण्टे में बहस ख़तम हो पाई, जिसमें नीचे लिखी शर्तें तय पाईं—"बैरन डनहॉफ़ और एम०डी० सैनिन दूसरे दिन दस बजे हनाऊ के पास जंगल में एक-दूसरे से बीस क़दम के फ़ासले पर खड़े होंगे। प्रत्येक को मध्यस्थों के इशारों पर दो-दो बार फ़ायर करने का अधिकार होगा। पिस्तौल एक घोड़े वाले होंगे; दो-नले नहीं।"

इसके बाद रिचर चला गया, और पैंतलिवन ने गम्भीरता-पूर्वक सोने के कमरे का दरवाजा खोला। शर्तों का ब्यौरा बताने के बाद वह चिल्लाकर बोला—"शाबास बहादुर ! वीर रूसी !! आपकी विजय होगी।"

थोड़ी देर बाद दोनों रोज़ेली की दुकान की ओर रवाना हुए।

सैनिन ने पैंतलिवन से प्रतिज्ञा करा ली कि वह द्वन्द्व-युद्ध की बात गुप्त रखेगा। इस समय पैंतलिवन प्रसन्न था और खूब शान के साथ चल रहा था। यद्यपि इस असाधारण घटना का परिणाम दुःखद होने की सम्भावना थी, पर उसे आज अपनी उस अवस्था की याद आ गई, जब वह खुद चैलेंज देने और पाने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका था,—पर हाँ, यह बात सच थी कि उसका चैलेंज स्टेज़ के ऊपर ही होता था—और इस रूप में उसने बड़ी-बड़ी भयानक घटनाओं के पार्ट किए थे।

१६

एमिल ने दौड़कर सैनिन का स्वागत किया। घण्टे-भर से भी अधिक वह उसके आने की प्रतीक्षा कर चुका था—और आते-ही धीरे से उसके कान में कह दिया कि उसकी माँ कल की घटना के सम्बन्ध में अभी तक कुछ नहीं जान पाई है, इसलिए वह भी इसकी चर्चा न करे। एमिल ने यह भी बतलाया कि अब फिर उसकी तैयारी क्लुबर की दूकान की है।……पर वह वहाँ न जाकर कहीं छिप रहने का विचार रखता है! क्षण-भर में ये सारी बातें बताकर उसने सैनिन का कन्धा पकड़ लिया और बड़े वेग से उसे चूमकर सड़क की ओर भाग गया। दूकान में जेमा सैनिन को मिली वह कुछ कहना चाहती थी, पर बोल नहीं सकी। उसके होंठ काँप रहे थे और आँखें आधी मुँदी हुई थीं। सैनिन ने शीघ्र ही यह कहकर उसे ढाढ़स दिया कि मामला खतम हो गया……।

"क्या आज कोई आपके पास नहीं आया ?" जेमा ने पूछा।

"एक आदमी आया था, कुछ बातचीत हुई और…सन्तोष-जनक समझौता हो गया।

जेमा अन्दर चली गई।

"उसे मेरी बात पर विश्वास नहीं आया !" सैनिन ने सोचा···
आखिर वह अन्दर के कमरे में फ्राँ लीनोर के पास गया।

लीनोर का सिर-दर्द तो दूर हो गया था, पर उसका मन कुछ विषण्ण-सा हो रहा था। उसने उसी अवस्था में मुस्कराकर सैनिन का स्वागत किया। साथ ही यह भी कहा कि चूँकि उसकी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए वह काफ़ी आनन्द न ले सकेगा। सैनिन उसके पास बैठ गया और देखा कि उसकी पलकें कुछ सूज आई हैं।

"क्या तकलीफ़ हो गई आपको ? पहले तो तबीयत बिल्कुल ठीक थी।"

"ओह !" उसने दूसरे कमरे में बैठी हुई जेमा की ओर इशारा करके फुसफुसाकर कहा—"यह न पूछिये······धीरे से बोलिए।"

"पर तकलीफ़ क्या है आपको ?"

"ओह, महाशय ! मैं ख़ुद नहीं जानती क्या तकलीफ़ है !"

"किसी के दुर्व्यवहार से तो आपका मन दुखी नहीं हुआ ?"

"नहीं, अकस्मात् मेरा दिल बैठा जा रहा है। मुझे गिवनी बैतिस्ता······और अपनी युवावस्था की याद आ गई थी······कैसी जल्दी वे दिन गुज़र गये।······अब वे दिन लौटकर नहीं आ सकते। मुझे मालूम होता है, मैं वही हूँ······पर वृद्धावस्था सिरपर आ गई !" फ्राँ लीनोर की आँखें सजल हो गईं। "आप मेरी तरफ़ देखिए, मुझे ताज्जुब होता है।······आप भी बुड्ढे हो जाएँगे, तब आपको मालूम हो जायगा कि यह कैसी दुःखद अवस्था है !"

सैनिन ने उसे आश्वासन देने की चेष्टा की। उससे बच्चों की बात छेड़कर उसका विचार बदलना चाहा और समझाया कि अपने लड़के-लड़की की देख-भाल ही अब उसके लिये सब-कुछ है। उसने मज़ाक-मज़ाक में यह भी कह डाला कि अब उसे अधिक गम्भीर बनना चाहिए······पर उस (लीनोर) ने उससे अपने एकान्त

में पड़ी रहने देने की प्रार्थना की। सैनिन ने आज पहले-ही इस बात का अनुभव किया कि इस प्रकार के शोक और वृद्धावस्था-जन्य निराशा की कोई भी औषधि संसार में नहीं है—इसे चुपचाप गुज़र जाने देना चाहिए। सैनिन ने उसे कोई खेल खेलकर जी बहलाने को कहा। आखिर लीनोर इस बात पर राज़ी हो गई।

खाने के समय तक सैनिन उसके साथ ताश खेलता रहा और भोजन के बाद पैंतलिवन ने भी उसमें भाग लिया। पर पैंतलिवन की प्रकृति में आज बड़ा अन्तर आ गया था। उस की झुकी हुई भवें और गम्भीर मुख-मुद्रा से ऐसा मालूम होता था, मानो वह किसी बहुत बड़े रहस्य को छिपाये बैठा है।

उस दिन पैंतलिवन ने सैनिन का असाधारण सम्मान किया। भोजन परोसते समय भी गम्भीरता और अदब के साथ उसने पहली प्लेट सैनिन के सामने रखी। भोजन के बाद ताश देते समय मौक़ा पाकर उसने यह बात भी कही कि रूसियों के समान सहृदय और वीर संसार में किसी भी अन्य देश के निवासी नहीं होते !

"कैसा चापलूस है यह बुड्ढा !" सैनिक ने मन-ही-मन सोचा।

सैनिन को लीनोर की मानसिक अवस्था पर अधिक आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि कल की यात्रा में वह उसकी लड़की का व्यवहार देख चुका था। यह बात नहीं थी कि वह (जैमा) उससे पिण्ड छुड़ाना चाहती थी ……इसके विरुद्ध वह लगातार बहुत देर तक उसके पास बैठी रही, उसकी बातें सुनती रही और उसकी ओर देखती भी रही; पर वह उससे स्वयं बातें नहीं करना चाहती थी, इसलिए जब वह सीधे उससे बातें करने लगा तो वह चुपचाप वहाँ से उठकर कुछ क्षण के लिए बाहर चली गई और फिर वापस आकर कोने में चुपचाप बैठ गई। इसके बाद कुछ सोच-सोचकर परेशान-सी होने लगी……फ्रॉ लीनोर ने भी आखिर उसकी यह अवस्था देखी और दो बार पूछा कि बात क्या है, जो वह ऐसी

उदासीन नज़र आती है।

"कुछ भी नहीं," जेमा ने उत्तर दिया—"तुम तो जानती हो कि कभी-कभी मेरी तबीयत ऐसी ही हो जाया करती है!"

"हाँ, सच है।" लीनोर ने कहा।

इस प्रकार वह दिन यों-ही गुज़रा—न तो कोई विशेष प्रसन्नता की बात हुई, न विषाद की। जेमा यदि प्रसन्न होती—सैनिन······" कौन जानता है ?······शायद वह कुछ हँसी खुशी की बातें कर सकता—या सदैव के लिए उसके प्रति अपने हृदय में उदासीनता के भाव लेकर जाता,······पर चूँकि जेमा के मुँह से उसने इस प्रकार का एक शब्द भी आज तक नहीं सुना, इसलिए वह मजबूर होकर कॉफ़ी पीने के पहले कुछ देर तक पियानो पर जी बहलाता रहा।

एमिल उस दिन शाम को देरी से आया, और हर क्लुबर के सम्बन्ध कोई कुछ पूछ न बैठे, इस डर से सब से दूर-दूर ही रहा। आखिर जब अँधेरा अधिक होने लग, तो सैनिन ने विदा ली।

जेमा से विदा लेते समय उसके हृदय में काव्यानुमोदित प्रणयी-प्रणयिनी के चिर-विछोह का स्मरण हो आया। उसने बड़े चाव के साथ जेमा से हाथ मिलाया और उसके चेहरे को अच्छी तरह देखना चाहा, पर जेमा ने मुँह फेरकर अपनी उँगलियाँ छुड़ा लीं।

२०

बाहर निकलकर सैनिन ने देखा कि आकाश चमकीले तारों से भर गया है! छोटे-बड़े अनन्त तारों की शोभा से सैनिन के हृदय में एक नवीन भाव जागृत हो आया। उस दिन रात अँधेरी थी, फिर भी अन्धकार घना, नहीं था। सैनिक सड़क के दूसरे छोर तक पहुँचा······। उसकी इच्छा यकायक अपने होटल के कमरे में जाने

की नहीं थी—कुछ देर तक वह खुली हवा में टहलना चाहता था! वह लौटकर रोज़ेली की दुकान के बराबर से होकर—गुजरने लगा। सहसा सड़क की ओर वाली एक खिड़की खुली; पर कमरे में रोशनी नहीं थी—फिर भी एक स्त्री की आकृति उसे अस्पष्ट रूप में दिखाई पड़ी। स्त्री ने उसका नाम लेकर पुकारा—"मित्री महाशय।"

सैनिक फ़ौरन् खिड़की की ओर बढ़ा······जेमा! खिड़की पर कुहनियाँ टेके वह आगे की ओर झुकी थी।

"मित्री महाशय!" उसने सतर्कता से कहा—"मैं सारे दिन आपसे कुछ कहना चाहती थी······पर मैं अपने मन पर पूर्णतः अधिकार नहीं जमा सकी। अब आपको अकस्मात् यहाँ देखकर मैंने सोचा कि वह बात होनी ही है······"

इतना कहकर जेमा रुक गई। वह और कुछ कहना चाहती थी, पर नहीं कह सकी—उस समय एक असाधारण घटित हुई।

सहसा वायु-मण्डल शान्त और आकाश स्वच्छ होते हुए भी हवा का एक ऐसा तेज झोंका आया कि मालूम हुआ जमीन हिल रही है। तारों की चमकीली रोशनी फीकी पड़ गई। वायु-प्रवाह शीतल न होकर गर्म और दग्धकारी हो उठा। बड़े-बड़े वृक्षों की डालियाँ और मकानों की छतें झोंके की चोट से टूटने और गिरने लगी। सैनिन की टोपी उड़कर जेमा के पास जा जा पड़ी और अपना शरीर सँभालने के लिए उसे विवश हो खिड़की का सहारा लेना पड़ा। जेमा कुछ उँचाई पर थी उसे विवश होकर सैनिन के दोनों कन्धे पकड़ने पड़े, और इस प्रकार सैनिन का सिर जेमा की छाती पर आ पड़ा। प्रबल झंझावात का भयानक शोर कुछ ही क्षण तक रहा······चिड़ियों के विशाल समूह की भाँति हवा के प्रबल झोंके गुजरकर अपने पीछे पूर्ण शान्ति छोड़ गए।

सैनिन ने अपना सिर उठाकर ऊपर जेमा का सुन्दर, पवित्र और ओजपूर्ण मुख-मण्डल तथा उसकी विशाल आँखें देखीं। उस समय

वह स्निग्धसौन्दर्य उसे ऐसा आकर्षक प्रतीत हुआ कि उसके हृदय की गति बन्द-सी हो गई। जेमा के कोमल केश अस्तव्यस्त होकर उसकी छाती से नीचे तक लटक रहे थे, इसलिए सैनिन के होठों से उनका स्पर्श हो गया। उसके मुँह से हठात् निकल पड़ा—"जेमा!"

"क्यों, यह क्या था? कहीं बिजली गिरी है क्या?" जेमा ने अपनी खुली बाँहें सैनिन के कन्धे पर से उठाये बिना ही कुछ दूरी पर नज़र डालते हुए कहा।

"जेमा!" सैनिन ने दोहराया।

जेमा ने ठंडी साँस ली, पीछे मुड़कर कमरे की ओर देखा और जल्दी से अपनी जाकेट की जेब में से एक मुरझाया हुआ फूल निकाल-कर सैनिन की ओर फेंक दिया।

"मैं आपको यह फूल देना चाहती थी।"

सैनिन ने पहचाना, यह वही फूल था, जिसे उसने कल अफ़सरों के पास से वापस ले लिया था......।

पर तब तक खिड़की बन्द हो चुकी थी और धुँधले शीशे के अन्दर कुछ भी दिखाई नहीं दे सकता था।

सैनिन बिना हैट के ही अपने कमरे में गया।......उसे यह ख्याल भी नहीं आया कि उसके सिर पर टोपी नहीं है।

२१

जब रात बीत गई और सवेरा होने को आया, तो सैनिन को नींद आने लगी। इसमें आश्चर्य ही क्या था! रातवाले तूफ़ान के झोंके में उसे यही नहीं मालूम हुआ कि जेमा कैसी सुन्दरी है और वह उसे चाहता है—ये बातें तो वह पहले ही देख और जान चुका था......किन्तु अब वह लगभग......उससे प्रेम करता है। हवा के उस झोंके की ही तरह प्रेम ने भी उसपर आक्रमण कर दिया।

"और यह पाजी द्वन्द्व-युद्ध !" अब वह अपनी भावी दुरवस्था का मन-ही-मन चित्रण करने लगा। मान लिया कि वह (अफ़सर) उसे न मार सका······तो इस लड़की के प्रति उसके प्रेम का परिणाम क्या होगा ? उसकी सगाई दूसरे से हो चुकी है ? यह मान भी लें कि वह 'दूसरा' मेरे लिए ख़तरनाक न हुआ और जेमा स्वयं उसकी ओर झुकी······ तो इन सब बातों का फल क्या होगा ? क्या कहें ! ऐसी सुन्दरी !······

वह कमरे में टहलते-टहलते मेज़ के पास बैठ गया और एक काग़ज पर कुछ सतरें लिखकर उन्हें ब्लाटिंग से सुखाया।······ उसे जेमा की कल की आश्चर्य-जनक मूर्ति खिड़की में खड़ी दिखाई पड़ी। फिर आकस्मिक प्रचण्ड वायु-प्रवाह का दृश्य सामने आया और फिर उसकी कोमल सुन्दर बाँहें उसके कन्धों से आ लगीं···अब उसने वह फूल निकाला जो उसने ओर फेंक दिया था और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी अर्द्ध-शुष्क पंखुड़ियों से जेमा के व्यक्तित्व की सुगन्ध, गुलाब की सुगन्ध से अधिक कोमल और मधुर होकर निकल रही है।

"क्या वह (अफ़सर) मुझे जान से मार देगा, या मैं सिर्फ़ जख़्मी हो जाऊँगा ?"

वह बिछौने पर न जाकर कपड़े पहने-पहने ही सोफ़े पर सो गया।

किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रक्खा !···उसने आँखें खोल दीं और सामने पैंतलिवन को खड़ा देख।

"आप तो ऐसे सो रहे हैं, जैसे बेबीलोन की लड़ाई में सिकन्दर सो रहा था !" बुड्ढे ने कहा।

"कितने बजे हैं इस समय ?" सैनिन ने पूछा।

"पौने सात; हनाऊ दो घण्टे का रास्ता है। हम लोगों को उनसे पहले ही वहाँ पहुँच जाना चाहिए। रूसी अपने दुश्मनों से सदा-आगे बढ़े रहते हैं ! मैंने अच्छी-से-अच्छी गाड़ी किराए पर

कर ली है।"

सैनिन हाथ-मुँह धोने लगा।

"पिस्तौल कहाँ है?" उसने पूछा।

"वही लाएगा पिस्तौल। एक डॉक्टर भी साथ लायेगा।"

पैंतलिवन कल की तरह आज भी प्रसन्न-वदन नज़र आता था; पर जब वह सैनिन के साथ गाड़ी में बैठा और जब कोचवान ने चाबुक सँभाली और गाड़ी रवाना हुई, तो भूतपूर्व संगीताचार्य के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। घबराहट के मारे उसका दिल बैठने लगा। बालू की भीत की तरह उसके सारे साहस की नींव हिलने लगी।

"हे भगवान्! हम लोग क्या करने जा रहे हैं!" बुड्ढे ने सहसा सिर हिलाकर ऊँची आवाज में कहा—"मैं क्या कर रहा हूँ? बुढ़ापे में मैं पागल तो नहीं हो गया हूँ?"

सैनिन ताज्जुब में आकर हँसने लगा और अपने हाथ से पैंत-लिवन को पकड़कर बोला—"डर किस बात का है? हम दोनों साथ हैं।"

"हाँ, हाँ," बुड्ढे ने कहा—"हाँ, हम लोग अन्त तक साथ रहेंगे, पर फिर भी मैं पागल हूँ! सब-कुछ ठीक था......अकस्मात्... तकधिन!"

"तकधिन! क्या स्टेज की याद आ रही है," सैनिन ने ज़बर्दस्ती की हँसी हँसकर कहा—"पर इस में आपका क्या क़सूर है?"

"मैं जानता हूँ, मेरा क़सूर नहीं है। सचमुच मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। फिर भी......ऐसी गुस्ताखी!" पैंतलिवन ने ठंडी साँस लेकर कहा।

गाड़ी आगे बढ़ती जा रही थी।

प्रातःकाल का सुहावना समय था। फ्रैंकफ़ोर्ट की सड़कों पर लोग टहलते दिखाई दे रहे थे। धूप धीरे-धीरे फैल रही थी। गाड़ी

शहर से बाहर पहुँची तो स्वच्छ आकाश में लावा पक्षियों के गान गूँज रहे थे। सहसा चौराहे पर जब गाड़ी दूसरी ओर को मुड़ी तो पास के पेड़ की . से एक परिचित व्यक्ति कई क़दम गाड़ी की ओर चलकर खड़ा हो गया। सैनिन ने ध्यान से देखा……"हे भगवान् यह तो एमिल है!"

"पर क्या वह द्वन्द्व-युद्ध के बारे में कुछ जानता है?" सैनिन ने पैंतलिवन से पूछा।

"मैं आप से कहता हूँ—मैं पागल हो गया हूँ!" बूढ़े इटैलियन ने निराश होकर ज़ोर-से कहा—यह नटखट लड़का सारी रात मुझे परेशान करता रहा, आख़िर आज सुबह मुझे उससे सब बातें बतानी पड़ीं।"

"बस, देख ली तुम्हारी विश्वस्तता!" सैनिन ने मन-ही-मन सोचा। गाड़ी एमिल के पास पहुँची। सैनिन ने कोचवान से गाड़ी रोकने के लिए कहा और उस नटखट लड़के को पास बुलाया। एमिल हिचकिचाते हुए पास आया। उसका चेहरा वैसा ही पीला हो रहा था, जैसा बेहोशी के दिन हुआ था। बड़ी कठिनाई से वह खड़ा रह सका—उसके पैर काँप रहे थे।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" सैनिन ने उसे डाँटकर पूछा—"घर से क्यों चले आए?"

"मुझे साथ ले चलिए," एमिल ने रुक-रुककर काँपते स्वर में कहा—"मुझे चलने दीजिए, मैं आपके काम में कोई बाधा न डालूँगा।"

"अगर तुम्हें मेरे साथ ज़रा भी प्रेम है।" सैनिन ने कहा—"तो तुम फ़ौरन् या तो घर चले जाओ, या हर क्लुबर की दुकान पर जाकर काम सीखो। तुम किसी से कोई बात न कहना, और मेरे वापस आने का इन्तज़ार करना!"

"आपके वापस आने का इन्तज़ार!" एमिल ने दबे गले से

शोकपूर्ण स्वर में कहा—"और अगर आप···"

"एमिल !" सैनिन ने टोका और कोचवान की ओर इशारा करते हुए कहा—"अपने ऊपर काबू रखो ! घर जाओ, मेरी बात मानो ! तुम कहते हो, तुम मुझे प्रेम करते हो। मैं तुम से प्रार्थना करता हूँ कि चले जाओ ।" उसने एमिल का हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया। एमिल आगे झुका और रुलाई रोकते हुए सैनिन का हाथ अपने होठों से लगाकर चुपचाप वहाँ से फ्रैंकफ़ोर्ट की ओर दौड़ा।

"अच्छा लड़का है।" पैंतलिवन ने कहा, पर सैनिन ने उसकी ओर घूरकर देखा····· बुड्ढा गाड़ी के कोने में चिपक गया। उसे अपनी ग़लती महसूस हो गई और वैसे भी क्षण-क्षण पर उसकी तबीयत गिरती जा रही थी। क्या यही वह मध्यस्थ है, जिसने द्वन्द्व-युद्ध का सारा प्रबन्ध किया है, और प्रातःकाल छः बजे ही अपना शान्तिपूर्ण घर छोड़कर दौड़ता फिरा है ? उसके पैरों में इस समय दर्द हो रहा था।

सैनिन उसे प्रसन्न करने का उपाय सोचने लगा, और उसने बुड्ढे की ठीक नस पा ली।

"आपका पहला जोश कहाँ गया महाशय सिपातोला ? कहाँ गई वह वीरता ?" सैनिन ने पूछा ।

बुड्ढा स्थिर होकर बैठ गया और भौं सिकोड़कर बोला—"वीरता अब भी मेरे अन्दर वैसी-ही है !"

वह अकड़कर बैठ गया और लगा जोश में आकर अपनी जवानी के क़िस्से सुनाने। हनाऊ पहुँचते-पहुँचते वह फूलकर कुप्पा हो गया और उसकी सारी उदासीनता काफ़ूर हो गई।

सच पूछो तो संसार में शब्दों से दृढ़ और निर्बल कोई चीज़ नहीं है।

२२

द्वन्द्व-युद्ध का स्थान हनाऊ से पाव मील की दूरी पर था। पैंतलिवन के कथनानुसार वे दोनों मैदान में पहले ही पहुँचे। उन्होंने गाड़ी बाहर जंगल के किनारे खड़ी रखने की आज्ञा दे दी। फिर दोनों पेड़ की छाया में बैठ गये। घण्टे भर उन्हें वहाँ प्रतीक्षा करनी पड़ी।

आखिर उन्हें गाड़ी के पहियों की खड़खड़ाहट सुनाई पड़ी। "वे लोग आ गये!" पैंतलिवन ने सतर्कतापूर्वक कहा। क्षण-भर के लिए उसके मन में घबराहट-सी हुई; फिर अपने मनोभाव छिपाने के लिए उसने कहा—"समय बड़ा सुहावना है।" यद्यपि उस समय धूप काफ़ी तेज़ हो चुकी थी, पर घास पर पड़ी ओस अभी तक नहीं सूख पाई थी।

झाड़ी के ओट से दोनों अफ़सर आते दिखाई दिये। उनके साथ एक ठिगने क़द का आदमी और था, जिसके चेहरे से मालूम होता था कि वह अभी सोकर उठा है। वह फ़ौजी डॉक्टर था। उसके एक हाथ में पानी का बर्तन था और कन्धे पर लटकने हुये चमड़े के बैग में चीर-फाड़ के अस्त्र थे। देखने से मालूम होता था कि इस प्रकार की क्रियाओं का वह चिर-अभ्यस्त है। इस प्रकार के द्वन्द्व-युद्ध में सेवा के लिए सदा तैयार रहता था क्योंकि यह उसकी आमदनी का बहुत बड़ा ज़रिया था। हर द्वन्द्व-युद्ध में उसे आठ सुनहले सिक्कों की प्राप्ति होती थी। रिचर के पास पिस्तौलों के म्यान थे और डनहॉफ़ के हाथ में एक पतली-सी बेत थी, जिसे घुमाते हुये वह मन-ही-मन कुछ सोचता आ रहा था।

"पैंतलिवन!" सैनिन ने बुड्ढे से धीमी आवाज़ में कहा—"अगर......अगर मैं मारा जाऊँ—या कुछ हो जाय; तो मेरी जेब में

पड़ा हुआ काग़ज़—जिसमें एक फूल बँधा हुआ है—निकालकर जेमा को दे देना। सुन रहे हो ? प्रतिज्ञा करो कि मेरा यह काम पूरा कर दोगे ?"

बुड्ढे ने उदास होकर सैनिन की ओर देखा और उसके प्रश्न पर स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया।···पर ईश्वर जाने, उसने सैनिन की बात भी समझी या नहीं।

दोनों प्रतिद्वन्दियों और मध्यस्थों ने रस्म के अनुसार एक-दूसरे को सलाम किया। सिर्फ़ डॉक्टर ही ऐसा था जो चुप रहा और बिल्कुल नहीं हिला। वह जँभाई लेता हुआ यह सोचकर घास पर बैठ गया कि मुझे वीरोचित नम्रताप्रदर्शन से क्या मतलब ? रिचर ने सिपादोला (डॉक्टर) से जगह तजवीज़ करने का प्रस्ताव किया। सिपातोला ने कठिनाई से अपना मुँह खोला—"सुनिए!" उसने थकी हुई आवाज़ में कहा—"मैं देख लूँगा, आप बेधड़क रहिए···!

रिचर फ़ौरन् उधर बढ़ा और ज़मीन के उस चौरस खण्ड पर से कूड़ा आदि हटाकर उसने उसे साफ़ कर दिया। नापने के बाद उसने दो जगह निशान बना दिए और वहाँ एक-एक मेख गाढ़कर दोनों पिस्तौलों में गोलियाँ भरीं। इस समय वह पसीने से तर हो रहा था। पैंतलिवन, जो उक्त कामों में उसके साथ था, शून्यवत् हो रहा था। इन तैयारियों के समय दोनों प्रतिद्वन्दी एक-दूसरे से थोड़े फ़ासले पर खड़े-खड़े उन स्कूल के लड़कों की तरह एक-दूसरे की ओर देख रहे थे, जिन्हें उनका मास्टर एक साथ सज़ा देता है।

अन्त में वह समय आ गया जब दोनों प्रतिद्वन्दियों के भाग्य का फ़ैसला होना था······दोनों ने अपने-अपने पिस्तौल सँभाले···!

किन्तु इस अवसर पर रिचर ने पैंतलिवन से कहा कि वह चूँकि प्रधान मध्यस्थ है, इसलिए उसका कर्त्तव्य है कि वह द्वन्द्व-युद्ध के नियमानुसार युद्ध के पहले प्रतिद्वन्दियों को पारस्परिक रक्त-पान का विचार त्यागकर सन्धि करने का उपदेश दे। पैंतलिवन इस समय

वृक्षों को आड़ में छिपकर इस भयानक आक्रमण के दृश्य से अपनी नज़रों को बचाने की चेष्टा कर रहा था। उसने आरम्भ में रिचर की बात का मतलब भी नहीं समझा, क्योंकि रिचर के बोलने का ढँग और उसका स्वर अस्पष्ट था, पर सहसा वह आगे बढ़ा और अपनी छाती पर घूँसा जमाकर असंयत भाषा में सुलह के लिए अपील करने लगा।

"मैं सन्धि करना नहीं मंज़ूर करूँगा!" सैनिन ने शीघ्रतापूर्वक टोका।

"और मैं भी सुलह न करूँगा!" विरोधी ने उसके बाद कहा।

"अच्छा तो अब एक, दो, तीन बोलिए।" रिचर ने व्याकुल पैंतलिवन को सम्बोधन करके कहा।

पैंतलिवन फ़ौरन वृक्ष की आड़ में खड़ा हो गया और वहीं से अपने पूरे ज़ोर से चिल्लाकर बोलने लगा—'एक······दो···तीन''

पहला फ़ायर सैनिन का था, जो खाली गया। उसकी गोली एक पेड़ में जा लगी। डनहॉफ़ ने फ़ौरन ही दूसरी गोली चलाई—पर उसने जान-बूझकर निशाना हवा में लगाया, जिससे गोली दूसरी दिशा में चली गई।

कुछ देर के लिए सम्पूर्ण शान्ति छा गई······दोनों मूर्तिवत् खड़े रहे। पैंतलिवन ने लम्बी आह भरी।

"क्या आप युद्ध जारी रखना चाहते हैं?" डनहॉफ़ ने पूछा।

"आपने हवा में गोली क्यों चलाई?" सैनिन ने पूछा।

"आपको इससे मतलब?"

"तो क्या दोबारा भी आप हवा में ही निशाना लगाएँगे?" सैनिन ने फिर पूछा।

"सम्भव है—मुझे मालूम नहीं।"

"माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए—आप लोग महाशय······!" रिचर ने कहा—"प्रतिद्वन्दियों को परस्पर बात करने का अधिकार

नहीं है। यह नियम-विरुद्ध बात है।"

"मैं नहीं दागूँगा।" कहकर सैनिन ने पिस्तौल ज़मीन पर फेंक दिया।

"मैं भी लड़ाई जारी नहीं रखना चाहता।" डनहॉफ़ ने चिल्लाकर कहा और पिस्तौल दूर फेंक दिया—"मैं यह भी मंजूर करने के लिये तैयार हूँ कि परसों की घटना मेरी ही गलती के कारण हुई थी।"

उसने बेचैनी और हिचकिचाहट के साथ अपने हाथ फैला दिए और सैनिन ने आगे बढ़कर उससे हाथ मिलाया। दोनों युवक एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कराए। दोनों के चेहरों पर लज्जा के भाव छा गए थे।

"शाबाश! शाबाश!!" सहसा पैंतलिवन पागलों की भाँति चिल्लाकर पेड़ की आड़ से दौड़ा और डॉक्टर भी अपनी जगह से उठकर सुराही का पानी गिराकर आगे बढ़ा।

"प्रतिष्ठा रह गई—द्वन्द्व-युद्ध समाप्त हुआ।" रिचर ने घोषणा की।

"शाबाश!" पैंतलिवन एक बार फिर गला फाड़कर चिल्ला उठा।

जब सैनिन अफ़सरों से हाथ मिलाने और विदा लेने के बाद गाड़ी में बैठा तो उसका हृदय प्रसन्न नहीं तो हल्का अवश्य हो गया—जैसे ऑपरेशन (चीर-फाड़) के बाद रोगी के हृदय से एक बोझ-सा टल जाता है।

दो घंटे पहले सड़क के पास जिस जगह उन्हें एमिल मिला था, उसी जगह वह पेड़ की आड़ से निकलता हुआ दिखलाई दिया। वह खुशी से चिल्लाकर टोपी हिलाता हुआ गाड़ी की ओर दौड़ा और गाड़ी ठहर भी नहीं पाई थी कि कूदकर उस पर चढ़ गया और सैनिन के गले से लिपट गया।

"आप जीवित हैं; ज़ख्मी भी नहीं हुए!" उसने अपूर्व प्रसन्नता से

चिल्लाते हुए कहा—"मुझे माफ़ कीजिएगा; मैंने आप की आज्ञा नहीं मानी......मैं फ्रैंकफ़ोर्ट वापस नहीं गया......जा ही नहीं सका! यहीं बैठा-बैठा आपका इन्तज़ार कर रहा था..... बतलाइए क्या हुआ? ......आपने उसे मार दिया?"

सैनिन ने कठिनाई के साथ एमिल को शान्त करके गाड़ी में बैठा लिया।

शब्द-बाहुल्य, अतिरंजन और आनन्द से भरी हुई भाषा में पैंतलिवन ने एमिल को द्वन्द्व-युद्ध का सारा विवरण कह सुनाया, और अन्त में सैनिन को 'महावीर' उपाधि देने की बात बताई। एमिल आश्चर्यपूर्वक पैंतलिवन की बात सुनता रहा। बीच-बीच में सैनिन की शूरता की प्रशंसा सुनकर वह अपने इस वीर मित्र को चूम लेता था।

गाड़ी फ्रैंकफ़ोर्ट शहर में घुसी और आख़िर उस होटल के सामने जा लगी, जिसमें सैनिन रहता था।

दोनों साथियों के साथ वह जीने पर चढ़ने लगा। सहसा दहलीज़ से एक स्त्री उसकी ओर दौड़ कर आती दिखाई पड़ी, जिसका चेहरा नक़ाब से ढका हुआ था। सैनिन के सामने आकर वह काँप उठी और उसके मुँह से एक आह निकल गई। इसके बाद वह तुरन्त दौड़ कर जीने से नीचे उतरी और सड़क पर जाकर ग़ायब हो गई। होटल के नौकर ने आश्चर्यपूर्वक यह हाल बतलाया कि यह स्त्री एक घंटे से इन विदेशी महाशय की प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी क्षणिक छाया को ही देख कर सैनिन पहचान गया था कि वह जेमा है! उसने नक़ाब के अन्दर से चमकती हुई जेमा की विशाल आँखें पहचान ली थीं।

"तो क्या फ्रॉलिन जेमा को मालूम हो गया था?"...... सैनिन ने एमिल और पैंतलिवन को सम्बोधन करके विक्षुब्ध-भाव से जर्मन-भाषा में पूछा।

एमिल का चेहरा लज्जा और घबराहट से लाल हो गया।

"मुझे मजबूरन् उसे बतलाना पड़ा," एमिल ने लड़खड़ाती ज़बान से कहा—'वह ख़ुद समझ गई थी, मैं क्या करता,......पर अब इससे क्या," वह उत्सुकतापूर्वक सैनिन की ओर देखकर फिर कहने लगा—"काम तो ठीक तौर से निबट गया है—उसने आप को राज़ी-ख़ुशी देख लिया है!"

सैनिन ने मुँह फेर लिया।

"कैसे आदमी हो तुम दोनों।" उसने क्रोधपूर्वक कहा, और कमरे में कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

"कृपया क्रोध न कीजिए!" एमिल ने विनयपूर्वक कहा।

"अच्छा, क्रोध न करूँगा, (सैनिन सचमुच क्रुद्ध नहीं था—क्योंकि आख़िर उसकी इच्छा यह नहीं थी कि जेमा द्वन्द्व-युद्ध के बारे में कुछ न जान सके) अच्छी बात है,......मिल-जुल चुके, अब जाओ। मैं अब एकान्त चाहता हूँ। मुझे नींद आ रही है—बहुत थक गया हूँ।"

"बड़ी अच्छी बात है," पैंतलिवन ने कहा—"अब आप आराम कीजिये! बहुत श्रम कर चुके हैं! एमिलियो! अब यहाँ से चुपचाप चलो!"

सैनिन ने जिस समय सोने का बहाना करके दोनों को टरकाया उस समय उसे वास्तव में नींद नहीं आ रही थी किन्तु उनके चले जाने के बाद अकेले में उसे सचमुच थकावट-सी मालूम होने लगी, क्योंकि गत रात को उसे क्षण-भर के लिए भी नींद नहीं आई थी। बिछौने पर पड़ते ही उसे गहरी नींद आ गई।

२३

कई घण्टे तक वह अचेत सोता रहा। फिर उसे स्वप्न आया, मानो वह फिर द्वन्द्व-युद्ध कर रहा है, और इस बार उसका प्रतिद्वन्दी

"आज जो कुछ हुआ है, और उसका कारण भी······सब जानती हूँ! आपने एक प्रतिष्ठित सज्जन का काम किया, पर परिस्थिति कैसी भयावह हो उठी! मैंने सूदान की सैर के लिए जाने की मनाही कर दी थी। मैंने बिल्कुल ठीक काम किया था······बिल्कुल ठीक! (बात झूठ थी—फ्रॉ लीनोर ने किसी को जाने से मना नहीं किया था, पर इस समय वह अपने को भविष्य-दर्शी होने का दावा कर रही थी) मैं आपके पास आपकी सज्जनता और मित्रता के नाते आई हूँ, यद्यपि मेरी आपकी पाँच दिनों की ही मुलाक़ात है······पर आप जानते हैं, मैं एक विधवा हूँ, अकेली हूँ,······मेरा लड़की·······"

आँसुओं के मारे लीनोर का गला रूँध गया। सैनिन बड़ी द्विविधा में पड़ गया कि अब वह क्या करे। "आपकी लड़की?" उसने प्रश्न किया।

"हाँ, मेरा लड़की जेमा," फ्रॉ लीनोर ने भर्राई हुई आवाज से कहा—"जेमा ने आज मुझे बताया कि वह क्लुबर के साथ शादी न करेगी और मुझे क्लुबर से इन्कार कर देना चाहिए।"

सैनिन पीछे की ओर उझक उठा। उसे ऐसी आशा नहीं थी।

"मैं और कुछ न कहूँगी," फ्रॉ लीनोर ने कहा—"इससे मेरी कैसी बदनामी होगी। जिसके साथ सगाई हो चुकी है, उसे इन्कार करना! दुनियाँ में भला किसी ने ऐसी बात सुनी होगी! इससे तो मेरा सर्वनाश हो जायगा मि० मित्री।" लीनोर ने अपने आँसुओं से भीगे हुए रूमाल को लपेटकर एक गोली-सी बना ली। फिर उसने यह कहना शुरू किया—"इस दूकान से हमारी गुज़र-बसर नहीं हो सकती मि० मित्री! क्लुबर एक धनाढ्य युवक है और अभी और भी धन कमायेगा। भला ऐसे वर को कभी अस्वीकार किया जा सकता है? सो भी सिर्फ़ इसीलिए कि उसने जेमा के लिए अफ़सरों से झगड़ा नहीं किया? माना कि क्लुबर के हक़ में यह बात अच्छी नहीं थी, फिर भी वह पढ़ा-लिखा तो है ही। हाँ, विश्व-

विद्यालयों की डिग्रियाँ उसके पास नहीं हैं। एक व्यापारी की तरह उसे उस अज्ञात अफ़सर की ओछी दिल्लगी को घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए था। और आखिर उसने अप्रतिष्ठा किस तरह की की थी मि० मित्री ?"

"माफ़ कीजिए फ्रॉ लीनोर, आप तो मुझ पर कलङ्क लगा रही हैं।"

"नहीं, मैं आप पर बिलकुल कलङ्क नही लगा रही हूँ—बिल-कुल नहीं ! आप तो और ढ़ंग के आदमी हैं, एक रूसी की तरह आप सैनिक स्वभाव के हैं···।"

"मुझे माफ़ कीजिए, मैं बिल्कुल नहीं······"

"आप विदेशी यात्री हैं, मैं आप की कृतज्ञ हूँ !" फ्रॉ लीनोर ने सैनिन की बात की ओर ध्यान न देते हुए कहा। फिर उसने ठंडी साँस ली, और अपना रूमाल खोलकर नाक साफ़ करने का बहाना किया। उसके चेहरे पर घबराहट के चिह्न स्पष्ट दीख रहे थे।

"और क्लुबर अगर अपने ग्राहकों से ही लड़ता फिरे, तो उसकी दुकान कैसे चल सकती है ? बिलकुल फ़िज़ूल-सी बात है ! और अगर मैं उसे निराश कर दूँ ? तो फिर हम लोगों की आजीविका किस तरह चलेगी। कोई समय था, जब तरह-तरह के बिस्कुट और मिष्ठान्न हमारी ही दुकान पर बना करते थे, उस समय ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी, पर अब तो सभी दुकानों में उस तरह के बिस्कुट और मिष्ठान्न बनने लगे हैं। ज़रा सोचिए तो सही—सारा शहर अब आपके द्वन्द्व-युद्ध के सम्बन्ध में बातें करेगा···अब यह बात छिप नहीं सकती। अकस्मात् शादी रुक गई ! बड़ी निन्दा होगी। जेमा लड़की बड़ी अच्छी है—मुझे बड़ा प्रेम करती है; पर कभी-कभी प्रजातन्त्रवादियों की तरह अड़ँगा लगा दिया करती है; लोग क्या कहेंगे, इसकी पर्वाह नहीं करती। आप ही उसे मना सकते हैं।"

"हाँ, आप-ही······केवल आप ही। इसीलिए तो मैं आपके

पास आई हूँ। मैं और कोई उपाय न सोच सकी । आप ऐसे चतुर और भले आदमी हैं। आपने उसकी प्रतिष्ठा के लिए लड़ाई लड़ी है। वह आप पर विश्वास करेगी । अवश्य ही वह आपका कहना मानेगी। आपने उसके लिए अपना जीवन खतरे में डाला ! अब आप ही उसे समझा सकते हैं—मैं और कुछ नहीं कर सकती। आप उसे यह समझा दीजिए कि क्लुबर से शादी करने के लिए अस्वीकार करके वह अपने घर-भर का सर्वनाश कर लेगी। आपने मेरे लड़के की जान बचाई—अब लड़की की जान बचाइए! ईश्वर ने ही आपको यहाँ भेजा है।····· मैं हाथ जोड़कर आपसे विनय करती हूँ···" यह कहकर फ्रॉ लीनोर कुर्सी पर ऐसे उठी, मानो वह सैनिन के पैरों पर गिर पड़ेगी। उसने उसे रोका। "फ्रॉ लीनोर ! आप कर क्या रही हैं ?"

"फ्रॉ लीनोर, ज़रा सोचिये तो सही, मुझे क्या अधिकार है कि······"

"आप प्रतिज्ञा कीजिये ? आप यहाँ मुझे अपनी आँखों के सामने ही मरी हुई तो नहीं देखना चाहते ?"

सैनिन किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया। यह पहला ही मौक़ा था जब सैनिन को एक ऐसे उग्र स्वभाव की इटैलियन स्त्री से पाला पड़ा।

"आप जो कहेंगी वही करूँगा," सैनिन ने कहा—"मैं फ्रॉलिन जेमा से बात करूँगा······"

फ्रॉ लीनोर प्रसन्नता से गद्गद हो गई।

"पर मैं यह नहीं कह सकता कि मेरी बात का परिणाम क्या होगा······" सैनिन ने बात का सिलसिला मिलाते हुए कहा।

"नहीं नहीं, अब अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध न जाइये !"

फ्रॉ लीनोर ने प्रार्थनापूर्ण स्वर में चिल्लाकर कहा—"आप स्वीकार कर चुके हैं ! परिणाम तो अच्छा होना ही है। कुछ भी हो, मैं और क्या कर सकती थी ! वह मेरी बात न सुनेगी।"

"क्या उसने निश्चयपूर्वक इन्कार कर दिया है कि वह क्लुबर महोदय से शादी नहीं करेगी ?" कुछ देर चुप रहने के बाद सैनिन ने पूछा।

"जान पड़ता है, वह क्षण-भर में सारे बन्धन काट डालेगी। अपने पिता गिवनी वैतिस्ता का-सा स्वभाव है उसका ! बड़ी हठीली है !"

"हठीली ? हठली है वह !"......सैनिन ने धीरे से कहा।

"हाँ......हठीली है, पर बड़ी सीधी भी है, आपका कहना नहीं टाल सकती। आप हमारे विदेशी मित्र हैं। आप जल्दी आयेंगे न ?" फ्रॉ लीनोर जल्दी से कुर्सी पर से उठी और उन्मत्त-सी होकर सैनिन का सिर अपनी छाती से लगाती हुई बोली—"एक माँ का आशीर्वाद ग्रहण कीजिये—थोड़ा पानी पिलाइये मुझे !"

सैनिन ने रोज़ेली महाशया को एक गिलास पानी पिलाया और शीघ्र ही उसके घर आने का वादा किया। सड़क तक उसे पहुँचा आने के बाद वह अपने कमरे में आकर आश्चर्य-पूर्ण कल्पना में ग़ोते लगाने लागा।

"ओह !" उसने सोचा—"जीवन-तरी अब मुझे किस भँवर में लिए जा रही है। इस भँवर में पड़कर मेरा सिर चक्कर खा रहा है।" उसने अपने अन्तर्तम में प्रवेश करके नहीं देखा कि वहाँ क्या हो रहा है। कैसा दिन आ गया ! वह एक अज्ञात-भाव से धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगा—"हठीली......उसकी माँ कहती है...और मुझे उसको समझाना पड़ेगा......क्या समझाना पड़ेगा ?"

सैनिन का सिर सचमुच चक्कर खा रहा था। वे सारी सनसनीपूर्ण बातें और तज्जन्य असमाप्त विचारधारा तथा जेमा की सुन्दर प्रतिमूर्ति ने मिलकर उसकी स्मृति पर गहरा असर डाला !

२४

हिचकिचाते दमों से सैनिन रोज़ेली के घर पहुँचा। उसका हृदय जोर से धड़क रहा था। वह स्वयं अपने हृदय की असाधारण धड़कन सुन रहा था। जेमा से वह क्या कहे ? किस प्रकार कहना शुरू करे ? वह दूकान के रास्ते घर न जाकर पीछे के दरवाज़े से घुसा। घुसते ही उसे फ्रॉ लीनोर मिल गई। सैनिन को देखकर उसे हर्ष और विषाद दोनों हुए।

"मैं आपकी बाट देख रही थी," उसने धीरे से फुसफुसाकर सैनिन का हाथ पकड़ते हुए कहा—"बाग़ीचे में जाइए, वह वहीं है। देखिए, मैं आप पर विश्वास करती हूँ।"

सैनिन बाग़ीचे में गया।

जेमा बाग़ीचे में रखी हुई एक बेंच पर बैठी हुई डलिया में से मकोये-फल छाँट-छाँटकर तश्तरी में रख रही थी। सूर्यास्त हो रहा था। बैजनी, मिश्रित सुनहली आभा से सारा बाग़ीचा जगमगा रहा था। भँवरों और पुष्प-समूह पर उड़उड़कर मधु मक्खियों की भनभनाहट और पिंडुकियों की एक-रस बोली ने बाग़ीचे में एक मधुर गुंजार पैदा कर दिया था। जेमा वही हैट लगाये बैठी थी जिसे लगाकर वह सूदान गई थी। उसने टोपी के झुके हुये किनारे से आँख उठाकर सैनिन की ओर देखा और फिर डलिया की ओर झुकी।

सैनिन चुपचाप अज्ञात भाव से छोटे-छोटे क़दम रखते हुए जेमा के पास पहुँचा···और···और उसे सिवा इसके कि फलों के छाँटने का कारण पूछे, बोलने का और कोई बहाना न मिल सका।

जेमा ने शीघ्रता से जवाब नहीं दिया।

"पके हुए अलग छाँट रही हूँ," आखिर वह बोली—"इनका

अचार पड़ेगा और इधर वालों के समोसे बनेंगे।' आपने हमारी दुकान पर इनके अचार बिकते देखे होंगे।"

उपरोक्त बातें कहते हुए जेमा ने अपना सिर और नीचे झुका लिया और उसका दाहिना हाथ मकोय फल हाथ में लिए रुका रहा।

क्या मैं आपके पास बैठ सकता हूँ ?" सैनिन ने पूछा।

"हाँ।" कहकर जेमा ने खिसककर अपने पास बैठने के लिए जगह खाली कर दी।

सैनिन बेंच पर बैठकर सोचने लगा कि बात कैसे शुरू करें, किन्तु जेमा ने खुद बोलकर उसकी कठिनाई हल कर दी।

"आज आप द्वन्द्व-युद्ध कर चुके हैं।" उसने अपना सुन्दर और लजीला मुख सैनिन की ओर करके कहा। उसकी आँखों में कृतज्ञता की गह्वरता चमक रही थी। "फिर भी आप ऐसे शान्त क्यों हैं। मैं अब तो आपके लिए कोई खतरे की बात नहीं देखती।"

"मेरे लिए पहले भी कोई खतरे की बात नहीं थी। सभी काम बिना झगड़े के सन्तोषजनक रीति से हो गए।"

जेमा ने अपनी तर्जनी हिलाकर इटैलियन ढँग से इशारा करते हुए कहा—"नहीं, नहीं ! ऐसा न कहिए। आप मुझे धोखा नहीं दे सकते ! पैंतलिवन ने मुझे सब बातें बता दी हैं !"

"वह विश्वसनीय गवाह है। उसने मेरी उपमा ऐतिहासिक महावीरों से भी दी होगी ?"

"उसके कहने का ढँग हास्यास्पद हो सकता है, पर उसकी भावना या आज की आपकी वीरता हास्यास्पद नहीं हो सकती। मेरे लिए आपने जो कुछ······उसे मैं कभी नहीं भूल सकती।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ फ्रॉलिन जेमा······"

"मैं कभी नहीं भूल सकती।" जेमा ने फिर कहा और उत्सुकता से उसकी ओर देखकर मुँह फेर लिया।

इस समय सैनिन ने जेमा का सुन्दर सस्मित बदन देखा और

उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो अपने जीवन-भर में उसने ऐसी चीज़ नहीं देखी थी। उस क्षण उसके हृदय में उस सौन्दर्य की कोई उपमा नहीं मिल रही थी। वह मन-ही-मन आत्म-दग्ध हो रहा था।

"और मेरी प्रतिज्ञा !" उसने मन-ही-मन सोचा।

"फ्रॉलिन जेमा······" कुछ देर की हिचकिचाहट के बाद उसने कहना शुरू किया।

"क्या ?"

जेमा ने अपना मुँह दूसरी ही तरफ़ फेर-फेरे फल छाँटते हुए पूछा। पर उस एक 'क्या' शब्द में बड़ा ही अद्भुत प्यार भरा हुआ था।

"क्या आपकी माँ ने······के सम्बन्ध में आप से कुछ कहा है ?"

"किसके सम्बन्ध में ?"

"मेरे सम्बन्ध में ?"

जेमा ने सहसा हाथ में लिये हुए मकोय-फल डलिया में डाल दिये।

"क्या माँ ने आपसे बातें की हैं ?" जेमा ने पूछा।

"हाँ।"

"क्या कहा है उसने आपसे ?"

"उन्होंने कहा है कि आप······आपने हठात् अपना···पहला इरादा बदल दिया है।"

जेमा का सिर फिर झुक गया। वह अपनी टोपी के अन्दर छिपी-सी जा रही थी।

"कैसा इरादा ?"

"आपका······भावी-जीवन-सम्बन्धी इरादा।"

"इसका मतलब···? आप क्लुबर के सन्बन्ध में कह रहे हैं ?"

"हाँ।"

"माँ ने आपसे कहा है कि मैं क्लुबर की स्त्री बनना न पसन्द

करूँगी ''

"हाँ।"

जेमा आगे की ओर झुकी और डाली नीचे गिर पड़ी ...... कुछ मकोय-फल गिरकर रास्ते में बिखर गये। कुछ देर दोनों शान्त रहे।

"उसने आपसे ऐसा कहा क्यों ?"

सैनिन ने जमा का यह प्रश्न सुना। जेमा की छाती अब ज़ोर से धड़कने लगी।

"कहा क्यों ? आपकी माँ ने समझा कि चूँकि थोड़े ही समय में मेरी आपके साथ एक तरह की मित्रता हो गई है, और आप मुझ पर कुछ विश्वास रखती हैं, इसलिये मैं आपको समझा सकता हूँ, और आप मेरा कहना मान लेंगी।"

जेमा के हाथ धीरे-धीरे उसके घुटनों पर पहुँच गये। वह अपने कपड़े धीरे-धीरे नाखून से नोचने लगी।

"आप मुझे क्या उपदेश देंगे मि० मित्री ?" कुछ देर बाद उसने पूछा।

सैनिन ने देखा कि जेमा की उँगलियाँ उसके घुटनों पर पड़ी काँप रही हैं ...वह उनका हिलना छिपाने के लिये कपड़े को नोच रही थी। सैनिन ने धीरे से अपना हाथ उन काँपती हुई उँगलियों पर रख दिया।

"जेमा !" उसने कहा—"आप मेरी ओर क्यों नहीं देखतीं ?" जेमा ने फ़ौरन् अपनी टोपी सरकाकर पहले की भाँति कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से सैनिन की ओर देखा। वह चाहती थी कि सैनिन कुछ... कहे। जेमा की मनोहर आकृति ने सैनिन को मंत्र-मुग्ध कर दिया। अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरणों और सान्ध्य-समीर ने जेमा के सौन्दर्य में अद्भुत अभिवृद्धि कर दी थी।

"आप जो कुछ कहेंगे, मैं ध्यान से सुनूँगी मि० मित्री," जेमा

ने कुछ मुस्कराकर भवें चढ़ाते हुए कहा—"पर आप मुझे कैसा उपदेश देंगे ?"

"उपदेश ?" सैनिन ने कहा—"हाँ, यही कि आपकी माँ समझतीं हैं कि क्लुबर से शादी करने से इन्कार सिर्फ़ इसलिये नहीं कर देना चाहिये कि परसों उन्होंने कोई साहस नहीं दिखाया······"

"सिर्फ़ इसीलिये ?" जेमा ने कहा और झुककर डाली उठाकर बेंच पर रख ली।

"इस तरह······उन्हें बिल्कुल अस्वीकार कर देना आपके हक़ में······अनुचित होगा; यह एक ऐसा काम है, जिसका परिणाम भली भाँति सोच लेने की आवश्यकता है और यह बात समझ लेने की भी ज़रूरत है कि आपके हरएक मामले से आपके परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की भलाई-बुराई का सम्बन्ध है······"

"यह सब तो मेरी माँ की राय है," जेमा ने टोककर कहा—"ये सब उसी के शब्द हैं; पर आपकी क्या सम्मति है?"

"मेरी सम्मति ?" सैनिन कुछ देर तक चुप रहकर सोचता रहा। उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो उसके गले में कुछ अटक गया है और उसकी साँस रुकती जा रही है—"मैं भी समझता हूँ······" बड़ी कोशिश के साथ उसने इतना कहा।

जेमा चकित-सी होकर बोली—"आपकी भी यही राय है ?"

"हाँ······यही कि आप······"इसके आगे एक भी शब्द सैनिन के मुँह से नहीं निकल सका।

"बहुत अच्छा," जेमा ने कहा—"अगर आप एक मित्र की हैसियत से मुझे अपना निश्चय बदल डालने—अर्थात् अपने पूर्व विचार पर दृढ़ रहने का परामर्श देते हैं, तो मैं इस पर विचार करूँगी।" यह कहकर वह अज्ञात भाव से तश्तरी में रखे हुए पके मकोय-फल फिर डाली के अधपके फलों में मिलाने लग

गई ।······"माँ समझती है कि आप जो-कुछ कहेंगे, मैं उसे मान लूँगी, और······शायद मैं आपका कहना सचमुच मान भी लूँगी ।"

"पर मुझे माफ़ कीजिये फ्रॉलिन जेमा, मैं पहले यह जानना चाहता हूँ कि किन कारणों ने आपको······बाध्य किया ?"

"आप जो कुछ कह रहे हैं, मैं उसे मानूँगी," जेमा ने दाँतों से होंठ चबाते हुए उत्तेजित भाव से कहा—"आपने मेरे लिये इतना त्याग किया है, इसलिये आपकी इच्छानुसार कार्य करना मेरा कर्त्तव्य हो गया है। मैं माँ से कह दूँगी कि······मैं फिर सोचूँगी। अच्छा, वह माँ आ भी रही है।"

फ्रॉ लीनोर सचमुच घर से निकलकर बाग़ की ओर आ रही थी। वह बिल्कुल ही अधीर हो उठी थी; चुपचाप नहीं बैठ सकी। उसने मन-ही-मन अनुमान लगाया कि सैनिन को जो कुछ कहना था, वह तो थोड़ी देर में ही कहा जा सकता था। यद्यपि बातचीत में पाव घण्टे से अधिक समय नहीं लगा।

"नहीं, नहीं! ख़ुदा के लिये अभी उनसे कुछ न कहियेगा," सैनिन ने जल्दी से चौंककर कहा—"ज़रा ठहरिये······मैं आपको बताऊँगा······लिखूँगा······और तब तक कोई निश्चय न कीजिये ठहरिये!"

उसने जेमा का हाथ दबाया, और बेंच पर से उठकर जल्दी से टोपी ऊपर उठाई और कुछ अस्पष्ट रूप में कहने के बाद वह वहाँ से ग़ायब हो गया।

फ्रॉ लीनोर को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह अपनी लड़की के पास गई।

"जेमा! मुझे बतलाओ······"

जेमा सहसा उठी और उसने ज़ोर से अपनी माँ का आलिंगन किया। ······"प्यारी अम्माँ, क्या तुम मेरा निश्चय जानने के लिए ज़रा और नहीं ठहर सकतीं?······कल तक ही? कल तक एक शब्द

भी नहीं······।"

जेमा प्रसन्नता से गद्गद हो गई और उसकी आँखों में आँसू छा गये। फॉ लीनोर को इस से और भी आश्चर्य हुआ, क्योंकि जेमा के चेहरे से प्रसन्नता की अपेक्षा शोक के भाव अधिक टपक रहे थे।

"यह क्या ?" लीनोर ने पूछा—"तुम तो कभी रोती नहीं थीं······और आज यकायक···"

"कुछ नहीं अम्माँ, कोई फ़िक्र मत करो। थोड़ा इन्तज़ार और करो—कल तक मुझ से कुछ मत पूछो—आओ, सूर्यास्त के पहले ही यह फल छाँट लें।"

"पर तुम्हारा निश्चय उचित होगा न ?"

"हाँ, मैं उचित ही सोचूँगी," जेमा ने अर्थपूर्ण संकेत से सिर हिलाकर कहा। उसने अब फलों के गुच्छे बनाने शुरू कर दिये और उन्हें ऊपर उठा-उठाकर अपनी लज्जा छिपाने लगी। उसने अपने आँस पोंछने तक की पर्वाह नहीं की।

२५

सैनिन जल्दी-जल्दी चलकर अपने होटल के कमरे में पहुँचा। उसने सोचा कि एकान्त में ही बैठकर इस बात पर विचार किया जा सकता है कि अब परिस्थिति कैसी है और उसे क्या करना चाहिये। कमरे के अन्दर जाते ही वह दोनों कुहनियाँ मेज़ पर रखकर दोनों हाथों से मुँह ढककर कुछ सोचने लगा। फिर ज़ोर से बड़बड़ा उठा—"मैं उसे चाहता हूँ—दिल से प्रेम करता हूँ।" उसका हृदय चमक उठा—जैसे राख से ढकी हुई आग राख का पर्त हटा देने पर चमक उठती है। क्षण-भर बाद वह यह भी नहीं समझ सका कि वह अभी थोड़ी देर पहले जेमा के पास बैठकर··· उससे बातें करके आया है। उसने अन्य नवयुवकों की तरह उसके

नख-शिख और वस्त्रों तक की पूजा क्यों नहीं की—उसके चरणों पर मर मिटने की बात क्यों नहीं कहीं। पा बाग़ीचे की उस मुलाक़ात से सब निश्चय हो गया। अब जब उसने उसकी प्रतिमूर्ति अपनी आँखों के सामने देखी तो वह उन घुँघराले बालों वाली निशा-सुन्दरी के रूप में न होकर बाग़ीचे के बेंच पर बड़ी टोपी से सिर ढके हुए उसकी ओर आत्म-समर्पण के भाव से ताकने वाली अल्हड़ किशोरी जेमा थी······उसकी नस-नस में कँपकँपी फैल गई और प्रेम की एक प्रचण्ड भूख ने उसे विह्वल कर दिया। उसे उस फूल की याद आई जो तीन रोज़ से उसकी जेब में पड़ा हुआ था। उसने झट वह फूल निकाला और इस ज़ोर के साथ उसे होठों से लगा लिया कि उसके होठों में दर्द हो गया। अब उसने सोचना-विचारना बन्द कर दिया; भूत-कालीन चिन्ता से मुक्त होकर अब वह भविष्य की बात सोचने लगा। एकाकी कौमार्य-जीवन के सुनसान किनारे से आगे बढ़कर अब वह यौवन के उस सुखद, ओजपूर्ण और शक्तिशाली प्रवाह में पड़ गया है, जिसके सम्बन्ध में वह न तो कुछ जानता है, न जानना ही चाहता है कि वह उसे कहाँ ले जायगा और किस पहाड़ से टकरा देगा! वे धीमे बहनेवाले लोरी के गानों के प्रवाह, जो कुछ ही दिनों पहले उसके हृदय में शान्ति का स्रोत उमड़ा देते थे······आज शक्तिमान् और बेरोक हो गये हैं, और आगे को ही बढ़ते जा रहे हैं—वह भी उसी प्रवाह के साथ उड़ता चला जा रहा है।······

उसने काग़ज़ का एक टुकड़ा उठाया, और एक साँस में नीचे लिखा पत्र लिख डाला—

"प्रिय जेमा,—आप जानती हैं, मुझे आपको क्या परामर्श देना था, आपकी माँ की इच्छा क्या थी और उन्होंने मुझसे आपको क्या समझाने के लिए कहा था; किन्तु जो बात आप नहीं जानतीं और मैं आपको बताना चाहता हूँ वह यह है कि मैं आपको प्रेम करता

हूँ-और उस चाह से प्रेम करता हूँ जो प्रथम प्रेम में हुआ करती है। इस आसक्ति का उद्रेक मेरे हृदय में आकस्मिक रूप में और इस ज़ोर के साथ हुआ है कि मैं उसके व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं पाता ! जिस समय आपकी माँ मेरे पास आई थीं और उन्होंने मुझसे आपको समझाने के लिए कहा था, तब तक वह प्रेमाग्नि मेरे हृदय में भली भाँति प्रज्ज्वलित नहीं हुई थी, अन्यथा मैं एक ईमानदार आदमी की तरह उनकी प्रार्थना न स्वीकार कर लेता।......इस समय मैं एक ईमानदार आदमी की तरह यह बात क़बूल कर रहा हूँ। आपको समझ लेना चाहिए कि कैसे आदमी के साथ व्यवहार करना है—हमारे दोनों के बीच में कोई ग़लतफ़हमी नहीं रहनी चाहिए। आप जानती हैं कि मैं आपको कोई परामर्श नहीं दे सकता......मैं तो आपको प्रेम करता हूँ—प्रेम ! मेरे हृदय या मस्तिष्क में और कोई बात नहीं है !"

—डी० एम० सैनिन

सैनिन पत्र मोड़कर लिफ़ाफ़े में बन्द करने के बाद होटल के नौकर के हाथ भेजना चाहता था......"नहीं," उसने मन-ही-मन सोचा—"यह ठीक नहीं होगा......एमिल के हाथ भेजना अच्छा होगा। पर दूकान पर जाकर उसे खोजते फिरना भी उचित न होगा। फिर अँधेरा भी हो चुका है, शायद वह दुकान पर भी न हो।" इसी तरह सोचते-विचारते उसने अपनी टोपी सिर पर रखी और सड़क पर आ गया। वह चौराहे से मुड़कर थोड़ी दूर ही चला होगा कि अकस्मात् एमिल उसके सामने दिखाई पड़ा। उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। बग़ल में बस्ता दबाये और हाथ में काग़ज़ का पुलिन्दा लिए एमिल घर की ओर जा रहा था।

"कवियों का यह कथन ठीक है कि प्रत्येक प्रेमी भाग्य का एक पुतला होता है !" सैनिन ने मन-ही-मन सोचा, और फ़ौरन् एमिल को बुलाया। एमिल ने पीछे फिरकर देखा और सैनिन को पहचान-

कर उसकी ओर दौड़ पड़ा।

सैनिन ने पत्र एमिल को देकर संक्षेप में ही सारी कार्रवाई समझा दी कि उसे किस प्रकार और किसे देना है,……एमिल ने बात ध्यानपूर्वक सुनी।

"जिससे कोई और न देखे?" एमिल ने आवश्यक कार्य का महत्त्व समझने का भाव दर्शाते हुए पूछा—"इस का भीतरी मतलब हमीं लोग जानते हैं!"

"हाँ, दोस्त," सैनिन ने कुछ लज्जित-सा होकर एमिल के गाल पर एक हल्की-सी चपत लगाकर कहा—"और अगर कोई जवाब हो, तो वह भी लाओगे न? मैं अपने कमरे पर ही रहूँगा।"

"इसकी फ़िक्र न कीजिये!" एमिल ने प्रसन्नतापूर्वक कहा और सिर हिलाकर भाग गाया।

सैनिन अपने कमरे में वापस आया, और बिना रोशनी जलाये ही सोफ़े पर लेटकर प्रथम प्रेम की ऐसी मोदमयी धारा में ग़ोते लगाने लगा, जिसका यहाँ वर्णन करना भी अच्छा न होगा। जिसने उस प्रेम-पीड़ा के माधुर्य का अनुभव किया है, वही जान सकता है; जिसने अनुभव नहीं किया, उसे बतलाया-ही नहीं जा सकता।

दरवाज़ा खुला। एमिल ने प्रवेश किया।

"मैं ले आया," उसने धीरे से कहा—"यह है जवाब!"

एमिल ने एक मुड़ा हुआ काग़ज़ सैनिन की ओर बढ़ाया।

सैनिन सोफ़े से उठ बैठा और जल्दी से उसे एमिल के हाथ से ले लिया। उसके हृदय में उस समय प्रेम की ज्वाला धधक रही थी। अब वह हृदय की कोई बात गुप्त नहीं रखना चाहता था; न उसके व्यक्त करने के लिये उचित या अनुचित व्यवहार का ख़याल करता था—जेमा के सगे भाई एमिल के सामने भी उसका यही हाल था; पर यदि वह अपने-आप पर क़ाबू कर सकता होता, तो अधिक साव-धानी से काम लेता।

वह खिड़की के पास गया और कमरे के पासवाले सड़क के खम्भे से आती हुई रोशनी में नीचे लिखी पंक्तियाँ पढ़ीं:—

"मैं आप से प्रार्थना करती हूँ कि आप हमारे घर न आयें— कल दिन-भर इधर रुख भी न करें। मेरे लिए यह आवश्यक, अत्यावश्यक है, फिर सब निश्चय हो जायगा।" मैं जानती हूँ कि आप इन्कार नहीं कर सकते, क्योंकि······

"जेमा"

सैनिन ने यह पत्र दोबारा पढ़ा। उसकी हस्तलिपि उसे कैसी सुन्दर और मधुर जान पड़ती थी। क्षण-भर सोचने के बाद उसने एमिल की ओर देखा। एमिल दीवार के पास खड़ा-खड़ा नाखून से उसे खुरच रहा था। सैनिन ने उसे बुलाया।

ऐमिल फ़ौरन् सैनिन के पास दौड़ गया। "अच्छा, मुझे अब क्या करना होगा?" उसने उत्साहपूर्वक पूछा।

"सुनो तो, दोस्त······"

"मि० मित्री," एमिल ने शोकपूर्ण स्वर में टोककर कहा— "आप मुझे 'दोस्त' कहकर बनावटी ढँग से क्यों पुकारते हैं?"

सैनिन हँस पड़ा—"अच्छा, खैर! सुनो, प्यारे लड़के,— (एमिल ने इस सम्बोधन से कुछ प्रसन्नता प्रकट की)—सुनो; वहाँ, समझे, वहाँ तुम्हें यह कहना पड़ेगा कि जैसी उनकी इच्छा है, उसी के अनुसार मैं करूँगा—(एमिल गम्भीरतापूर्वक झुका)—और मेरे लिये······तुम कल क्या करोगे प्यारे लड़के?"

"मैं? मैं क्या करूँगा? आप मुझ से क्या कराना चाहते हैं?"

"अगर तुम आ सको, तो कल तड़के मेरे पास आ जाओ—हम लोग शहर के चारों ओर घूमने चलेंगे। शाम तक घूमेंगे······क्या तुम घूमना पसन्द करोगे?"

एमिल खुशी के मारे उछलकर बोला—"मैं कहता हूँ! मेरे लिए दुनिया में इससे प्यारा और कोई काम नहीं है! टहलने

जाना और आपके साथ—कैसे आनन्द की बात है। मैं जरूर आऊँगा !"

"और अगर घरवाले तुम्हें न आने दें ?"

"नहीं; वे लोग मना न करेंगे !"

"सुनो,······वहाँ यह न कहना कि मैंने तुम्हें दिन-भर के लिए बुलाया है।"

"मैं क्यों कहूँगा ? मैं चला आऊँगा, बस ! कौन-सी बड़ी बात है !"

एमिल सैनिन का चुम्बन लेकर वहाँ से चलता बना।

कुछ देर तक सैनिन कमरे में टहलता रहा। वह फिर उसी प्रथम-प्रेम-जन्य मृदुल भावनाओं में डुबकी लगाने लगा; जीवन के नूतन साज के हर्षोल्लास का अनुभव करने लगा। उसे इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसे दूसरे दिन एमिल को साथ ले जाने की बात सूझ गई, क्योंकि उस का रूप अपनी बहिन जेमा से बिल्कुल मिलता-जुलता है। 'उसे देखकर जेमा की स्मृति बनी रहेगी,' यही उसका विचार था।

सबसे अधिक उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक ही दिन में उसका हृदय इतना परिवर्तित कैसे हो गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके हृदय में जेमा के प्रति प्रेम-बीज अंकुरित हो गया है।

२६

दूसरे दिन आठ बजे एमिल अपने झबरे कुत्ते तारतालिया के गले में रस्सी बाँधे सैनिन के होटल में आ पहुँचा। अगर वह जर्मन माँ-बाप का पुत्र होता तो शायद इस रूप में न आ सकता। उसने घर पर झूठी बात बना दी कि वह सैनिन के साथ दोपहर तक के लिए घूमने जाएगा—इसके बाद दुकान पर काम सीखने चला जायगा।

सैनिन कपड़े पहनकर तैयार होने लगा, तो एंमिल हिचकिचाते हुए क्लुबर के प्रति जेमा की विरक्ति की बातें बताने लगा; पर सैनिन ने उसकी इन बातों के जवाब में गम्भीरता धारण कर ली, और एमिल जैसे इस बात को समझकर कि वह बात ऐसी नहीं है, जिस पर गम्भीरता और शुष्कता प्रदर्शित की जाए, उस विषय को बदल कर अन्य बातें करने लगा।

कॉफ़ी पीने के बाद दोनों मित्र एक साथ पैदल रवाना हुए। उन्होंने हॉसेन नामक गाँव की सैर करने की ठानी, जो फ्रैंकफोर्ट से थोड़ी दूर पर एक जंगल में बसा हुआ है। वहाँ से तानस की पर्वत-श्रेणियों का सुन्दर दृश्य स्पष्ट दीखता है। मौसम बड़ा सुहावना था; सूर्य की किरणें सुन्दर और प्रिय मालूम दे रही थीं—न अधिक गर्मी थी न अधिक सर्दी; ताज़ी हवा के सुखद झोंके हरी पत्तियों को स्पर्श करते हुए दोनों के मुख मण्डल को प्रफुल्लित कर रहे थे। जंगल में पहुँचकर दोनों देर तक इधर-उधर टहलते रहे। इसके बाद दोनों ने गाँव की सराय में जाकर दोपहर का खाना खाया। टीलों पर चढ़-चढ़कर उन्होंने उच्च पर्वत-श्रेणियों और हरित वन्य-दृश्यों को देखा और उनकी प्रशंसा की। टीलों पर से पत्थरों के टुकड़े नीचे लुढकाये और इसके बाद एक दूसरी दुकान पर शराब पी। फिर दौड़-धूप करने और कुद्दी कूदने का कौशल दिखाने लगे। उन्हें मालूम हुआ कि वहाँ एक ऊँचे पहाड़ी टीले के पास आवाज़ लगाने पर प्रतिध्वनि स्पष्टतः और पूर्णतः सुनाई पड़ती है। वे वहाँ गए और दोनों ने देर तक ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाने और गाने में बहुत समय बिताया। फिर दोनों कुश्ती लड़े, पेड़ पर चढ़े और फूल तोड़कर अपनी-अपनी टोपियाँ सजाई ! तारतालिया कुत्ते ने भी जहाँ तक उसका बस चला; इन खेलों में दोनों का साथ दिया—हाँ, वह बेचारा पत्थर लुढ़काने की क्रिया में भाग नहीं ले सका, पर प्रतिध्वनि सुनने के लिये चिल्लाने पुकारने और गाने पर

तारतालिया ने भी भौंकं-भौंक कर उनका समर्थन किया।

दोनों ने बहुत देर तक बातें भी कीं। रवाना होते ही सैनिन ने मनुष्य के भाग्य पर अपने विचार प्रकट करने आरम्भ किए, पर धीरे-धीरे बात का सिलसिला अपेक्षाकृत हल्के विषयों की ओर मुड़ा एमिल ने सैनिन से रूस के सम्बन्ध में प्रश्न किए—रूसी द्वन्द्व-युद्ध, वहाँ की स्त्रियों का सौंदर्य, रूसी-भाषा की बोध-गम्यता आदि उसके प्रश्न के विषय थे। एमिल ने यह भी पूछा कि जिस समय फ़ौजी अफ़सर से उसका द्वन्द्व हुआ और अफ़सर ने उस पर पिस्तौल का निशाना लगाया, तो उसके मन में क्या-क्या भाव आये। सैनिन ने एमिल से उसके पिता, माता और उसके घरेलू मामलों के सम्बंध में प्रश्न किये और जहाँ तक हो सका जेमा की चर्चा से बचता रहा; किन्तु सारे प्रश्नों का अभीष्ट केन्द्र वही थी। सच बात तो यह है कि वह कल के सम्बन्ध में अपनी कल्पना दौड़ा रहा था, जब उसके जीवन में एक नये और अज्ञात आनन्द की सृष्टि होगी! उसे ऐसा मालूम होता था कि उसके मानस-चक्षुओं के सामने एक अत्यन्त बारीक पर्दा टँगा हुआ है और उस पर्दे के पीछे······एक यौवन मदमाती स्पन्दनहीन मूर्ति खड़ी है। उस मूर्ति के होठों पर मुस्कराहट है और आँखों से किसी कारणवश कठोरता का आभास मिलता है, जो नीचे की ओर झुकी हुई हैं। यह मूर्ति जेमा की नहीं; स्वयं आनन्ददायिनी देवी की थी, क्योंकि उधर देखिए, आखिर पर्दा हट गया, होंठ खुल गये और आँखें ऊपर की ओर उठ आईं—ईश्वर ने उसकी सुन ली, और यकायक उसके हृदय में सूर्य के प्रकाश के समान एक अज्ञात प्रकाश छा गया और अनन्त आनन्द का स्रोत उमड़ पड़ा! वह कल की कल्पना का मधुर स्वप्न देखने लगा—और उसकी आत्मा बढ़ते हुए आनन्द की आशा से प्रकम्पित हो उठी।

शाम के वक्त जब दोनों फ्रैंकफ़ोर्ट पहुँचे तो काफ़ी देर हो चुकी थी। "वे लोग मुझे डाँटेंगे," एमिल ने सैनिन से बिदा होते हुये कहा—

क्या हर्ज है ? हमने दिन भर काफ़ी मज़े उड़ाये हैं !"

होटल के कमरे में पहुँचने पर सैनिन को जेमा की चिट्ठी मिली। उसने लिखा था कि दूसरे दिन प्रातःकाल सात बजे सैनिन उससे शहर के बाहर वाले सार्वजनिक बाग़ीचे में मिले।

सैनिन का दिल उछल पड़ा! किस आज्ञाकारिता के साथ उसने जेमा के आदेश का पालन किया है! और वह प्रतिज्ञा···वह अज्ञात, अद्भुत, असम्भव और द्विविधापूर्ण 'कल' अपने साथ क्या लायेगा!

उसने अपनी आँखें जेमा के पत्र पर गड़ा दीं। पत्र के अन्त में उसका हस्ताक्षर सैनिन के लिये अनेक कल्पनाओं का स्रोत बन गया। उसकी उँगलियाँ—जिनसे ये अक्षर लिखे गये हैं—कैसी सुन्दर हैं···· बाँहें कैसी कोमल उसने सोचा कि अभी तक वह उसकी बाँहे नहीं पकड़ सका है······"इटैलियन स्त्रियाँ," उसने मन ही मन विचार किया "लज्जाशील और कठोर होती हैं···और जेमा तो रानी··· देवी···और विशुद्ध कुमारी······"

"किन्तु समय आएगा; और अब वह बहुत दूर भी नहीं है··!" उस रात फ्रैंकफ़ोर्ट में एक परम भाग्यशाली आदमी के रूप में वह सो गया, पर कवि की इस उक्ति के अनुसार कि "मैं सोता हूँ···· पर मेरा सतर्क हृदय नहीं सोता" उसने मन-ही-मन अपने को सोया नहीं समझा होगा—उसका मन चञ्चल तितलियों की भाँति, जो वसन्तोद्यान में पंख हिला-हिलाकर एक फूल से दूसरे पर जा बैठती हैं, दौड़ रहा था।

२७

प्रातः पाँच बजे सैनिन उठा। छः बजे तक कपड़े आदि से लैस होकर उसने सार्वजनिक बाग़ीचे की राह ली। साढ़े छः बजे वह उस लता-कुञ्ज के पास टहलने लगा, जिसका ज़िक्र जेमा ने अपने पत्र में

किया था। मौसम बड़ा शान्त और निस्तब्ध था—आकाश पर बादल छा रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि शीघ्र ही भारी वृष्टि होने वाली है।

गिरजा घड़ी में सात बज गए। सैनिन चुपचाप खड़ा सुनता रहा। क्या यह सम्भव है कि वह न आए ? सहसा उसका सारा बदन काँप उठा। अकस्मात् पीछे से उसने किसी के पैर की आहट सुनी। मुड़कर देखा तो जेमा आ रही थी।

जेमा ने आज भूरे रंग की अँगिया पहन रखी थी और टोपी काले रंग की थी। उसने सैनिन की ओर देखने के बाद अपनी नज़र दूर हटा ली और सैनिन के पास रुके बिना आगे की ओर बढ़ती ही गई।

"जेमा!" सैनिन ने अस्पष्ट ढँग से बुलाया।

जेमा ने उसकी ओर देखकर ज़रा सिर झुका लिया और फिर भी आगे को ओर बढ़ती गई। सैनिन अब उसके पीछे पीछे हो लिया।

सैनिन ने टूटी हुई साँस ली। उसके पैर काँप रहे थे।

जेमा लता-कुञ्ज के पास से गुज़री और दाहिनी ओर मुड़कर एक छोटे फ़व्वारे के पास, जिसके जल में गौरैयाँ नहा रही थीं, एक बेंच पर बैठ गई। जगह एकान्त और एक कोने की थी, सैनिन उसके बग़ल बैठ गया।

कुछ देर तक दोनों मौन रहे। जेमा ने सैनिन की ओर देखा। सैनिन ने भी उसके चेहरे पर नज़र न डालकर उसके हाथों की ओर देखा, जिनमें उसने एक छोटी छतरी पकड़ रखी थी। उसे क्या बात करनी थी ?—किस विषय पर बात होनी थी ? उसके महत्त्व को कौन समझ सकता है ? उनका वहाँ, उस समय, इतने तड़के, एक साथ, एक-दूसरे से इतने निकट बैठना ही किसी गूढ़ महत्त्व का द्योतक था ?

"आप···मुझ से नाराज़ नहीं हैं न ?" आख़िर सैनिन ने साफ़-साफ़ कहा।

सैनिन के लिए इन मूर्खतापूर्ण शब्दों से अधिक खराब बात कहनी मुश्किल थी।···वह अपने आपे में नहीं था।···किन्तु किसी भी तरह सही, चुप्पी तो भंग हुई।

"नाराज़ ?" जेमा ने कहा—"किसलिए ? नहीं तो।"

"और आप मुझ पर विश्वास करती हैं ?" उसने फिर पूछा।

"आपकी लिखी हुई बातों के सम्बन्ध में ?"

"हाँ।"

जेमा का सिर नीचा हो गया। उसने कुछ भी नहीं कहा। छतरी उसके हाथ से छूट गई और ज़मीन पर गिरते-गिरते उसने उसे पकड़ लिया।

"मैंने जो कुछ आपको लिखा है, उस पर विश्वास कीजिए।" सैनिन ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा। इस समय उसका सारा भय सहसा लुप्त हो गया था और उसकी बात में उत्तेजना का अंश पाया जाता था—"अगर संसार में सत्य कोई चीज़ है—पवित्र और पूर्ण सत्य,—तो वह आप के प्रति मेरा प्रेम है—मैं आपको दिल से—पूर्ण आसक्ति के साथ—चाहता हूँ।"

जेमा ने सैनिन की ओर तिरछी नज़र से देखा और फिर उसके हाथ से छतरी गिर पड़ी।

"मुझ पर विश्वास लीजिए !" सैनिन ने दोहराया। उसने उससे प्रार्थना की, अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया; पर उसे छूने का साहस नहीं कर सका। घबराकर उसने पूछा—"आपको पूरा विश्वास दिलाने के लिए मैं क्या करूँ···?"

"मुझे यह बतलाइए मि० मित्री !" आखिर जेमा बोली—"परसों जब आप मेरे पास समझाने के लिए आए थे, तो मैं समझती हूँ, आपने मेरे बारे में अपने हृदय में प्रेम का अनुभव किया था या नहीं।"

"मैंने अनुभव तो किया था," सैनिन ने रुक-रुककर कहा—"पर

मैं उसे जान नहीं सकता था। मैंने जिस क्षण पहले-पहल आपको देखा था, तभी से मेरे हृदय में आपके प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया था; पर मुझे तत्काल यह बात स्पष्ट नहीं हुई कि आप मेरे लिए क्या हैं! इसके अतिरिक्त मैंने यह भी सुना कि आपकी सगाई बाक़ायदा हो चुकी है पर···जहाँ तक आपकी माँ के अनुरोध का सम्बन्ध था, मैं उसे कैसे अस्वीकार कर सकता था? दूसरी बात यह भी है कि मैंने अपनी समझ से उसका अनुरोध आप पर इस प्रकार प्रकट किया है, जिससे आपको मेरे···प्रेम का अनुमान लग सके।

सहसा पीछे की ओर उन्होंने एक मोटे-ताज़े युवक के पैरों की आहट सुनी, जिसके कन्धे पर एक झोला लटक रहा था। शक्ल-सूरत से विदेशी मालूम पड़ता था। उसने इन युवक-युवती को कुर्सी पर बैठे देखा और एक बार ज़ोर से खाँसकर वह आगे बढ़ गया।

"आपकी माँ ने," सैनिन ने उक्त आदमी के चले जाने पर कहा—"मुझसे कहा कि आपके सगाई तोड़ देने पर आफ़त आ जाएगी (जेमा ने इस बात पर भवें चढ़ा लीं) और मैं कुछ अंशों में इस अप्रिय प्रसंग का कारण हूँ।···फलतः मैं किसी हद तक आप से यह कहने के लिये बाध्य था कि आप अपने···क्लुबर महाशय से सगाई न तोड़ें।"

"मि० मित्री!" जेमा ने अपना हाथ अपने केश-पाश पर फेरते हुए सैनिन की ओर मुड़कर कहा—"कृपा करके क्लुबर का नाम मेरी सगाई के सम्बन्ध में न लीजिए। मैं उनके साथ हर्गिज़ शादी न करूँगी। मैंने उनसे नाता तोड़ लिया।"

"तोड़ लिया? कब?"

"कल।"

"आप उनसे मिली थीं?"

"हाँ, वह हमारे घर आए थे।"

"तब आप मुझे प्रेम करती हैं?'

जेमा ने उसकी ओर देखा।

"यदि प्रेम न करती, तो यहाँ क्यों आती ?" उसने धीरे से कहा और उसके दोनों हाथ नीचे गिर गए। सैनिन ने उन शिथिल हाथों को पकड़ लिया और उन्हें अपने होठों से लगा लिया......कल रात को जो स्वप्न उसने देखा था, उसका पर्दा अब हट गया! आनंद और उसकी ज्वलन्त मूर्ति अब प्रत्यक्ष हो गई।

उसने सिर उठाकर जेमा की ओर साहसपूर्वक देखा। जेमा ने भी उसकी तरफ ज़रा आँखें नीची करके ताका। उसकी आधी मुँदी हुई आँखों में आनन्दपूर्ण धुँधले आँसू दीख रहे थे। उसके चेहरे पर मुस्कराहट नहीं थी...नहीं। पर उसमें एक मौन हास्य छुपा था।

सैनिन ने उसे अपनी ओर खींचने की चेष्टा की, पर वह पीछे हट गई, और उसी मौन हास्य के साथ सिर हिला दिया—उसकी प्रसन्न आँखों से जैसे यह आवाज़ निकल रही थी—"ज़रा ठहरो।"

"जेमा।" सैनिन ने कहा—"मुझे स्वप्न में भी इस बात का ख़याल नहीं था कि आप मुझे प्रेम करेंगी।"

"मुझे भी ऐसी आशा नहीं थी।" जेमा ने कोमल स्वर में कहा।

"मैं कैसे सोच सकता था," सैनिन बोलता ही गया—"जब मैं फ्रैंकफ़ोर्ट आया, तो यहाँ कुछ ही घण्टे रहना चाहता था, मुझे अपने सारे जीवन के आनन्द का पूर्ण स्रोत यहीं मिलेगा, इसकी आशा कब थी!"

"सारे जीवन के आनन्द का ? सचमुच ?" जेमा ने प्रश्न किया।

"हाँ मेरे सम्पूर्ण जीवन का अटूट......" सैनिन ने ताज़े उत्साह के साथ कहा।

सहसा माली उस बेंच के बिलकुल पास आकर जमीन खुरचने लगा, जिस पर ये दोनों बैठे बात कर रहे थे।

"चलो, घर चलें," जेमा ने कहा—"दोनों साथ ही चलेंगे—चलेंगे न ?"

उस समय अगर जेमा सैनिन से कहती कि कुएँ में कूद पड़ो, तो शायद कहने के साथ-ही-साथ वह कूद पड़ता, फिर भला घर जाने से कैसे इन्कार कर सकता था।

दोनों बाग़ से बाहर निकले और घर की ओर रवाना हुए—पर शहर की सड़क के रास्ते नहीं, पगडण्डियों पर होकर।

२८

सैनिन कभी तो जेमा के बग़ल-बग़ल चलता था, कभी ज़रा उसके पीछे हो जाता था। वह एक क्षण भी जेमा की ओर से अपनी दृष्टि नहीं हटा सका और बराबर मुस्कराता रहा। जेमा कभी दौड़ती हुई नज़र आती थी, कभी धीमे-धीमे चलती दिखाई देती थी। सच बात तो यह है कि दोनों—सैनिन प्रसन्नता से, जेमा कल्पना-बाहुल्य से—जैसे स्वप्न-जगत् में विचरण कर रहे थे। कुछ ही देर पहले दोनों ने मिलकर क्या किया है—एक ने दूसरे को आत्म-समर्पण कर दिया—यह एक ऐसा नूतन, गहन और प्रभावपूर्ण कार्य था; उनके जीवन की प्रत्येक गति सहसा ऐसी परिवर्तित हो गई कि वे अपने-आपको सँभाल भी नहीं सके। उन्हें केवल इतना पता था कि वे एक ऐसे बवण्डर में पड़ गए हैं जो उन्हें उड़ाये लिए जा रहा है और जिसने दोनों को एक दूसरे की गोद में डाल दिया। सैनिन ने चलते-चलते यह सोचा कि वह जेमा को और ही दृष्टि से देखने लगा है, उसे उसकी चाल में एक अद्भुत मादकता, उसकी गति में एक विलक्षण सम्मोहन अनुभव हो रहा था—कैसा मधुर आकर्षण था वह ! जेमा से भी उसका यह दृष्टिकोण छुपा न रहा।

यह पहला ही अवसर था जब एक ने दूसरे को प्रेम-विमुग्ध दृष्टि से देखा और प्रथम प्रेम के समस्त वैचित्र्य उनके हृदयों में काम करने लगे। प्रथम प्रेम क्रान्ति के समान है; जीवन की सम-

ताएं और संयम उस समय क्षरण-भर में टूटकर छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, जब हृदय में उसका आन्दोलन प्रारम्भ होता है। उस समय नव-युवक जीवन-दुर्ग पर चढ़कर झण्डा लहराता है और भावी जीवन की प्रत्येक अवस्था—मृत्यु या नवजीवन—का उन्मत्त होकर स्वागत करता है।

"वह कौन है? बुड्ढा पैंतलिवन तो नहीं है?" सैनिन ने अपने दूसरी तरफ़ चुपचाप सारे बदन को कपड़े से ढके एक आदमी को इस तरह से जाते देखकर मानो वह अपने आपको दूसरों की निगाह से बचाना चाहता है, कहा। आनन्द की प्रचुरता की अवस्था में सैनिन जेमा से कुछ और बात करना चाहता था, किन्तु प्रेम-प्रसंग पर नहीं; अन्य विषयों पर, क्योंकि वह तो एक निश्चित और पवित्र वस्तु थी।

"हाँ, है तो पैंतलिवन ही," जेमा ने प्रसन्नतापूर्वक जवाब दिया —"सम्भवतः जब से मैं घर से निकली हूँ, तभी से वह मेरा पीछा कर रहा है; कल दिन-भर वह मेरी प्रत्येक गति ध्यान-पूर्वक देखता रहा···उसने अनुमान कर लिया है!"

"अच्छा? अनुमान कर लिया है!"

फिर उसने जेमा से कल की सारी घटनाओं का विवरण पूछा। जेमा ने शीघ्रता, घबराहट हँसी और हल्के निःश्वासों के साथ सैनिन से सारी बात बताई। उसने बतलाया कि परसों की बातचीत के बाद उसकी माँ ने कल उससे कोई निश्चित उत्तर प्राप्त करने की चेष्टा की; पर उसने चौबीस घण्टे के अन्दर अन्तिम जवाब देने का वादा किया। फिर किस प्रकार यकायक क्लुबर उसके घर आया और विदेशी अपरिचित—सैनिन—के लड़कपन—द्वन्द्व-युद्ध—को अपनी अप्रतिष्ठा का कारण बताकर सैनिन को घर में आने से मना कर देने की राय दी, क्योंकि उसकी समझ में कल ही यह बात सारे फ्रैंकफ़ोर्ट पर प्रकट हो जाएगी और सब यह कहकर उसकी बेइज़्ज़ती करेंगे कि इसकी भावी पत्नी के लिए एक विदेशी ने फ़ौजी अफ़सर

से युद्ध किया, और वह ऐसी बात कभी नहीं सुन सकता। "माँ ने उसकी बात मान भी ली,—सोचिए तो सही!"—जेमा ने कहा—"मैंने उससे कहा कि 'तुम अपनी इज्ज़त और मेरी बदनामी के लिए फ़ज़ूल ही चिन्ता कर रहे हो; मैं तुम्हारी भावी पत्नी नहीं हूँ और मैं तुमसे हर्गिज़ शादी नहीं करूँगी।' उससे इस प्रकार बात करने और···सम्बन्ध-विच्छेद करने के पहले मैं आपसे बात कर लेना चाहती थी और मैं अपने आप पर क़ाबू नहीं कर सकी। माँ आश्चर्य और दुःख से चिल्ला उठी; पर मैं दूसरे कमरे में चली गई और उस क्लुबर की अँगूठी लाकर मैंने वापस कर दी। उसे बड़ा क्रोध आया, पर चूँकि वह अपनी त्रुटियों को जानता है और अभिमानी है, इसलिए अधिक बातचीत किए बिना ही चला गया। माँ बहुत रोई-चिल्लाई और बेचैन हुई, मैंने भी अनुभव किया कि मैंने जल्दबाज़ी की; पर मुझे आपका पत्र मिल चुका था और इसके अतिरिक्त मैं जानती थी कि आप···"

"मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ।" सैनिन ने वाक्य पूरा किया।

"हाँ,···आप मुझे चाहते हैं।"

इस प्रकार जेमा हिचकिचाती, मुस्कराती, और किसी राही के पास आ जाने पर बीच-बीच में चुप हो-होकर आगे बढ़ती चली जाती थी। सैनिन उसकी बातें मन्त्र-मुग्धवत् सुनकर उसमें ख़ूब आनन्द ले रहा था।

"माँ बहुत व्याकुल है," जेमा ने फिर कहा—"वह इस बात को विचारती ही नहीं कि मैं क्लुबर को नापसन्द करती हूँ···और प्रेम-वश नहीं, केवल उसके अनुरोध और प्रार्थना से ही पहले सगाई स्वीकार कर ली थी···उसे आप पर सन्देह है; और सच बात तो यह है कि वह जानती है कि मैं आपको प्रेम करती हूँ। इस बात से उसे अधिक दुःख इसलिए हुआ कि अभी परसों ही उसने आपसे मुझे समझाने के लिए प्रार्थना की थी···आपसे एक अजीब अनुरोध

किया था ! अब वह आपको 'चालबाज़' और 'चालाक' कहती है—साथ ही यह भी कहती है कि आपने उसके प्रति विश्वासघात किया है, इसलिए समय आने पर मुझे भी धोखा देंगे···।"

"पर जेमा," सैनिन ने चिल्लाकर कहा—"क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि तुमने उनसे मेरे बारे में कुछ नहीं कहा ?···"

"मैंने कुछ नहीं कहा। बिना आपसे पूछे कुछ कहने का अधिकार ही क्या था ?"

सैनिन ने अपना हाथ उठाकर कहा—"जेमा, मुझे आशा है कि अब तुम उनसे सब बातें कह दोगी, और मुझे भी उनके पास ले चलोगी···मैं तुम्हारी माँ को विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि मैं धोखेबाज़ नहीं हूँ।"

सैनिन का हृदय सद्भाव और सदोत्साह से उछल रहा था।

जेमा ने उसकी ओर ध्यान से देखा—"आप सचमुच मेरे साथ माँ के पास चलना चाहते हैं ? माँ के पास, जो यह विचार रखती है कि···हम लोगों के बीच··· सम्बन्ध स्थापित होना असम्भव है ?" जेमा उक्त बात कहते सयय 'विवाह' शब्द अपने मुँह से नहीं निकाल सकी···सैनिन ने स्वयं उसका उच्चारण किया !

"तुम्हारा मतलब विवाह-सम्बन्ध से है ? जेमा, मैं इसे अपने जीवन का सर्वोत्तम फल समझूँगा !"

इस समय वह अपने प्रेम, गौरव और निश्चय की सीमा पर पहुँचा हुआ था।

जेमा ने ये शब्द सुने और क्षण-भर के लिए खड़ी हो गई—इसके बाद वह बड़े ज़ोर से आगे बढ़ी···अपने उस अप्रत्याशित और महान् आनन्द की सीमा से वह दूर भागती-सी नज़र आती थी ! पर चौराहे पर पहुँचकर ज्यों-ही वह दाहिनी ओर मुड़ी, त्यों-ही नई पोशाक में सुसज्जित क्लुबर सामने से आ निकला। उसने जेमा और सैनिन दोनों को देखा, और एक प्रकार के अन्दरूनी क्षोभ से पीछे

की ओर झुककर फिर आगे बढ़कर उनसे मिला। सैनिन को एक शूल-सा लगा, पर क्लुबर के चेहरे पर घृणापूर्ण आश्चर्य और धूर्तता के भाव देखकर उसे सहसा क्रोध आ गया और उसने क़दम आगे बढ़ाया।

जेमा ने सैनिन का हाथ पकड़ लिया और उसके बग़ल में खड़ी होकर क्लुबर की ओर देखा।···क्लुबर का चेहरा धँस-सा गया। वह कन्धा हिलाकर दूसरी ओर खिसक गया। जाते-जाते उसने धीमी आवाज़ में बड़बड़ाकर किसी गाने का एक पद सुनाया जिसका मतलब था—'संगीत का अन्त,' और जल्दी से दूसरी ओर को मुड़-कर चला गया।

"बदमाश यह क्या सुनाकर गया है?" सैनिन ने पूछा। उसकी मनोदशा उस समय ऐसी हो रही थी कि वह दौड़कर क्लुबर को जा पकड़ता; पर जेमा ने उसे रोक लिया और दोनों साथ-साथ चलने लगे। जेमा ने अपना हाथ सैनिन के बाहु से नहीं हटाया।

रोज़ेली की दुकान पास आ गई। जेमा फिर रुक गई।

"मित्री!" उसने कहा—"अभी हम वहाँ नहीं पहुँचे हैं, माँ ने भी अभी हमें नहीं देखा है···अगर आप ज़रा सोच लें, अगर···अब भी आप स्वतन्त्र हैं।"

जवाब में सैनिन ने उसका हाथ अपनी छाती से दबाया और वह उसे साथ लिए हुए आगे बढ़ा।

"अम्माँ", जेमा ने सैनिन के साथ लीनोर के कमरे में घुसते हुए कहा—"मैं अपना सच्चा वर साथ लाई हूँ!"

२६

अगर जेमा यह कहती कि मैं अपने साथ हैज़ा या प्लेग लाई हूँ, तो शायद उसे इतना दुःख न होता। वह दीवार की ओर मुँह करके

रोने लगी। जेमा आश्चर्य-चकित होकर खड़ी रह गई। सैनिन को स्वयं कोई उपाय नहीं सूझा, वह बजाय लीनोर को तसल्ली देने के स्वयं रोने लग गया। पैंतलिवन को बाध्य होकर बाहरी दरवाजा बन्द करना पड़ा, क्योंकि उसे डर था कि कोई बाहरी आदमी यह रोने-पीटने का दृश्य न देख ले। बुड्ढे को जेमा और सैनिन की जल्दबाजी अच्छी नहीं लगी, किन्तु वह उन पर कोई दोषारोपण नहीं करना चाहता था, क्योंकि क्लुबर को वह बिल्कुल नहीं चाहता था। एमिल अपने-आपको अपने मित्र सैनिन और अपनी बहिन जेमा के बीच का सन्देश-वाहक समझता था और अपने परिश्रम का यह अनुकूल फल देकर प्रसन्न हुआ। वह मन-ही-मन लीनोर को इस झुँझलाहट पर कुढ़ता था और सोचता था कि स्त्रियों में सचमुच बुद्धि का अभाव होता है! बेचारे सैनिन को सबसे अधिर दुःख हुआ। फ्रॉ लीनोर के कुछ शान्त होने पर सैनिन ने कुछ दूर से ही कहा कि वह जेमा के साथ शादी करना चाहता है; पर लीनोर तो उससे नाराज़ थी—वह तो अपने आपको धिक्कार रही थी कि वह ऐसी अन्धी क्यों हो गई थी। "आज गिवनी बैतिस्ता जीवित होते, तो यह सब बात क्यों होतीं ?" उसने फिर आँसू बहाते हुए सिसक-सिसककर कहा। सैनिन मन-ही-मन सोचने लगा कि आखिर वह ऐसी पागल-सी क्यों हो गई है ? उसे जेमा की ओर देखने का साहस नहीं हुआ; न जेमा ही पलक उठाकर उसकी ओर ताक सकी। वह चुपचाप धैर्यपूर्वक अपनी-माँ के पास खड़ी हो गई, जो पहले जेमा को अपने पास भी खड़ी नहीं रहने देना चाहती थी।...

आखिर धीरे-धीरे लीनोर का पारा ठंडा हुआ और जेमा का सहारा लेकर खिड़की के पास आरामकुर्सी पर बैठने के बाद उसने नारंगी का शर्बत पीने को माँगा। उसने सैनिन को पास तो नहीं बुलाया; पर उसके वहाँ खड़े रहने में कोई आपत्ति नहीं की। पहले वह उसे वहाँ से चले जाने के लिए चिल्लाकर कह रही थी पर अब

उसके बोलने में भी वह बाधा नहीं देने लगी। सैनिन ने बड़े ही शांत भाव और मधुर भाषण द्वारा इस अवसर का सदुपयोग किया। ऐसे अच्छे ढँग से अपने मनोगत भाव वह जेमा को भी नहीं समझा सका था। उसके हृद्गत भाव सच्चे, निष्कपट और शुद्ध थे। उसने लीनोर से अपनी असुविधाओं को भी नहीं छिपाया; किन्तु असुविधाएँ और अड़चनें बाहरी और दिखावटी थीं। उसने बतलाया कि यह सच है कि वह विदेशी है; वे लोग उसे अधिक समय से नहीं जानते; उसकी आमदनी, खर्च और हैसियत के बारे में भी उनका कुछ ज्ञान नहीं है; पर वह प्रमाण देकर सिद्ध कर सकता है कि वह एक भले घराने का प्रतिष्ठित नवयुवक है और साथ ही यह भी बात है कि वह ग़रीब नहीं है। वह उन्हें अपने घराने का प्रशंसापत्र दिखा सकता है। उसने यह भी आशा प्रकट की कि जेमा उसके घर में जाकर आनन्दपूर्वक रहेगी और वह जेमा को उसके घरवालों से पृथक् होने पर राज़ी कर लेगा !···इस 'पृथक्' शब्द ने सारा मज़ा बिगाड़ दिया··· फ्रॉ लीनोर फिर एक बार काँप उठी और बेचैन होकर इधर-उधर उस-कने-पुसकने लगी···सैनिन ने समझाया कि वह पृथक्करण भी अस्थायी होगा, और यह भी सम्भव है कि उसे अलग करने की बिल-कुल ही जरूरत न पड़े।

सैनिन के वार्तालाप का फल व्यर्थ नहीं गया। फ्रॉ लीनोर अब उसकी ओर देखने लग गई, यद्यपि इस चितवन में अब भी कड़ु-वाहट और फटकार की मात्रा विशेष थी; पर अब क्रोध का पहला आक्रमण समाप्त हो चुका था। आखिर उसने उसे अपने पास बैठा लेना भी बर्दाश्त कर लिया। जेमा उसकी दूसरी बग़ल में बैठी थी। अब लीनोर ने सैनिन को डाँटना शुरू किया, किन्तु स्वर में अब पहले की अपेक्षा कहीं अधिक कोमलता आ गई थी। उसने कई शिकायतें भी कर डालीं, पर शिकायत के शब्दों में भी कुछ ममता की छाप-सी लग गई। फिर उसने जेमा और सैनिन दोनों से बारी-

बारी से एकाध प्रश्न करने भी शुरू कर दिए। अब सैनिन ने उसके हाथ को स्पर्श किया, तो भी उसने उसमें बाधा नहीं डाली।······ उसे एक बार फिर रुलाई-सी आ गई, पर इस बार के रोने का ढंग पहले से भिन्न था······फिर उसके मुख पर मुस्कराहट आई, पर गिवनी बैतिस्ता की अनुपस्थिति का ध्यान करके फिर उसका चेहरा म्लान हो उठा। किन्तु यह म्लानता भी पहली उदासीनता से बहुत भिन्न थी।······कुछ ही देर बाद दोनों अपराधी उसके चरणों पर गिरते नज़र आए और उसने दोनों के सिर पर अपने हाथ रखकर उन्हें उठाया और प्रत्यक्षतः दोनों ने उसे चूमना-चाटना और उसकी सेवा-शुश्रूषा करना आरम्भ कर दिया। एमिल की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा। वह खुशी के मारे उछलता हुआ वहाँ आया और उस सौहार्द्र-पूर्ण मण्डली में बैठ गया।

पैंतलिवन ने भी कमरे में निगाह डाली तो मुस्कराया और साथ ही कुछ भवें चढ़ाते हुए सामने का बन्द दरवाज़ा खोल दिया।

३०

फ्रॉ लीनोर निराशा दुःख और दुःख से कोमल भावनाओं का शिकार बनी; किन्तु वह भावना भी स्थिर न रहकर गुप्त-संतुष्टि के रूप में परिवर्तित हो गई, जिसे उसने अपने मन-ही में छिपा रखा था और प्रकट नहीं होने देती थी। सैनिन ने परिचय के पहले दिन से ही फ्रॉ लीनोर को आकर्षित किया था; उसके मन में उसे दामाद बनाने की क्षीण कल्पना भी जागरित हुई थी······गत दो-तीन दिन की घटनाओं ने उस कल्पना में आशातीत वृद्धि भी की थी, किन्तु फ्रॉ लीनोर सांसारिक और चतुर स्त्री थी, इसलिए उसने इस घटना-विकास से अपने चिन्ता और दुःख के भाव प्रकट किए। उसने सैनिन से अनेक प्रश्न करना अपना कर्त्तव्य समझा। सैनिन ने तैयार

न होते हुए भी सब प्रश्नों का यथार्थ उत्तर दिया। जब लीनोर को यह निश्चय हो गया कि वह एक अच्छे घराने का लड़का है, तो उसने सैनिन से कहा कि माँ की हैसियत से उसका यह कर्त्तव्य है कि वह उससे स्पष्टता और खरेपन का बर्ताव करे। उसके उत्तर में सैनिन ने कहा कि वह उसके साथ किसी भी परीक्षा और व्यवहार से पेश आ सकती है; वह सब बातों के लिए तैयार है।

इसके बाद लीनोर ने क्लुबर महाशय को याद किया, पर उसका नाम होंठ पर आते ही उसने ठण्डी साँस ली और ज़बान बन्द कर ली। क्लुबर की आठ हज़ार सालाना की आमदनी है और वह भी हर साल बढ़ती ही जा रही है, "पर आपकी आमदनी क्या है ?" लीनोर ने हिचकिचाते हुए पूछा।

"यहाँ के आठ हज़ार," सैनिन ने स्थिर भाव से कहा—"...... हमारे यहाँ के पन्द्रह हज़ार रूबल के बराबर हैं, ...मेरी आमदनी इससे बहुत कम है। तुला-प्रान्त में मेरी छोटी-सी ज़ायदाद है...... उसकी आमदनी अच्छी तरह इन्तज़ाम करने पर पाँच हज़ार से कम नहीं हो सकती......और अगर मैं सरकारी नौकरी करलूँ, तो मुझे बड़ी आसानी से दो हज़ार रूबल प्रति वर्ष वेतन मिल सकता है।"

"सरकारी नौकरी........रूस की सरकारी नौकरी ?" फ्रॉ लीनोर ने अकुलाकर कहा—"तब तो मुझे जेमा से बिछुड़ना पड़ेगा !"

"बाहर की ड्यूटी पर भी नौकरी मिल सकती है," सैनिन ने कहा—"......वहाँ मेरा अच्छा रसूख है— और इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि मैं अपनी जायदाद बेचकर किसी लाभदायक व्यापार में लगा दूँ—उदाहरण के लिए आपकी इस दुकान को ही बढ़ाया जा सकता है।" सैनिन को मालूम था कि वह अन्तिम बात व्यर्थ ही कह रहा है, पर उस समय उसके मन में एक अज्ञात लापरवाही-सी छा गई थी। उसने जेमा की ओर देखा, जो इस प्रकार की लेन-देन की बातें शुरू होते ही कमरे में टहलते रहने के

बाद; अब आकर चुपचाप एक जगह बैठ गई थी। इस समय वह जेमा के लिये सब-कुछ न्योछावर करने को तैयार था।

"हर क्लुबर ने भी मुझे दुकान की हालत सुधारने के लिये कुछ रक़म देने का विचार प्रकट किया था।" लीनोर ने ज़रा-सी हिच-किचाहट के बाद कहा।

"माँ, दया करो, माँ!" जेमा ने इटैलियन-भाषा में चिल्लाकर कहा।

"समय रहते यह बात हो जानी चाहिए बेटी!" फ्रॉ लीनोर ने उसी भाषा में जवाब दिया। उसने फिर सैनिन से रूस के वैवाहिक क़ानून के बारे में प्रश्न किए और पूछा कि प्रशिया की भाँति वहाँ कैथलिकों के साथ शादी करने में अड़चनों का सामना तो नहीं करना पड़ता।[1] जब लीनोर को मालूम हुआ कि शरीफ़ खानदान के लड़के के साथ अपनी लड़की की शादी करने पर उसकी गणना भी शरीफ़ लोगों में होने लगेगी, तो उसने काफ़ी सन्तोष प्रकट किया—"पर आपको पहले रूस जाना पड़ेगा न?" उसने प्रश्न किया।

"क्यों?"

"ज़ार से आज्ञा लेने के लिए।"

सैनिन ने उसे समझाया कि इसकी आवश्यकता बिलकुल न पड़ेगी······पर हाँ, उसे कुछ समय के लिये रूस जाना पड़ेगा। (इस बात को कहते समय सैनिन को हार्दिक कष्ट हुआ—जेमा भी इस कष्ट में भाग लेने के लिये बाध्य थी) यह इसलिए कि वह वहाँ जाकर अपनी जायदाद सुभीते के साथ अच्छी क़ीमत में बेच सकेगा।

१. उस समय—सन् १८४० ई० में—जर्मनी में प्रशियन सरकार और कोलोन के धर्माधिष्ठाता में संयुक्त-वैवाहिक-स्कीम पर काफ़ी मतभेद चल रहा था, जिसके कारण सरकार उसमें कानूनी अड़चन डालती थी।

……किसी भी तरह सही, ज़रूरत के लिये वह वहाँ से रुपये ला सकेगा !

"अच्छा है, तब तो आप मेरे लिए अँगिया बनवाने को बढ़िया भेड़ का चमडा भी ला सकेंगे," फ्राॅ लीनोर ने कहा—"मैंने सुना है, रूस के चमड़े बड़े गरम होते हैं—उन पर के ऊन भी ख़ूबसूरत होते हैं—साथ ही वे काफ़ी सस्ते भी होते है !"

"हाँ हाँ, बड़ी ख़ुशी से, मैं आप और जेमा दोनों के लिये बढ़िया चमडे लाऊँगा !" सैनिन ने कहा।

और मेरे लिए चाँदी के तारों से मढ़ी हुई मोरक्कोकैपस[1] भी लाइएगा।" दूसरे कमरे से आकर एमिल बोल उठा।

"बहुत अच्छा, तुम्हारे लिये भी लाऊँगा……और पैंतलिवन के लिये एक बढ़िया-सा जूता भी लेता आऊँगा।"

"नहीं नहीं; फ़जूल की बात है," लीनोर ने कहा—"हम लोग काम की बात कर रहे हैं। एक बात और है," चतुर स्त्री लीनोर ने कहा—"आप अपनी जायदाद बेचने को कह रहे हैं; पर आप ऐसा कैसे कर सकेंगे ? क्या आप अपने किसानों को भी बेच देंगे ?"[2]

सैनिन के हृदय में गोली-सी लगी, क्योंकि एक बार बात-ही-बात में उसने लीनोर से कहा था कि उसका हृदय ऐसा कोमल है कि वह अपनी जायदाद के साथ अपने किसानों और नौकर-चाकरों को कभी न बेचेगा, क्योंकि यह एक पाप-कृत्य है।

"मैं कोशिश करके अपनी जायदाद ऐसे ही आदमी के हाथ बेचूँगा, जिसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ," उसने लड़खड़ाती जबान

१. मोरक्को के चमड़े की बनी हुई ख़ुशनुमा टोपी।

२. उस समय रूस में स्थिर सम्पत्ति के साथ खेती का काम करने वाले कृषक भी एक जमींदार दूसरे के हाथ बेच सकता था।

से कहा—"या किसान लोग खुद अपनी आज़ादी ख़रीद लेंगे।[1]"

"यही ठीक होगा," फ्रॉ लीनोर ने कहा—"सचमुच ज़िन्दा आदमियों को बेच देना…"

"असम्भव है !" पैंतलिवन ने एमिल के पीछे से आकर कहा और सिर हिलाकर वहाँ से चलता बना।

"है तो बुरा काम !" सैनिन ने मन-ही-मन सोचा और छिपी हुई नज़र जेमा पर डाली। ऐसा मालूम होता था कि जेमा ने उसकी अन्तिम बात ध्यान से नहीं सुनी। 'कोई हर्ज़ नहीं !" सैनिन ने फिर सोचा। इस प्रकार शाम को खाने का समय होने तक 'काम की बातें' होती रहीं। आखिर फ्रॉ लीनोर पूर्णतः राज़ी हो गई और सैनिन को प्यार से 'मित्री' कहकर उसकी पीठ ठोकने लगी और उसने प्रेमपूर्वक कहा कि वह उसे उसकी 'धोखेबाज़ी' के लिए सज़ा देगी। फिर उसने सैनिन के सम्बन्धियों और नातेदारों का हाल पूछा क्योंकि उसकी दृष्टि में वह भी बहुत आवश्यक बात थी। इसके बाद उसने रूसी गिरजाघरों की वैवाहिक प्रथाओं का विवरण पूछा और श्वेत वस्त्रों से आच्छादित तथा स्वर्ण-मुकुट पहने जेमा की मूर्ति उसके काल्पनिक चक्षुओं के सामने आ गई।

"जेमा रानी-जैसी सुन्दरी है।" लीनोर ने गर्व के साथ कहा—"दुनिया में ऐसी सुन्दरी नहीं मिलेगी।"

"अद्वितीय सुन्दरी है !" सैनिन ने लीनोर की बात समाप्त होते ही कहा।

---

१. उन दिनों किसानों का क्रय-विक्रय रूस में इसी प्रकार जारी था जैसा अन्य देशों में गुलामों का। एक ख़ास रकम दे देने पर ज़मींदार उन्हें आज़ाद भी कर देता था। आधुनिक रूस इन कुरीतियों से बिलकुल मुक्त हो गया है और इस समय वहाँ किसानों को सबसे अधिक सुख है।

"हाँ, इसीलिए तो इसका नाम जेमा[1] है।"

जेमा अपनी माँ को चूमने के लिए आगे बढ़ी....। ऐसा मालूम हुआ कि इतनी देर के वार्तालाप में उसे अब होश आया है और उसके ऊपर से वह भारी बोझ उठ गया, जिसके कारण उसका श्वास लेना कठिन हो गया था।

यकायक सैनिन का हृदय लड़कों-जैसी प्रसन्नता से उछल उठा—उसने सोचा कि आखिर वे स्वप्न सच्चे होते दीखते हैं। उसका हृदय हर्षातिरेक से ऐसा उत्तेजित हो उठा कि वह वहाँ से उठकर दुकान में चला गया। उसे बड़ी इच्छा हुई कि पहले दिन की तरह आज भी वह दुकान की कुछ चीज़ें अपने हाथ से बेचे...."अब मुझे ऐसा करने का अधिकार है।" उसने सोचा—"अब मैं इस परिवार का एक सदस्य हूँ।" वह सचमुच दुकान पर जा बैठा, और दो लड़कियों के हाथ एक-एक पौंड मिठाइयाँ आधे दामों पर बेच दीं।

भोजन के समय उसने सगाई के नियमानुसार जेमा के बग़ल में बैठने का सम्मान प्राप्त किया। फ्रॉ लीनोर ने अपनी 'काम की बातें' जारी रखीं। एमिल ने हँसकर सैनिन से उसके साथ रूस चलने का अनुरोध किया। दो सप्ताह बाद सैनिन के रवाना होने का निश्चय हुआ। अकेला पैंतलिवत मुँह फुलाए हुए था। लीनोर ने उसे फटकार बतलाई—"ये आपके मध्यस्थ बने थे न!" उसने व्यंग-भाव से कहा। बुड्ढे ने भवें चढ़ाकर उसकी ओर देखा।

जेमा आज चुप नज़र आती थी, पर उसके चेहरे पर आज-जैसा सौन्दर्य कभी देखने में नहीं आया। भोजन के बाद वह थोड़ी देर के लिए सैनिन को बग़ीची में लिवा ले गई और उसी बेंच के पास जाकर खड़ी हो गई, जहाँ दो दिन पहले वह फल चुन रही थी—"मित्री, आप नाराज़ न हों; पर मैं एक बार फिर कह देती हूँ कि आप अपने

---

१. 'जेमा' का अर्थ इटैलियन भाषा में 'हीरा' है।

को बाध्य न समझें···"

सैनिन ने उसे और नहीं बोलने दिया···

जेमा ने फिर उसकी ओर देखकर कहा—"और जो कुछ माँ ने कहा है, आप मेरे और अपने धार्मिक भेद को समझते हैं ?—इधर देखिए !···"

उसने अपने गले में से बारीक धागे में लटकते हुए क़ीमती पत्थर के क्रॉस को ज़ोर से खींच लिया—तागा टूट गया और क्रॉस जेमा ने सैनिन के हाथ में थमा दिया।

"अगर मैं आपकी हूँ तो आपका धर्म ही मेरा धर्म है।"

सैनिन जब जेमा के साथ कमरे में लौटा, उस समय भी उस (सैनिन) की आँखें सजल थीं।

शाम तक समय अच्छी तरह कटा। ताश की एकाध बाज़ियाँ भी खेली गईं।

३१

दूसरे दिन सैनिन बड़े तड़के उठा। उसकी प्रसन्नता चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी; पर नींद न आने का कारण वह प्रसन्नता नहीं, वरन् यह प्रश्न था कि किस प्रकार वह अल्प समय में सुभीते के साथ अपनी जायदाद बेच सकता है। अभी तक उसने कोई उपाय नहीं सोचा था, यद्यपि मन-ही-मन वह अनेक तरकीबों पर विचार कर रहा था। जेमा से वह अब पूरी तैयारी के साथ मिलना चाहता था।

टहलते-टहलते उसकी नजर एक ऐसे आदमी पर पड़ी जिसकी शक्ल-सूरत उसे परिचित-सी जान पड़ती थी। उसने सोचा—यह उसका सहयोगी पोलज़ो तो नहीं है, जिसे गत पाँच वर्षों से उसने नहीं देखा। सैनिन ने जल्दी से, उस टहलते हुए आदमी की ओर देखा···। वही चौड़ा मुँह, भूरा रंग, छोटी और चपटी नाक, चौड़े

हाँ हाँ, पॉलोविच !—अपनी स्त्री के मामलों में मैं कोई दख़ल नहीं देता ।"

"तुम दख़ल नहीं देते ! किसी भी मामले में ?"

पोलज़ो ने फिर अपनी आँखें ऊपर उठाईं ।

"किसी भी बात में नहीं भाई । उसकी जो इच्छा होती है, करती है, और मैं भी अपनी इच्छानुसार काम करने के लिए स्वतन्त्र हूँ ।"

"अब कहाँ जा रहे हो तुम ?" सैनिन ने पूछा ।

"अभी तो कहीं नहीं जा रहा हूँ; सड़क पर खड़ा तुम से बात कर रहा हूँ; पर जब बातचीत हो लेगी, तो मैं अपने होटल को चला जाऊँगा और वहाँ खाना खाऊँगा ।"

"क्या तुम मेरा साथ पसन्द करोगे ?"

"क्या—खाने के लिए ?"

"हाँ ।"

"ख़ुशी से । साथ खाने में आनन्द तो आता ही है । बहुत ज़्यादा बक़वाद तो नहीं करते तुम ?"

"मैं अपने को बकवादी तो नहीं समझता ।"

"अच्छी बात है ।"

पोलज़ो आगे बढ़ा । सैनिन उसके साथ हो लिया । सैनिन फिर कुछ पूछना चाहता था, पर पोलज़ो के होंठ सिल से गए और वह, चुपचाप आगे बढ़ता गया । सैनिन मन-ही-मन सोचने लगा—"किस तरह यह मूर्ख एक धन और रूप-सम्पन्ना स्त्री प्राप्त कर सका । न वह ख़ुद धनी है, न चतुर और योग्य है; स्कूल में वह सुस्त, कमअक्ल और लालची समझा जाता था—लड़कों ने इसका नाम ही 'बेवक़ूफ़' रख छोड़ा था । अद्भुत तक़दीर है इसकी !"

"पर अगर इसकी स्त्री के पास काफ़ी धन है," सैनिन ने फिर सोचना शुरू किया—"क्योंकि लोगों का कहना है कि वह किसी ठेकेदार की लड़की है—तो क्या वह मेरी जायदाद नहीं ख़रीद सकती ?

यद्यपि यह कहता है कि अपनी स्त्री के मामलों में यह दखल नहीं देता, पर यह बात धर्म और मत के सम्बन्ध में होगी। इसके अलावा मैं दाम भी तो कम माँगूँगा ! कोशिश करके देखना चाहिए, शायद सौदा पट जाए। मेरी तक़दीर !···निश्चय कर लिया, एक बार ज़रूर कोशिश कर देखूँगा।''

पोलज़ो सैनिन को फ्रैंक्फ़ोर्ट के एक बड़े अच्छे होटल में लिवा ले गया, जिसमें उसने सबसे अच्छा कमरा ले रखा था। मेज़ों और कुर्सियों पर बहुत सा सामान बक्सों आदि मे पैक किया हुआ रखा था। ''यह सब सामान मरिया निकोलावना (यही इपोलित सिड्रोइच की स्त्री का नाम था) के लिए खरीदा गया है दोस्त !'' पोलज़ो ने आरामकुर्सी पर बैठते हुए कहा—''बड़ी गर्मी है।'' और उसने बटन खोल दिए तथा मफ़लर ढीला कर दिया। फिर उसने होटल के प्रधान कर्मचारी को बुलाकर बहुत सावधानी के साथ बढ़िया खाना बनाने के लिए कहा—''गाड़ी एक बजे जाएगी, याद रखिए ! जल्दी कीजिए !!''

कर्मचारी आदरपूर्वक झुका और फुर्ती से वहाँ से चला गया।

पोलज़ो ने अपने वास्कट के बटन खोले। उसके भिंची हुई साँस खींचने और नाक ऊपर चढ़ाने से यह स्पष्ट मालूम होता था कि उसे बातचीत करने में बड़े परिश्रम से काम लेना पड़ता है। वह घबराहट के साथ यह देख रहा था कि सैनिन कहीं उसे बोलने के लिए तो बाध्य नहीं करेगा।

सैनिन उसके मन का भाव समझ गया, इसलिए उसने अधिक प्रश्न नहीं किये। केवल कुछ बहुत जरूरी बातें ही उनसे पूछीं। उसने बतलाया कि दो वर्ष तक वह सरकारी नौकरी में रहा—उसके बाद अब से कोई तीन वर्ष पहले उसने शादी की थी और अब गत तीन वर्षों से वह अपनी स्त्री के साथ बाहर घूम रहा है, जो इस समय वीसबादन में किसी मर्ज़ का इलाज करवा रही है। इसके बाद वह

अपनी स्त्री के साथ पेरिस जायेगा। इन सब समाचारो में सैनिन ने कोई विशेष दिलचस्पी नहीं ली और कोई प्रश्न नहीं किया, क्योंकि वह अपने मुख्य विषय—अर्थात् जायदाद बेचने के प्रश्न—पर आना चाहता था और आखिर मौका पाकर उसकी चर्चा छेड़ ही दी।

पोलज़ो ने शान्त होकर सैनिन की बात सुनी; और उसकी निगाह क्षण-क्षण पर उस दरवाज़े की ओर जा पहुँचती थी, जिधर से खाना आने वाला था। आख़िर भोजन आया और प्रधान कर्मचारी दो नौकरों से सुन्दर तश्तरियों में सजवाकर भाँति-भाँति के व्यंजन लिवा लाया।

"जायदाद तुला-प्रान्त में है न ?" पोलज़ो ने खाने की मेज़ पर बैठते हुए कहा।

"हाँ।"

"इफ़्रेमोस्की ज़िले में···मैं जानता हूँ।"

"आप मेरा स्थान अलेक्सिका जानते हैं न ?" सैनिन ने खाने की मेज़ के पास बैठते हुए पूछा।

"हाँ, हाँ, मुझे मालूम है," पोलज़ो ने मिठाई का एक टुकड़ा मुँह में डालते हुए कहा—"मेरी स्त्री मरिया निकोलावना के पास उसी के आस-पास एक जायदाद है भी··(नौकर से) यह बोतल खोलो। आपकी ज़मीन अच्छी है, हाँ, आपके किसानों ने बहुत से पेड़ ज़रूर काट डाले हैं। आप उसे बेचना क्यों चाहते हैं ?"

"मैं रक़म खड़ी करना चाहता हूँ—मुझे पैसे की ज़रूरत है, इसी से सस्ते में बेच दूँगा। आप भी चाहें तो ख़रीद सकते हैं।···"

पोलज़ो ने एक गिलास शराब चढ़ा ली और मुँह पोंछने के बाद फिर खाने बैठा।

"ओह," आख़िर उसने कहा—"मैं जायदाद नहीं ख़रीदा करता। मेरे पास रक़म नहीं है! मक्खन इधर बढ़ाओ। शायद मेरी स्त्री ख़रीद ले। इसके सम्बन्ध में आप उससे बात कीजिये। अगर आप

ज्यादा दाम न माँगेंगे, तो वह शायद विचार करे।···ये जर्मन तो बिलकुल गधे हैं ! मछली पकाना भी नहीं जानते। ऐसा मामूली काम है—नाऽजुत्र है, फिर भी इनके लिए मुश्किल है ! नौकर, यह रद्दी चीज़ उठा ले जाओ यहाँ से।"

"तो क्या तुम्हारी स्त्री सचमुच सारा कारबार···ख़ुद सँभालती है ?" सँनिन ने पूछा।

"हाँ। गोश्त अच्छा बना है, इसे चक्खो। मैं उससे सिफ़ारिश कर दूँगा—मैं पहले ही से तुम्हें बता चुका हूँ मित्री, मैं उसके मामलों में दख़ल नहीं देता, और फिर भी यही कहता हूं।"

पोलज़ो ने खाना जारी रखा।

"हाँ,···पर मैं उनसे बातचीत कैसे कर सकता हूँ सिड्रोइच ?"

"यह तो मामूली बात है। वीसबादन आओ। यहाँ से वह जगह बहुत दूर नहीं है। लाओ, तुम्हारे गिलास में शराब और डाल दूँ—खाने-पीने में यही तो मुख्य चीज़ है !"

पोलज़ो का चेहरा खाते-पीते समय ही कुछ उत्तेजित और सजीव नज़र आता था।

"सच कहता हूँ, मुझे मालूम नहीं है कि इसका इन्तज़ाम कैसे हो सकता है।" सँनिन ने कहा।

"पर तुम्हें यकायक जायदाद बेचने की इतनी जल्दी क्यों है ?"

"जल्दी का कारण है भाई।"

"क्या बहुत ज्यादा रक़म की ज़रूरत है ?"

"हाँ, बहुत अधिक। मैं--कैसे बताऊँ ? मैं अपनी शादी करना चाहता हूँ !"

पोलज़ो ने होंठ से लगाया हुआ गिलास मेज़ पर रख दिया।

"शादी करना चाहते हो !" उसने आश्चर्यपूर्ण स्वर में खाने से हाथ खींचते हुए कहा—"इतनी जल्दी ?"

"हाँ,···जल्दी ही।"

"दुलहिन तो रूस में ही होगी न ?"

"नहीं; रूस में नहीं है !"

"फिर कहाँ है ?"

"यहीं; फ्रैंकफ़ोर्ट में।"

"यहाँ कौन है ?"

"एक जर्मन; यानी—नहीं नहीं; इटैलियन लड़की जो अब यहाँ की ही रहने वाली है।"

"रक़म भी है उसके पास ?"

"नहीं, रक़म-वक़म तो नहीं है !"

"तब तो मेरे ख़याल में तुम्हारा प्रेम बड़ा उन्मत्त है।"

"क्या कह रहे हो ? हाँ, ऐसा ही समझो।"

"इसीलिये तुम्हें पैसे की भी ज़रूरत होगी ?"

"हाँ···इसीलिए।"

गिलास की शराब खतम करने के बाद पोलेज़ो ने कुल्ला किया, हाथ धोया और सावधानी से हाथ-मुँह पोंछने के बाद सिगार जलाया। सैनिन चुपचाप उसे देखता रहा।

"एक उपाय है," आखिर पोलज़ो पीछे झुका और कुर्सी का सहारा लेते हुए मुँह से धुएँ का बादल उड़ाकर बोला—"मेरी स्त्री के पास आओ, अगर वह चाहेगी तो आप की चिन्ता दूर कर देगी।"

"पर मैं तुम्हारी स्त्री से कैसे मिल सकता हूँ ? आप कह रहे हैं कि परसों आप वहाँ से रवाना हो जाएँगे ?"

पोलज़ो ने आँख मूँदकर कुछ ध्यान किया।

"मैं तुम्हें तरकीब बताता हूँ," पोलज़ो ने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा—"घर जाओ और फ़ौरन तैयार होकर यहाँ आ जाओ। एक बजे मेरी तैयारी है—मेरी गाड़ी में काफ़ी जगह है। मैं तुम्हें साथ ले चलूँगा। यही अच्छा उपाय है। अब मैं ज़रा आराम करूँगा। खाने के बाद एक नींद लिए बिना मुझसे नहीं रहा जाता। प्रकृति

का यही तक़ाज़ा है और मैं इसके विरुद्ध नहीं जाता। तुम मुझे जगना नहीं।"

सैनिन कुछ देर तक सोचता रहा। फिर सिर उठाकर उसकी ओर देखा। उसने मन-ही-मन किसी बात का निश्चय कर लिया।

"बहुत अच्छा, आपको धन्यवाद है। साढ़े बारह बजे मैं यहाँ आऊँगा। हम लोग साथ ही वीसबादन चलेंगे। मुझे आशा है आपकी स्त्री मेरे चलने से नाराज़ न होगी…"

पर पोलज़ो को नींद आ चुकी थी। उसने धीरे से बड़बड़ाकर कहा— 'मत जगाओ!" और लड़कों की भाँति क्षण-भर में खर्राटे लेने लगा।

सैनिन वहाँ से तुरन्त रोज़ेली की दुकान को रवाना हुआ। उसे जेमा को सब हाल बताना था।

३२

जेमा उस समय अपनी माँ के साथ दूकान पर ही थी। लीनोर ने सैनिन को देखते ही उठकर खुशी से उसका स्वागत किया, यद्यपि ध्यान से देखने पर उसके चेहरे पर घबराहट के चिह्न स्पष्ट दीख रहे थे।

"कल जो बात आपने कही थी," लीनोर ने कहा "उसी को सोच-सोचकर मैं दुकान को बढ़ाने और सुधारने की स्कीम पर विचार कर रही हूँ। इस तरफ़ शीशेदार आलमारियाँ लगा दी जाएँ तो दुकान अच्छी सज सकती है। आप जानते हैं, आजकल सजी-सजाई और सुन्दर दुकानों पर सब जाते हैं, और फिर…"

"बहुत अच्छी बात है!" सैनिन ने कहा—"हमें इस पर पूर्णतः विचार करना चाहिए; पर इधर आइए, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।" वह लीनोर और जेमा को साथ लेकर दूसरे कमरे में

गया। फ्राँ लीनोर घबरा गई कि न जाने सैनिन अब क्या कहने वाला है, जेमा भी सैनिन की जल्दबाज़ी से डर-सी गई और उसकी ओर ध्यान से देखने लगी।

सैनिन ने दोनों को बिठा दिया और स्वयं उनके सामने खड़े-खड़े ही आज का सारा हाल बयान किया—पलोज़ो से मिलना, वीसबादन जाने की तैयारी और जायदाद बिक जाने की सम्भावना। "मेरी प्रसन्नता की कल्पना कीजिए," उसने अन्त में कहा—"परिस्थिति ऐसी आ गई है कि शायद मुझे रूस भी न जाना पड़े और शादी और भी जल्दी हो जाए!"

"कब जाएँगे फिर आप?" जेमा ने पूछा।

"अभी एक घंटे के अन्दर—मेरे दोस्त ने गाड़ी किराये पर ली है। वह मुझे साथ ही ले जाएगा।"

"आप पहुँचते ही ख़त लिखेंगे न हमको?"

"पहुँचते ही; उस स्त्री से बातचीत करके लिखूँगा।"

"आप कह रहे हैं कि वह स्त्री बड़ी अमीर है?" 'काम की बात' करनेवाली लीनोर ने पूछा।

"बड़ी अमीर स्त्री है! उसका बाप करोड़पती था—वह सब उसी के लिए छोड़ गया है।"

"अकेली लड़की के लिए ही सब-कुछ? अच्छा ही है। हाँ, इस बात का ख़याल रखिएगा कि आपकी जायदाद कहीं बहुत सस्ते दामों पर हाथ से न निकल जाए! कुछ जमकर दाम माँगिएगा। कहीं ठग न लिए जाएँ आप! मैं समझती हूँ कि आप जेमा को अपनी बनाने के लिए उत्सुक हैं,...पर काम बुद्धिमानी से करना चाहिए। भूलिएगा नहीं। जितनी ही अधिक रक़म आपको जायदाद के लिए मिलेगी, उतना ही आप दोनों को और बाल-बच्चों को सुख होगा।"

जेमा ने मुँह फेर लिया, और सैनिन फिर बोला—"आप मेरी

बुद्धि पर विश्वास रखिए; पर मैं उससे मोल-तोल नहीं करूँगा। मैं उचित दाम माँगूँगा—अगर वह उतने दाम दे सकी तो ठीक, अन्यथा और ग्राहक ढूँढूँगा।"

"क्या आप उस स्त्री को जानते हैं?" जेमा ने पूछा।

"मैंने उसे कभी नहीं देखा।"

"और आप वापस कब आएँगे?"

"अगर सौदा न पटा तो परसों, और अगर पट गया तो दो-एक दिन और लग जाएँगे। किसी भी हालत में मैं ज़रूरत से ज़्यादा नहीं ठहरूँगा। मैं अपना दिल यहाँ छोड़े जा रहा हूँ! सब-कुछ कह चुका—अब मुझे जल्दी से होटल जाकर तैयार होना है···मुझे आशीर्वाद दीजिए फ्रॉ लीनोर—रूस में यही प्रथा है।"

"दाहिने हाथ से या बाँएँ से?"

"बाँएँ हाथ से; यही हृदय के समीप है। मैं परसों ही तो आऊँगा। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मैं सफल होकर लौटूँगा। अच्छा, अब विदा दीजिए···।"

उसने फ्रॉ लीनोर से विदा ली और जेमा को क्षण-भर के लिए उसके कमरे में बुलाकर कोई ज़रूरी बात बताने के लिए कहा। बात कोई ज़रूरी नहीं थी; वह उससे अकेले में विदा लेना चाहता था। फ्रॉ लीनोर इस बात को समझ गई, इसलिए उसने इसे कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया।

सैनिन जेमा के कमरे में पहले कभी नहीं गया था। प्रेम का सारा जादू और उसका आनन्द-माधुर्य उसके हृदय में फटा पड़ता था—वह अब प्रेम-मन्दिर के द्वार को पार कर चुका था। बेबस होकर वह जेमा के सामने घुटनों के बल बैठ गया···।

"तुम मेरे हो चुके," जेमा ने कहा—"पर लौटोगे जल्दी न?"

"मैं तुम्हारा हूँ, लौटूँगा।" सैनिन ने साँस रोककर कहा—"हाँ, जल्दी-ही लौटूँगा।"

"मैं तुम्हारी बाट देखती रहूँगी।"

क्षण-भर बाद सैनिन सड़क पर आ गया और शीघ्रता से अपने कमरे की ओर लपका। उसने यह भी ध्यान नहीं किया कि पैंतलिवन उसके पीछे पुकारता हुआ आ रहा है और उससे कुछ कहना चाहता है।

ठीक पौन बजे सैनिन पोलज़ो के पास पहुँचा। चार घोड़ों की गाड़ी होटल के दरवाज़े पर खड़ी थी। सैनिन को देखकर पोलज़ो ने कहा– "अच्छा, तुमने चलने का ही निश्चय कर लिया ?" और ग्रीष्म ऋतु होते हुए भी अच्छी तरह गरम कपड़े पहनकर तैयार हो गया। होटल के कर्मचारियों ने उसका सारा सामान और ख़रीदी हुई चीज़ें गाड़ी में लाद दीं। पोलज़ो नौकरों को काफ़ी इनाम देने के बाद गाड़ी में जा बैठा और उसने सिगार जलाने के बाद सैनिन को इशारे से गाड़ी में बैठने को कहा। सैनिन उसके बग़ल में जा बैठा। पोलज़ो ने कोचवान से कहा कि इनाम चाहते हो तो ख़ूब सावधानी के साथ गाड़ी चलाओ।

३३

फ्रैंकफ़ोर्ट से वीसबादन तीन घण्टे का रास्ता था। पोलज़ो रास्ते भर गाड़ी में ऊँघता गया। उसने एक बार भी खिड़की के बाहर नज़र नहीं डाली। प्राकृतिक दृश्य उसे कुछ भी आकर्षित नहीं कर सके। वह चुप रहा। सैनिन को भी चुप रहना पड़ा। वह अपनी ही बातें सोचने लगा। रास्ते में गाड़ी घोड़े बदलने के लिए स्टेशन पर रुकी तो पोलज़ो ने दो नारंगियाँ ख़रीदीं और बढ़िया अपने-आप लेकर दूसरी सैनिन को दे दी। सैनिन ने अपने साथी को स्थिर दृष्टि से देखा और यकायक ठहाका मारकर हँस पड़ा।

"किस बात पर हँस रहे हो ?" पोलज़ो ने नाख़ून से नारंगी

का छिलका उतारते हुऐ पूछा ।

"किस बात पर ?" सैनिन ने कहा—"इसी बात पर कि हम लोग साथ सफ़र कर रहे हैं ।"

"इसमें हँसने की कौन-सी बात है ?" पोलज़ो ने नारंगी की फाँक मुँह में डालते हुए फिर पूछा ।

"यह एक अजीब-सी बात है। कल मुझे तुम्हारी नाममात्र को भी याद नहीं आई थी, और आज मैं तुम्हारी स्त्री के हाथ अपनी जायदाद बेचने चल रहा हूँ, जिसके सम्बन्ध में मुझे कुछ भी पता नहीं था ।"

हरएक बात सम्भव है, पोलज़ो ने कहा—"ज़रा और उम्र बढ़ जाने पर तुम्हें किसी बात पर आश्चर्य नहीं होगा । उदाहरण के लिए क्या तुम मेरे अफ़सर होने पर विश्वास कर सकते हो ? पर मैंने अफ़सरी की है, और हुक्म चलाए हैं ।"

सैनिन सिर खुजाने लगा ।

"मुझे बता दो सिड्रोइच, तुम्हारी स्त्री कैसी है ? उसका स्वभाव कैसा है ? मुझे पहले से ही यह जान लेना ज़रूरी है ।"

"मेरे अफ़सर भी मुझ पर हुक्म चलाते थे, पर मैं फटकार दिया करता था कि तुम अपनी नौकरी अपने पास रखो।···मेरी जान छोड़ो ! पर···आप मेरी स्त्री के बारे में पूछ रहे हैं न ? मेरी स्त्री वैसी ही है जैसी और स्त्रियाँ होती हैं। उसके बारे में फ़ज़ूल माथा-पच्ची मत करो—यह सब बातें वह पसन्द भी नहीं करती । मुख्य बात यह है कि उससे खूब बातें करना···कुछ ऐसी बातें करना जिससे उसे हँसी आ जाए । उससे कुछ अपने प्रेम आदि के सम्बन्ध में कहना,···पर बात ऐसे ढँग से कहना कि वह हँस पड़े ।"

"कैसे ढँग से कहूँ ?"

"ऐसे ही कि तुमने एक लड़की को प्रेम किया और उससे विवाह करना चाहते हो—फिर उसका पूरा हाल बयान कर देना ।" पोलज़ो ने हँसकर कहा ।

सैनिन को क्रोध-सा आ गया। "इसमें हँसने की क्या बात है ?" उसने पूछा।

पोलज़ो अपनी आँखें नचाकर रह गया। उसकी दाढ़ी पर होकर नारंगी का रस चू रहा था।

"तो क्या तुम्हारी स्त्री ने यह सब सामान ख़रीदने के लिए तुम्हें फ्रैंकफ़ोर्ट भेजा था ?" थोड़ी देर बाद सैनिन ने पूछा।

"हाँ, उसीने।"

"क्या-क्या चीज़ें ख़रीदीं तुमने ?"

"खिलौने।"

"खिलौने ? तुम्हारे कोई बच्चा भी है ?"

पोलज़ो सैनिन से ज़रा दूर खिसक गया—"इसकी भी सम्भावना है ! बच्चों से मुझे क्या ग़रज़ ? स्त्री जाति···सुन्दर चीज़ें पसन्द करती हैं, ख़ासकर शृङ्गार के लिए।"

"क्या आप ऐसी बातें समझते हैं ?"

"ज़रूर समझता हूँ।"

"पर आपने तो कहा था कि आप अपनी स्त्री के किसी भी मामले में कुछ दख़ल नहीं देते ?"

"सचमुच किसी बात में नहीं दख़ल देता। पर इससे···यह मतलब नहीं है। समय काटने के लिए यह भी किया जा सकता है। मेरी स्त्री को मेरी रुचि पर विश्वास है। मैं सौदा ख़रीदने में अव्वल नम्बर का आदमी हूँ।"

पोलज़ो थक गया था, अब रुक-रुककर बोलने लगा।

"क्या तुम्हारी स्त्री के पास बहुत धन है ?" सैनिन ने फिर पूछा।

"धन; हाँ है। पर अधिकाँश उसने अपने लिए ही रख छोड़ा है।"

"पर मुझे आशा है कि तुम इसके लिए उसकी शिकायत भी नहीं करोगे ?"

"भाई, मैं उसका पति हूँ। मैं उससे कोई मुनाफ़ा नहीं कमाना-

चाहता। मैं उसके लिए उपयोगी चीज़ हूँ— वह मुझ से मनचाहा काम ले सकती है। मैं भी मज़े में शान्तिपूर्वक काम करता हूँ।"

पोलज़ो ने रेशमी रूमाल से मुँह पोंछा और ऐसा कष्ट प्रकट किया, मानो बोलने के कारण उसका प्राण निकलना चाहता है और वह सैनिन से और न बोल सकने के लिए क्षमा चाहता है।

वीसबादन में जिस होटल के सामने गाड़ी ठहरी, वह बड़ा ही शानदार था। गाड़ी खड़ी होते ही दरबान ने दौड़कर गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया।

बड़े भारी विजयी की तरह पोलज़ो गाड़ी से उतरकर सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। इतने में उसका निजी नौकर, जो बढ़िया पोशाक पहने हुए था और रंग-रूप से रूसी मालूम पड़ता था, दौड़कर आया। पोलज़ो ने कहा कि भविष्य में वह उसको साथ लिए बिना कहीं बाहर नहीं जाएगा, क्योंकि कल रात को फ्रैंकफ़ोर्ट में उसे गरम पानी तक नहीं मिल सका। नौकर ने इस पर आश्चर्य प्रकट किया, और उसके जूते और कपड़े आदि बदलने का इन्तज़ाम करने के लिए वह आगे बढ़ा।

"मरिया निकोलावन घर में ही है ?" पोलज़ो ने पूछा।

"हाँ हुज़ूर, वे इस वक्त कपड़े पहन रही हैं। आज काउण्टेस लैसंस्की के साथ भोजन करेंगी।"

"अच्छा, वहाँ ?…ठहरो ! गाड़ी में सामान है, सब उतारकर ऊपर लाओ, और तुम मित्री !" —पोलज़ो ने सैनिन को सम्बोधन करके कहा—"एक कमरा अपने लिए ले लो, और पौने घंटे बाद मेरे पास आ जाओ, हम दोनों साथ ही खाना खाएँगे।"

सैनिन ने अपने लिए एक कम खर्च का कमरा ले लिया और कपड़े आदि बदलकर जब वह पोलज़ो (जो होटल में डर्चलाट प्रिंस पोलज़ो के नाम से विख्यात था) के विशाल और सुसज्जित कमरे में पहुँचा तो वह उसे झूमता हुआ मिला। वह गर्म जल से स्नान कर

चुका था और बढ़िया मखमली आराम-कुर्सी पर लेटकर ऊँघने लगा था। उसने अपने सारे कपड़े और फ़ैशन बदल डाले थे, इसलिए सैनिन देखते ही उसे पहचान न सका। पहचानने पर भी पोलज़ो ने उसकी ओर रुख़ नहीं किया। क्षण-भर इन्तज़ार करने के बाद सैनिन अब बोलने वाला था कि सहसा दूसरे कमरे से दरवाज़ा खोलकर एक परम रूपवती युवती ने कमरे में प्रवेश में किया। उसने सफ़ेद रेशम पहन रखा था, जिसकी किनारी पर काले रंग की गोट लगी हुई थी। उसकी बाँहों और गले में हीरे के आभूषण थे—सैनिन समझ गया कि यही मरिया निकोलावना पोलज़ो है। उसके सुन्दर केश-पाश दोनों कन्धों पर बिखरे हुए थे।

३४

"ओह, माफ़ करना!" उसने कुछ घबराहट और कुछ व्यंग-भाव से अपने बाल सँभालते हुए पोलज़ो से कहा—"मैं नहीं समझती थी तुम इतनी जल्दी आ जाओगे!" उसकी बड़ी-बड़ी नीली आँखें सैनिन पर अटक गईं।

"यह सैनिन मित्री पॉलोविच हैं—लड़कपन से ही मैं इन्हें जानता हूँ।" पोलज़ो ने सैनिन की ओर बिना देखे उसकी ओर उँगली उठाकर और अपनी जगह से बिना खिसके ही कहा।

"हाँ...मैं जानती हूँ...तुमने मुझे पहले ही बतला दिया है। आप से परिचय पाकर बड़ी खुशी हुई। पर मैं तुमसे पूछना चाहती थी सिड्रोइच...मेरी नौकरानी आज पागल-सी होगई दीखती है......"

"आज तुम्हारे बाल...?"

"हाँ, मेरे बाल नहीं बँधे, माफ़ करना।" मरिया ने मुस्कराकर कहा। उसने सैनिन की ओर देखकर नम्रतापूर्वक सिर झुकाया और फ़ौरन वहाँ से चली गई!

पोलज़ो भी उठा और कुछ सोचते हुए, उसी दरवाज़े की राह अन्दर चला गया।

सैनिन को इस बात पर ज़रा भी सन्देह नहीं रहा कि पोलज़ो के कमरे में उसके बैठने की बात श्रीमती पोलज़ो को मालूम थी और वह केवल अपना केश-सौंदर्य दिखाने के लिए ही वहाँ आई थी। सैनिन उसकी इस सौन्दर्य-गर्व-मिश्रित चंचलता से प्रसन्न ही हुआ, क्योंकि उसने समझा कि इस सुपरिचित रूप में वह उससे जायदाद के दाम कहने में ज़रा भी न हिचकेगा। उसके हृदय-पटल पर जैमा का चित्र ऐसी सजीवता के साथ अंकित हो गया था कि उस पर संसार की किसी भी अन्य स्त्री की छाया नहीं टिक सकती थी' उसने मुश्किल से उसकी ओर लक्ष्य किया। वह केवल इतना ही सोचकर रह गया कि हाँ, जैसा कि लोग कहा करते थे, सचमुच यह स्त्री काफ़ी सुन्दरी है।

किन्तु सच बात तो यह है कि उस समय सैनिन की मानसिक अवस्था ऐसी थी कि वह उसके सौन्दर्य की ओर आकृष्ट नहीं हो सका, अन्यथा मरिया निकोलावना का सौन्दर्य कोई ऐसी चीज़ नहीं था कि दर्शक को एक बार मन्त्र-मुग्ध न कर देता।

कुछ देर बाद मरिया अपने पति के पीछे उस कमरे में फिर आई! वह सैनिन के पास तक गई।······उसकी चाल ही ऐसी मस्त थी कि किसी भी नवयुवक को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये काफ़ी थी। वह जब किसी की ओर जाती, तो मानो उसके लिए जीवन के आनन्द का सन्देश लेकर जाती थी! सैनिन के पास जाकर उसने उसकी ओर हाथ बढ़ा दिया और विनम्र-भाव से रूसी-भाषा में बोली—"आप मेरा इन्तज़ार कर सकेंगे? मैं एक जगह जा रही हूँ—जल्द ही वापस आ जाऊँगी।"

सैनिन प्रतिष्ठापूर्वक झुका और मरिया दरवाज़े से बाहर चली गई। जाते-जाते भी वह मुस्कराकर अपने सौन्दर्य की छाप छोड़

गई। हँसते समय उसके गाल पर तीन रेखाएँ-सी खिंच जाती थीं और उसकी आँखों से माधुर्य बरसता था।

पोलज़ो फिर अपनी आराम-कुर्सी पर आ लेटा। वह पहले की ही तरह चुप था, पर रह-रहकर उसके रक्त-हीन होंठों पर मुस्कराहट खेल रही थी। उसके गालों की झुर्रियाँ हँसने पर और भी अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देती थीं। यद्यपि वह उम्र में सैनिन से केवल तीन वर्ष बड़ा था, पर शक्ल-सूरत से बुड्ढा-सा दीखता था।

उसने शाम का खाना बड़े तकल्लुफ़ के साथ तैयार कराया था, पर सैनिन को वह अच्छा नहीं लगा। पोलज़ो ने धीरे-धीरे खाना शुरू किया; पर देखने से यही मालूम होता था कि उसका सारा ध्यान इस समय भोजन पर ही एकाग्र हो रहा है। शराब पीने के बाद उसने होंठ चाटे······और फिर कबाब की बारी आई। अब उसने बोलना भी शुरू किया तो भेड़ों के गल्ले ख़रीदने की बाबत। इसके बाद कॉफ़ी पी और फिर ऊँघना शुरू कर दिया। सैनिन उसकी यह दशा देखकर मन-ही-मन हँसने लगा और उठकर मुलायम कालीनों से ढके हुये फ़र्श पर धीरे-धीरे टहलने लगा। वह सोचने लगा कि जेमा के साथ उसका भविष्य कैसा सुखकर होगा। फिर इस विचार में पड़ गया कि वह यहाँ से जाकर जेमा को क्या समाचार सुनाएगा। घंटे-भर बाद पोलज़ो जगा और कुछ मुरब्बे खाकर जलपान करने के बाद अपनी सूजी हुई आँखों से सैनिन की ओर देखा और उससे यह पूछा कि क्या वह उसके साथ 'मूर्खों का खेल' खेलना पसन्द करेगा। सैनिन राज़ी हो गया। दोनों ड्राइंग-रूम में बैठ गए, नौकर कार्ड लाया और खेल शुरू हुआ।

इसी समय मरिया काउण्टेस लासंस्की के यहाँ से वापस आई। वह हँसती हुई कमरे में घुसी। सैनिन उसकी प्रतिष्ठा के लिए उठा, पर उसने कहा—"बैठे रहिए, खेल का सिलसिला न टूटे, मैं अभी कपड़े बदलकर आपके पास आती हूँ।" और दस्ताने उतारते हुए अन्दर के

कमरे में गई।

वह शीघ्र ही वापस आ गई। इस बार उसने हल्के रंग के रेशम का गाउन पहन रखा था और कमर में मोटा रेशमी फ़ीता बाँध रखा था। ड्राइंगरूम में आकर वह अपने पति के पास बैठ गई और जबतक वह खेल में 'मूर्ख' नहीं बन गया, चुप रही। "चलो जी पकौड़ी, खतम करो!" ('पकौड़ी' शब्द पर सैनिन ने आश्चर्यपूर्वक मरिया की ओर देखा और उत्तर में उसने भी सैनिन की ओर देखकर मुस्करा दिया) "तुम्हें नींद आ रही है अब; मेरा हाथ चूम लो और जाकर लेटो, मैं और सैनिन महाशय कुछ गपशप करेंगे।" आखिर मरिया ने कहा।

"नहीं, नींद कहाँ आ रही है मुझे?" कहकर पोलज़ो धीरे से उठा—"पर मैं जा रहा हूँ और तुम्हारा हाथ भी चूमता हूँ।" मरिया ने अपनी हथेली उसकी ओर कर दी और मुस्कराकर सैनिन की ओर देखती रही।

पोलज़ो ने भी सैनिन की ओर देखा और बिना उससे आज्ञा माँगे ही वहाँ से चला गया।

"अच्छा, बतलाइए," मरिया ने उत्सुकतापूर्वक मेज़ पर कुहनी रखकर कहा—"क्या यह सच है कि आपकी शादी होनेवाली है?"

यह बात पूछते समय मरिया ने बड़ी गहरी दृष्टि से सैनिन की आँखों की ओर देखा।

३५

श्रीमती पोलज़ो के स्वच्छन्द और सरल बर्ताव से पहले-पहल सैनिन लज्जित-सा हो उठा—यद्यपि वह कोई अनाड़ी नहीं था और संसार में काफ़ी भ्रमण कर चुका था, फिर भी उसे प्रसन्न करके अपनी जायदाद का दाम वसूल करने के विचार से उसने उसके प्रश्न का तुरन्त उत्तर दिया—"हाँ, मेरी शादी होने वाली है।"

"किसके साथ ? किसी विदेशी लड़की के ?"

"हाँ।"

"क्या हाल में ही फ्रैंकफ़ोर्ट में आपसे उसका परिचय हुआ है ?"

"हाँ।"

"वह है कौन ? क्या मैं जान सकती हूँ ?"

"ज़रूर, वह एक हलवाई की लड़की है।"

मरिया ने अपनी आँखें पूरी खोल लीं और भवें तान लीं।

"क्यों; अजीब बात है !" उसने आश्चर्य-पूर्वक कहा—"यह तो अनोखी बात है ! मैं समझती हूँ, आजकल आप जैसे नवयुवक खोजने पर भी नहीं मिल सकते ! हलवाई की लड़की से .... !"

"मैं देखता हूँ आप आश्चर्य में पड़ गई, है" सैनिन ने कुछ गौरव प्रदर्शित करते हुए कहा—"पर मुझे इस बात का बिल्कुल विचार नहीं है कि......"

"पहले तो मुझे ताज्जुब नहीं हुआ," मरिया ने टोका—"मुझे भी इस बात का कोई विचार नहीं है। मैं खुद एक किसान की लकड़ी हूँ। इसके लिए आप क्या कह सकते हैं ? मुझे आश्चर्य है, तो इस बात का कि मैंने आज एक ऐसा आदमी देखा जो प्रेम करते समय डरता नहीं। मैं समझती हूँ आप उसे अवश्य प्रेम करते होंगे ?"

"हाँ।"

"क्या वह बड़ी खूबसूरत है ?"

यह अन्तिम प्रश्न सैनिन के दिल में चुभ-सा गया, फिर भी उसे जवाब तो देना ही था।

"आप जानती हैं," उसने कहा—"हरेक आदमी अपनी प्रेमिका को सबसे अधिक सुन्दरी समझता है; पर मेरी भावी पत्नी सचमुच सुन्दरी है।"

"सचमुच ? कैसा सौन्दर्य है उसका ?—इटैलियन ? पुराने ढंग का ?"

"हाँ, उसका रूप मनोहर है।"

"उसका कोई तैल-चित्र है आपके पास ?"[1]

"नहीं।"

"उसका नाम क्या है ?"

"जेमा।"

"और आपका ?"

"मित्री।"

"आपके पिता का ?"

"पालोविच।"

"क्या आप जानते हैं," मरिया ने उसी स्वर में कहा—"मैं आपको बहुत चाहती हूँ। आप बड़े अच्छे आदमी हैं। अपना हाथ इधर लाइए। मेरी आपकी दोस्ती रही।"

उसने सैनिन का हाथ पकड़कर दबाया। उसके हाथ सैनिन के हाथ की अपेक्षा अधिक सुन्दर, गरम, चिकने और चंचल थे।

"आपको मालूम है, मुझे आपकी कौन-सी बात खटक रही है ?"

"कौन-सी बात ?"

"आप गुस्सा न करेंगे ? नहीं ? आप कहते हैं आप के साथ उसकी सगाई हो चुकी है। पर क्या यह···बिल्कुल ज़रूरी है ?"

सैनिन ने भवें चढ़ाकर कहा–"मैंने आपका मतलब नहीं समझा श्रीमती पोलज़ो !"

मरिया ने एक कोमल हँसी हँसकर गालों पर फैले हुये बाल पीछे कर लिये। और कुछ उदासी तथा लापर्वाही से अर्द्ध व्यक्त रूप में कहा—"पूरा सुन्दर और शूर है ! अब कोई यह नहीं कह सकता कि वीरों की नस्ल खतम हो गई !"

मरिया शुरू से ही मॉस्को के आमलोगों में बोली जाने वाली

---

१. उस समय तक फ़ोटोग्राफ़ी नहीं प्रचलित हुई थी।

विशुद्ध रूसी-भाषा बोल रही थी।

"मालूम होता है आपका पालन-पोषण किसी पुराने विचार के ईश्वर-भक्त घराने में हुआ है?" मरिया ने पूछा—"किस प्रान्त के हैं आप?"

"तुला का।"

"अच्छा, तब तो हम लोग एक ही सूबे के हैं। मेरे पिता···मैं कह सकती हूँ कि आप उन्हें जानते होंगे?"

"हाँ, जानता हूँ।"

"उनका जन्म तुला में ही हुआ था······वे तुला निवासी थे। अच्छा······अच्छा। आइये, अब काम की बात करें।"

"अर्थात्···कौन-से काम की बात? आपका मतलब क्या है?"

मरिया ने अपनी आधी आँखें मूँद लीं। "क्यों, आप यहाँ किस लिए आये हैं?" (अबतक उसकी आँखों में माधुर्य था, पर जब उसने आँखें मूँदने के बाद उन्हें फिर खोला तो उनके अन्दर क़हर भरा हुआ था) उसने प्रश्न किया—"आप अपनी जायदाद मेरे हाथ बेचना चाहते हैं न? आप वैवाहिक कार्यों के लिए रुपये चाहते हैं न?"

"हाँ।"

"क्या ज़्यादा रक़म चाहिए आपको?"

"शुरू-शुरू में केवल कुछ हज़ार फ्रांकों[1] में काम चल जायगा। आपके पति मेरी जायदाद को जानते हैं। आप उनसे राय ले सकती हैं—मैं सस्ते दामों पर ही दे दूँगा।"

मरिया ने अपनी गर्दन दूसरी ओर मोड़ ली। "पहली बात तो यह है," उसने सैनिन की बाँह पर उँगलियाँ रखते हुए कहा—"मैं अपने पति से राय नहीं लिया करती; केवल कपड़े लत्ते में ही मैं उनकी राय लेती हूँ; दूसरी बात यह है कि आप जायदाद सस्ते दामों

---

१ फ्राससीसी सिक्के।

पर देने के लिए क्यों कहते हैं ? मैं आपकी प्रेम विह्वलता से लाभ नहीं उठाना चाहती······मैं आपकी ओर से कोई त्याग या रिआयत नहीं चाहती। आपको उत्साहित करने के बदले·········मैं कैसे कहूँ...?······आपकी उच्च भावनाओं के कारण, क्या मैं आपको मूँड़ लूँगी ? मैं ऐसी नहीं हूँ। मैं लोगों से समय पर सख़्ती कर सकती हूं; पर इस तरह नहीं।"

सैनिन बिल्कुल ही नहीं समझ सका कि वह उसकी दिल्लगी उड़ा रही है या गम्भीरतापूर्वक बात कर रही है। उसने मन-ही-मन सोचा—"मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे सामने अपनी बात ज़ोरदार ढंग पर रखनी पड़ेगी।"

एक नौकर बड़ी रकाबी में चाय, मक्खन, बिस्कुट आदि लेकर आया। उसने सब चीज़ें क़ायदे से मेज़ पर सजा दीं और चला गया।

श्रीमती पोलज़ो ने एक प्याली चाय में चीनी डालकर सैनिन को देते हुए पूछा—"आपको पीने में आपत्ति तो नहीं है ?"

"भला, ऐसे···सुन्दर हाथों से···"

सैनिन ने वाक्य समाप्त करने के पहले ही प्याली होंठों से लगा ली। मरिया प्रसन्न होकर उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगी।

"मैंने जो अपनी जायदाद के सस्ते दाम के बारे में आप से कहा है," सैनिन ने कहा—"उसका कारण यह है कि आप भी इस समय विदेश में हैं। मुझे इसमें सन्देह है कि यहाँ आपके पास काफ़ी फ़ालतू रुपया होगा, और सच पूछिए तो मैं ख़ुद इस बात का अनुभव करता हूँ कि बिक्री···ऐसी अवस्था में आपके लिए ज़मीन ख़रीदना एक असाधारण बात होगी, और मुझे इस बात का स्वयं विचार करना चाहिए।"

सैनिन घबरा-सा गया और उसकी बात का सिलसिला टूट गया। मरिया आराम-कुर्सी पर पीछे उठँगकर उत्सुक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी। सैनिन चुपचाप बैठा रहा।

"कोई पर्वाह नहीं, आप कहते चलिए," मरिया ने उसे धैर्य-सा देते हुए कहा—"मैं आपकी बातें ध्यान से सुन रही हूँ। मुझे बहुत पसन्द हैं—बातें करते रहिए।"

सैनिन अब अपनी जायदाद का रक़बा, उसकी आमदनी, कृषि-सम्बन्धी सुविधाएँ और मुनाफ़े की सम्भावना आदि का विवरण बतलाने लगा।...फिर उसने मकान के आसपास के दृश्यों की रमणीयता का वर्णन किया। मरिया उसे अधिकाधिक उत्सुकता और चाव से देखने लगी। कुछ देर बाद उसके होंठ काँपने लगे, किन्तु उसने अपने होंठ चबाने शुरू कर दिए। सैनिन फिर घबराकर चुप रह गया।

"मित्री पॉलोविच," मरिया ने कहना शुरू किया और फिर कुछ सोचने लगी...."मित्री पॉलोविच...आप जानते हैं—मुझे निश्चय है कि आपकी जायदाद खरीदकर मैं फ़ायदे में रहूँगी और मेरा आपका सौदा भी पट जाएगा, पर आप मुझे दो दिन का समय दीजिए...आप दो दिन तक अपनी भावी पत्नी का बिछोह सहन कर लेंगे न ? इससे अधिक मैं आपको नहीं रोकूँगी। पर अगर आप फ़िलहाल पाँच-छः हज़ार फ्रांक से काम चला लें, तो मैं आपको यह रक़म क़र्ज़ के रूपमें दे सकती हूँ—बाद में हिसाब कर लिया जाएगा।"

सैनिन खड़ा हो गया। "मैं आपकी सहृदयता के लिए आपको धन्यवाद देता हूँ—विशेषकर इस दशा में जब कि मैं आपसे लगभग अपरिचित-सा था। आपकी यह इच्छा है, तो मैं दो दिन और ठहर कर अपनी जायदाद के सम्बन्ध में आपका निश्चय जान लेना चाहता हूँ।"

"हाँ, मेरी इच्छा यही है। क्या यह आपके लिए सह्य होगा ? कृपया बताइए।"

"मैं अपनी भावी पत्नी को प्रेम करता हूँ और उससे पृथक् रहना मेरे लिए सचमुच कठिन है।"

"ओह कैसा अच्छा हृदय है आपका !" मरिया ने ठंडी साँस लेकर कहा—"मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि आपको अधिक कष्ट न दूँगी। क्या आप जा रहे हैं ?"

"हाँ, अब देर हो रही है; चलूँ अपने कमरे में।" सैनिन ने कहा।

"और आपको सफ़र में तकलीफ़ हुई होगी, 'मूर्खों के खेल' में भी काफ़ी दिमाग लड़ाना पड़ा होगा। क्या आप सिड्रोइच के घनिष्ट मित्र हैं ?"

"हम दोनों एक ही स्कूल के पढ़ने वाले हैं।"

"क्या उन दिनों भी सिड्रोइच ऐसे ही थे ?"

" 'ऐसे' कैसे ?" सैनिन ने पूछा।

मरिया ज़ोर से हँस पड़ी और ऐसी हँसी, कि हँसते-हँसते उसके पेट में बल पड़ गए। आखिर वह मुँह से रूमाल लगाकर कुर्सी पर से उठी और उसने सैनिन की ओर हाथ बढ़ाया।

"सुबह जल्दी आइएगा—सुना आपने ?" मरिया ने पीछे से पुकारकर कहा। जाते-जाते सैनिन भी मुड़कर मरिया को आराम-कुर्सी पर पड़ते देख गया। यह सम्भव नहीं था कि सैनिन ने उसके इस सौन्दर्य पर ध्यान न दिया हो।

३६

आधी रात के बहुत पीछे तक सैनिन के कमरे में रोशनी जलती रही। उसने जेमा को एक पत्र लिखा, जिसमें पोलज़ो-दम्पति का हाल लिखकर तीन दिन बाद परिश्रम का परिणाम मालूम होने की बात लिखी। सुबह तड़के ही वह उस पत्र को डाकखाने में डालने और बाग़ में टहलने के लिए गया। बाग में बैंड बज रहा था;—पर टहलने वाले इक्के-दुक्के ही दिखाई दे रहे थे। वह बैंड के पास खड़ा होकर

कुछ देर बाजा सुनता रहा और कुछ कॉफ़ी पीने के बाद एकान्त में टहलने लगा। थोड़ी देर बाद एक एकान्त बेंच पर बैठकर विचार-सागर में गोते लगाने लगा। इसी समय उसके कन्धे पर किसी ने छतरी का डंडा रख दिया। वह चौंक उठा।...उसके सामने हरी पोशाक और लम्बी टोपी पहने मरिया निकोलावना खड़ी थी। उसके चेहरे पर ताज़गी और स्फूर्ति, तथा आँखों में पूर्ववत् चंचलता थी।

"नमस्कार!" उसने कहा—"मैंने आपको बुलाया था, पर आप पहले ही कमरे से निकल चुके थे—मैं दो गिलास पी चुकी हूँ—यहाँ वे लोग मुझे पानी पिला रहे हैं...क्या मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है? अभी घंटे भर मुझे और टहलना है। क्या आप मेरे साथ टहलने चलेंगे? टहलने के बाद हम लोग कॉफ़ी पियेंगे।"

"कॉफ़ी तो मैं पी चुका हूँ," सैनिन ने खड़े होकर कहा—"पर आपके साथ टहलने में मुझे कोई उज्र नहीं।"

"बहुत अच्छा, अपना हाथ इधर लाइये; डरिए नहीं, आप की भावी पत्नी यहाँ नहीं है—वह नहीं देखेगी।"

सैनिन ने अपने होठों पर बनावटी मुस्कराहट प्रकट की। जब-जब मरिया जेमा का नाम लेती थी, सैनिन के हृदय में कुछ कडुवाहट मिली हुई सनसनी फैल जाती थी। तो भी उसने शीघ्रतापूर्वक मरिया की ओर हाथ बढ़ा दिया और उसका हाथ अपने हाथों में पकड़कर दबा लिया।

"इधर से चलिए," मरिया ने अपनी खुली हुई छतरी से इशारा करके कहा—"मुझे इस बाग़ में बड़ा आनन्द आता है, मैं आपको अच्छे-अच्छे स्थान दिखाऊँगी। इस समय हम लोग ख़रीद-फ़रोख़्त की बात नहीं करेंगे। इसके सम्बन्ध में तो दोपहर का खाना खाने के बाद अच्छी तरह बातें होंगी, पर अब आप मुझे अपने सम्बन्ध में बतलाइए जिससे मैं जान जाऊँ कि मैं कैसे आदमी के साथ व्यवहार कर रही हूँ। इसके बाद अगर आप चाहोगे तो मैं अपनी राम-कहानी

भी सुनाऊँगी। मंजूर है आप को ?"

"पर श्रीमती मरिया, आपको मेरी बाबत कुछ जानकर क्या लाभ..."

"ठहरिये, ठहरिये ! आप मेरा मतलब नहीं समझ सके। मैं आप से दिल्लगी नहीं करना चाहती।" मरिया ने कन्धा हिलाते हुए कहा—"मैं इसलिए आप से दिल्लगी नहीं करना चाहती कि आपकी भावी पत्नी का सौंदर्य पुराने ढ ग का है, पर इसलिए कुछ पूछना चाहती हूँ कि आप कुछ बेचना चाहते हैं और मैं हूँ उसकी खरीदार। मैं आपके माल के बारे में जानना चाहती हूँ, यह आपको बताना ही पड़ेगा। मैं सिर्फ़ इतना ही नहीं जानना चाहती कि मैं क्या खरीद रही हूँ, पर यह भी जानना चाहती हूँ कि चीज़ मैं किससे ख़रीद रही हूं। मेरे पिता जी भी ऐसा ही किया करते थे। अच्छा, अब शुरू कीजिए......लड़कपन से नहीं, तो अपने यात्रा-विवरण से ही शुरू कीजिए। कितने दिन हुए आप को भ्रमण करते ? अब तक आप कहाँ-कहाँ हो आए ?...ज़रा धीरे-धीरे चलिये, जल्दी क्या है ?"

"मैं इटली से आया हूँ। इटली में मैं कई महिने ठहरा था।"

"अच्छा, मालूम होता है इटली की प्रत्येक वस्तु आपको विशेष रूप में आकर्षित करती है। आश्चर्य है कि आप को इटली में ही कोई प्रेमिका नहीं मिली ! क्या आप को ललित-कलाओं से प्रेम है ? —चित्रकारी अधिक पसन्द है या संगीत ?"

"हाँ मैं कला-प्रेमी हूँ...प्रत्येक सुन्दर वस्तु मुझे पसन्द है।"

"और संगीत ?"

"संगीत से भी प्रेम है।"

"पर मुझे तो संगीत नहीं पसन्द है। मुझे रूसी गानों के अतिरिक्त और किसी चीज़ में आनन्द नहीं आता—वह भी मगर बसन्त ऋतु में देहात में नृत्य के साथ गाये जाएँ...लाल कमीज़ों पर मोहन-माला हो और हरी-भरी नई घासों से ढका हुआ मैदान,

वातावरण सुगन्धि से भरा हुआ हो,''''पर' बात तो आपकी चल रही थी...अच्छा आगे सुनाइए।"

मरिया टहलते-टहलते सैनिन पर नज़र डालती जाती थी। वह लम्बी काफ़ी थी। इसलिए उसका कन्धा सैनिन के कन्धे के लगभग बराबर था।

सैनिन ने बोलना शुरू किया, पहले तो अनिच्छापूर्वक और सरलता के साथ,—पर धीरे-धीरे वह खुलकर बात करने लगा और कुछ देर पीछे गपशप तक नौबत पहुँच गई। बातों-ही-बातों में उसने अपना अतीत और भविष्य सुना डाला, और हाथ-में-हाथ डाले कहीं का कहीं पहुँच गया।

रास्ते में आने-जाने और टहलने वाले अनेक लोगों ने आदर से झुक कर, टोपी उठा-उठाकर मरिया को प्रणाम किया! अन्तिम आदमी ने, जो बड़े फैशनेबुल ढंग का और साँवले रँग का था, दूरसे मरिया को पहचानकर फ्राँसीसी ढंग से सलाम किया।

"यह कौन है ?" सैनिन ने रूसियों के अनुचित स्वभावानुसार उस आदमी की ओर देखकर मरिया से प्रश्न किया।

"एक फ्राँसीसी है। यहाँ बहुत से फ्राँसीसी रहते हैं'''। मेरे यहाँ यह नृत्य-कला सिखाने आया करता है। कॉफ़ी पीने का समय हो चुका है—चलिए घर चलें, आप को तो भूख लग आई होगी। मेरे स्वामी भी जग उठे होंगे।"

होटल में पहुँचते ही मरिया ने कॉफ़ी लाने का हुक्म दिया। पति-देव उसके जग चुके थे। अतएव तीनों बैठकर बातें करने लगे।

एक बड़ी-सी चमकीली रकाबी में कॉफ़ी और एक हैंड-बिल लेकर नौकर आया। मरियो ने हैंड-बिल फ़ौरन् उठा लिया।

"एक नाटक होने वाला है," मरिया ने कहा—"जर्मन-नाटक। ख़ैर, कोई हर्ज नहीं," उसने नौकर की ओर रुख करके कहा—'सामने का बॉक्स मेरे लिए रिज़र्व करने का आर्डर दे दो।"

"लेकिन सामने का बक्स तो शहर के डिक्टेटर ने ले लिया है।
नौकर ने दबी-ज़बान से कहा।

"डिक्टेटर को दस थालर[1] देकर बॉक्स मेरे नाम लिखवा दो। सुनते हो!"

नौकर उदासीन-भाव से नम्रतापूर्वक सिर झुकाकर खड़ा रहा।

"मित्री पॉलोविच, आप मेरे साथ थियेटर चलेंगे? जर्मन ऐक्टर बहुत अच्छे नहीं होते; पर आप चलेंगे···हाँ, हाँ! आप बड़े विनम्र हैं! कहो जी पकौड़ी, आप तो नहीं चलेंगे न?" मरिया ने कहा।

"आप इन्तज़ाम कर लीजिए।" पोलज़ो ने प्याली पर से होंठ हटाते हुए कहा।

"आप घर पर ही रहिए। थियेटर में जाकर वहाँ भी आपको नींद आ जाती है; और आप जर्मन-भाषा भी अच्छी तरह नहीं समझ पाते। मैं आपको काम बता रही हूँ—मिल के सम्बन्ध में ओवर-सियर को जवाब लिख रखिएगा···याद है—किसानों की पिसाई के बारे में लिख दीजिए कि मैं नहीं लूँगी उसे—बस! यही काम है आपका।"

"बहुत अच्छा।" पोलज़ो ने कहा।

"अच्छा—बड़ी अच्छी बात है···आप बड़े अच्छे है। अब चूँकि ओवरसियर की चर्चा छिड़ चुकी है, इसलिए उस जायदाद के बारे में भी बातचीत हो जानी चाहिए। मित्री पॉलोविच, आप क्या क़ीमत चाहते हैं अपनी जायदाद की? कितनी रक़म पेशगी लेंगे—ठीक-ठीक बतलाइए (सैनिन ने मन-ही-मन ईश्वर को धन्यवाद दिया)। यह तो आप बतला चुके हैं कि बाग़ वग़ैरह बड़े सुन्दर हैं, पर पकौड़ी महाशय उस समय यहाँ नहीं थे···अब इन्हें भी सुनाइए···ये···ज़्यादे

१. जर्मन सिक्का जिसका मूल्य इस समय लगभग सवा दो रुपये के बराबर है।

समझ सकेंगे और अगर कोई खराबी हुई, तो उसे भी जान जाएँगे ! मैं यह सोचकर खुश होती हूँ कि आपकी शादी में मैं मदद कर सकूँगी। मैंने खाने के बाद आपके काम की बाबत बातचीत करने का वादा किया था। और मैं हमेशा अपने वादे की पक्की बनी रहती हूँ। सच है न सिड्रोइच ?''

पोलज़ो ने मुँह पोंछते हुए कहा—''बात तो सच ही है, तुमने कभी किसी को धोखा नहीं दिया।''

''कभी नहीं ! और मैं कभी किसी को धोखा न दूँगी। अच्छा मित्री पॉलोविच, जायदाद का पूरा विवरण सुनाइए।''

३७

सैनिन ने दोबारा अपनी जायदाद का विवरण सुनाया, पर इस प्राकृतिक सौन्दर्य का ज़िक्र नहीं किया और साथ-ही-साथ पोलज़ो से भी उन तथ्यों के समर्थन के लिए अपील की; पर पोलज़ो ने इस ढँग से सिर हिलाया, जिसका मतलब न तो समर्थन के ही पक्ष में था, न इन्कार के। किन्तु मरिया को पोलज़ो की मदद की जरूरत ही क्या थी ? उसमें व्यापारिक बातें समझने की आश्चर्यजनक क्षमता थी—उसने खेती आदि के बारे में अनेक प्रश्न किए। सैनिन को यह आशा नहीं थी कि उसकी जायदाद के सम्बन्ध में इतनी पड़ताल होगी और वह इसके लिए तैयार भी नहीं हुआ था। वह उसके प्रश्नों से ऐसा घबरा गया जैसे जज के सामने अपराधी घबरा जाते हैं। यद्यपि मरिया सारे प्रश्न हँस-हँसकर करती थी, पर उससे भी सैनिन की घबराहट कम नहीं होती थी।

''अच्छी बात है।'' मरिया ने फ़ैसला सुनाते हुए कहा—''अब मैं आपकी जायदाद का हाल वैसा ही जान गई हूँ...जैसा आप

जानते हैं। अब बतलाइए, आप उसकी क़ीमत प्रति मनुष्य किस हिसाब से लेंगे ?"

"मैं···मैं समझता हूँ···मैं पाँच सौ रूबल फ़ी आदमी से कम ···"सैनिन ने कुछ कठिनाई के साथ कहा। असल में उसे इस समय पैंतलिवन जैसे सलाहकार की ज़रूरत थी।

मरिया ने आँखें ऊपर करके हिसाब लगाया।

"अच्छा ?" आख़िर उसने कहा—"मैं समझती हूँ यह दाम अनुचित नहीं है, पर मैं दो दिन का अवकाश पूरा करके कल तक इसका जवाब दूँगी। मैं समझती हूँ सब ठीक हो जाएगा और तब आप बतला दीजिएगा कि आप कितनी रक़म पेशगी चाहते हैं।" इस समय सैनिन कुछ जवाब देना चाहता था, पर वह घड़ी देखकर झट से बोली—"समय काफ़ी हो चुका, अब आप जाकर आराम कीजिए—या बाज़ी खेलिए···तीन बजे तक आपकी छुट्टी है।"

"मैं बाज़ी के खेल नहीं खेला करता।" सैनिन ने कहा।

"सच ? आप क्या आदर्शवादी हैं ? मैं भी नहीं खेलती। रुपया यों ही फेंकना बेवक़ूफ़ी है···ख़ैर, अख़बार पढ़िए, टहलिए, या जो इच्छा हो सो कीजिए; पर तीन बजे मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगी··· आज कुछ जल्दी भोजन करना होगा। बेवक़ूफ़ जर्मन साढ़े छः बजे से ही तमाशा शुरू कर देते हैं। आप नाराज़ तो नहीं हो गए ?"

"नाराज होने का क्या कारण हो सकता है ?"

"क्योंकि मैंने आपको परेशान किया। ज़रा ठहरिए—आप देखिए बड़ी दुर्दशा होने वाली है।" मरिया की आँखें नाचने लगीं और उसका मुख-मण्डल आरक्त हो गया—'अच्छा, शेष मिलने पर।"

सैनिन आदर-पूर्वक झुककर विदा हुआ। उसके पीछे ज़ोर की

---

१. उस समय जायदाद की क़ीमत उसमें रहनेवालों की संख्या के हिसाब से लगाई जाया करती थी।

हास्य-ध्वनि सुनाई पड़ी। सैनिन ने सामने के शीशे के प्रतिविम्ब में देखा कि मरिया ने पोलज़ो की टोपी से उसका मुँह ढक दिया है और वह हाथ-पैर मारकर उसे हटाने की चेष्टा कर रहा है।

३८

सैनिन अपने कमरे में पहुँचा तो मन ही-मन प्रसन्न हो रहा था। मरिया के कथनानुसार उसे सचमुच आराम करने की ज़रूरत थी—उसे उस नए परिचय, नई बातचीत और थका देने वाली मुठभेड़ के गलाघोंटू वातावरण से, जिसका प्रभाव उसके हृदय पर धीरे-धीरे पड़ता जा रहा था, और उस नितान्त अपरिचित स्त्री से अज्ञात रूप से क्रमशः घनिष्टता-सी बढ़ती जा रही थी। और यह सब तब हो रहा है जब दो दिन पहले ही वह जेमा का हृदय अपना चुका है। उसने मन-ही-मन उसकी पवित्र प्रतिमूर्ति से सहस्रों बार क्षमा माँगी, यद्यपि वह अपना कोई अपराध नहीं मानता था, फिर भी उसका हृदय काँप रहा था। उसने जेमा के दिए हुए क्रॉस का बार-बार चुम्बन किया। यदि वीसबादन् में जायदाद बेचने के लोभ से उसे ठहरना न होता तो वह फ़ौरन् अपने प्यारे फ्रैंकफ़ोर्ट के लिए रवाना हो जाता और जाकर अपनी प्रियतमा के चरणों पर गिर पड़ता···प क्या करता, मजबूरी थी—उसे खाना-खाना और थियेटर देखने जाना ही होगा···अगर वह कल अन्तिम निश्चय सुना देती!

एक और चीज़ जिसने उसके हृदय में घबराहट और क्रोध भर दिया, वह थी जेमा के प्रेम और सान्निध्य तथा भविष्य की सुन्दर कल्पना के साथ इस अद्भुत नव-परिचित रमणी पोलज़ो का बार-बार बलात् स्मरण। सैनिन के बहुत चेष्टा करने पर भी उसके मानस पटल से मरिया की मूर्ति नहीं हट रही थी—धीरे-धीरे उसका मधुर स्वर भी उसके कर्ण-कुहर में प्रवेश करने लगा—उसकी प्राण-शक्ति

में मरिया का सौरभ प्रविष्ट होने लगा। यह स्त्री उसको स्पष्टतः बेवक़ूफ़ बना रही है, और हर तरह से उस पर क़ाबू पाने की चेष्टा कर रही है···किसलिए? वह चाहती क्या है? क्या केवल इसीलिए कि एक बिगड़ी हुई, धनिक और सिद्धान्त-हीना स्त्री है, और ऐसा उन्माद प्रकट करती है? और उसका पति! यह एक विचित्र-सा आदमी। इसके साथ मरिया का क्या सम्बन्ध था? पर इस प्रकार के प्रश्न ही सैनिन के दिमाग़ में क्यों आ रहे हैं, जब सैनिन पोलज़ो या उसकी स्त्री के सम्बन्ध में कोई दिलचस्पी नहीं रखता? वह इस अनधिकारपूर्ण प्रतिमा को अपने मन-मन्दिर मे निकाल बाहर क्यों नहीं करता, जब कि उसके हृदय में स्वच्छ, विशाल और ईश्वरीय प्रकाश-युक्त मूर्ति विद्यमान है? उस दैवी प्रतिमूर्ति के रहते हुए दूसरी छाया उसके ऊपर क्यों पड़ रही है? यही नहीं, यह नई प्रतिमा गर्व के साथ उसकी ओर देखती है, विमोहक दृष्टि डालती है, हँसकर गाल की रेखाएँ दिखाती है, नाग-पाश के से केशों का प्रदर्शन करती है। ये सारी बातें उसके हृदय में धँसती-सी क्यों जा रही हैं; रही हैं; वह क्यों उनको दूर हटाने में अपने को असमर्थ पा रहा है?

"क्या वाहियात बातें हैं! वाहियात! कल इन सारी चीज़ों का लोप हो जाएगा···पर क्या कल वह मुझे जाने देगी?"

हाँ···ये सभी प्रश्न सैनिन ने अपने-आप से किए; पर तीन बजे का समय क़रीब आ रहा था और वह एक काला कोट पहनकर कुछ देर बाग़ीचे में टहलते हुए पोलज़ो के घर पहुँचा।

कमरे में घुसते ही उसने मरिया के सेक्रेटरी को बैठा देखा। यह एक ऊँचे क़द का जर्मन था···पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने देखा कि सेक्रेटरी के बग़ल में वही फ़ौजी अफ़सर डनहॉफ़ बैठा हुआ है, जिसके साथ अभी कुछ ही दिन पहले उसने द्वन्द्व युद्ध किया था। उसे स्वप्न में भी इस बात की सम्भावना नहीं थी कि वह अफ़सर यहाँ मिल सकता है, इसीलिए सहसा उसे कमरे में बैठा देख-

कर वह आश्चर्य-चकित हो गया। तो भी शिष्टाचार के नाते वह उससे परिचय-सूचक भाव प्रकट करके मिला।

"क्या आप इन से परिचित हैं ?" मरिया ने सैनिन की परेशानी को भाँपते हुए डनहॉफ़ से पूछा।

"हाँ···मुझे आप से पहले से ही परिचित होने का गौरव प्राप्त है," कहकर डनहॉफ़ ने मरिया की तरफ़ ज़रा झुककर धीमे स्वर में हँसकर कहा—"यह वही सज्जन हैं···आपके देश के···रूसी···।"

"असम्भव !" मरिया ने भी धीरे-से जवाब दिया और उँगली के इशारे से डनहॉफ़ और लम्बे सेक्रेटरी दोनों को विदा करने लगी। रंग-ढंग से यह स्पष्ट मालूम होता था कि सेक्रेटरी मरिया के प्रेम-पाश में फँस चुका है। डनहॉफ़ इशारे से सब बात समझ गया और उसने फ़ौरन् उठकर नम्रतापूर्वक विदा ली। सेक्रेटरी कुछ अड़ियल पन ज़रूर दिखाना चाहता था, पर मरिया ने अविनय के साथ उसे चले जाने को कहा।

"आप अपनी रानी मालकिन के यहाँ जाइए," उसने सेक्रेटरी से कहा—"मुझ साधारण हैसियत की स्त्री से आप को क्या मिलेगा ?"

"सचमुच देवी," अभागे सेक्रेटरी ने उत्तर दिया—"संसार की सारी रानियाँ···।"

पर मरिया ऐसी दयावती नहीं थी, और सेक्रेटरी महाशय को वहाँ से टरकना पड़ा।

मरिया ने उस दिन गुलाबी रेशम की पोशाक पहन रखी थी और कानों में जवाहरात के कुण्डल लटकाए थे। उसकी आँखें भी उन दोनों हीरों से कम चमकीली नहीं दीखती थीं। उस समय वह बहुत प्रसन्न मालूम होती थी।

उसने सैनिन को अपने बग़ल बैठाया और उससे पेरिस के संबंध में बात करने लगी। वह बतलाने लगी कि जर्मन लोगों से वह तँग

आ गई है, क्योंकि वे बड़े बेवक़ूफ़ होते हैं और कुछ ही दिनों में पेरिस जाने का इरादा रखती है। उसने अन्त में सैनिन से पूछा कि क्या यह सच है कि उसने उस अफ़सर से किसी स्त्री के बारे में कुछ दिन पहले द्वन्द्व-युद्ध किया था, जो अभी-अभी वहाँ से विदा हुआ है!

"आपको यह कैसे मालूम हुआ?" सैनिन ने साश्चर्य पूछा।

"दुनिया अफ़वाहों से भरी है मित्री पालोविच, पर कुछ भी हो, मैं जानती हूँ कि आपने ठीक किया—वीरता का तक़ाज़ा भी यही था। पर यह तो बतलाइए कि वह स्त्री क्या आपकी भावी पत्नी हीं थी?"

सैनिन ने भवें चढ़ा लीं...

"अच्छा, न पूछूँगी," मरिया ने जल्दी से कहा—"आप क्रोध न कीजिए—माफ़ कीजिए!"

इसी समय पोलज़ो दूसरे कमरे से अख़बार हाथ में लिये हुए आया

"आप क्या चाहते हैं? क्या खाना तैयार हो गया?" मरिया ने पूछा।

"खाना अभी तैयार हुआ जाता है, यह देखो अख़बार में क्या है—प्रिंस ग्रोमोब्वाय का देहान्त हो गया!"

मरिया ने अपना सिर ऊपर उठाया।

"ईश्वर उन्हें स्वर्ग में शाँति दे!" उसने सैनिन की ओर मुड़ कर कहा—"यह महाशय (प्रिंस ग्रोमोब्वाय) हर साल फ़रवरी के महीने में मेरे जन्म-दिवस के अवसर पर मेरा कमरा फूलों से भर दिया करते थे। बिना उनके पीटर्सबर्ग में जाड़ा बिताना व्यर्थ होगा—सत्तर वर्ष से भी अधिक उम्र रही होगी उनकी?" अन्तिम वाक्य उसने अपने पति को सम्बोधन करके कहा।

"हाँ, ज़रूर। अख़बार में उनके अन्तिम संस्कार का भी हाल छपा है। सभी बड़े आदमी शामिल हुए थे। प्रिंस कोरिश्किन की

लिखी हुई एक कविता भी इस अवसर पर पढ़ी गई थी।"

"अच्छा!"

"क्या मैं पढ़ सुनाऊँ? प्रिंस ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है।"

"नहीं, पढ़ने की ज़रूरत नहीं। अच्छे तो थे ही। खाने की तैयारी करो। जीवन जीने के लिए ही है। मित्री पाँलोविच, आइए" कहकर मरिया सैनिन की बाँह पकड़कर खाने के कमरे में लिवा ले गई।

खाना खूब लज़ीज़ बना था। मरिया ने खाते समय सैनिन को एक कहानी सुनाई जिसमें उसने रूसी स्त्रियों की ख़ासी निन्दा कर डाली। सैनिन बाज़-बाज़ शब्दों पर हँस पड़ता था। मरिया ने अनेक दम्भ- कपट और धोखे की बातें सुनाई। उसकी बात-बात से उसकी अमीराना ज़िंदगी की बू आती थी। बचपन से ही लेकर उसने अपने जीवन की अनोखी बातें बतायीं, जिससे सैनिन इस परिणाम पर पहुँचा कि अवस्था अधिक न होने पर भी यह औरत काफ़ी दुनियाँ देख चुकी है।

पोलज़ो अपने दिल और दिमाग़ की सारी शक्ति एकाग्र करके स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लेने लगा। बीच-बीच में वह अपनी स्त्री और सैनिन पर भी अपनी निस्तेज, पर विचक्षण नज़र डाल दिया करता था।

"कैसे चतुर पति हैं आप," मरिया ने पोलज़ो की ओर देखकर कहा—"आपने फ्रैंकफ़ोर्ट से चीज़ें खरीदकर लाने में काफ़ी बुद्धिमानी का परिचय दिया। इसके लिए आपका माथा चूम लेने को दिल कहता है, पर आप चुम्बन-प्रेमी नहीं है, इसलिए…"

"मैं इसका इच्छुक नहीं हूँ।" कहकर पोलज़ो ने चाँदी की छुरी से सेब काटने शुरू कर दिए।

मरिया उसकी ओर देखकर मेज़ बजाने लगी।

"तो अब बाज़ी फिर होगी—क्यों?" मरिया ने पोलज़ो से पूछा।

"हाँ, होगी।"

"अच्छा, आप हार जायेंगे।"

पोलज़ो ने ज़रा मुँह बनाया।

"अब की बार बहुत मत फूलो, तुम भी हार सकती हो!" उस ने कहा।

"कैसी बाज़ी है—किस चीज़ की? क्या मुझे न बतलाइएगा?" सैनिन ने पूछा।

"नहीं···अभी नहीं।" मरिया ने जवाब दिया और चुप हो गई!

सात बज गए। नौकर ने आकर बतलाया कि गाड़ी तैयार है। पोलज़ो अपनी स्त्री को दरवाज़े तक पहुँचाकर वापस आया और आराम-कुर्सी पर लेट रहा।

"याद रखिएगा—ओवरसियर को पत्र लिखना न भूलिएगा।" मरिया ने दूर से ही पुकारकर कहा।

"लिख रखूँगा—इसकी फिक्र न करो! मुझे ख़ुद ख़याल है।" पोलज़ो ने जवाब दिया।

३९

सन् १८४० ई० तक जर्मनी के थिएटरों की अवस्था किसी भी दृष्टि से सन्तोषजनक नहीं थी--न तो कला की दृष्टि से उनमें पूर्णता थी, न सञ्चालन की ही दृष्टि से। श्रीमती पोलज़ो के बॉक्स के पीछे एक छोटा-सा कमरा था, जिसमें कई सोफे पड़े थे। बाक्स में जाने से पहले मरिया ने सैनिन को बॉक्स और स्टेज के बीच का पर्दा लगा देने के लिए कहा।

"मैं नहीं चाहती कि कोई मुझे देखे", मरिया ने कहा—"नहीं तो लोग फौरन भीड़ लगा देंगे!" उसने सैनिन को अपने बग़ल स्टेज की ओर पीठ करके बैठाया जिससे मालूम हो कि बॉक्स अभी ख़ाली

है। गायक-मण्डली ने रंगमंच पर वैवाहिक मंगल-गीत गाने शुरू किए, पर्दा उठा और खेल शुरू हुआ।

नाटक के भाषा-भाव में बेहद शिथिलता थी। मरिया बड़े धैर्य के साथ आधे अंक तक देखती रही, परन्तु जब नाटक की नायिका के पहले प्रणयी ने अपनी हृदय-स्वामिनी की धोखेबाज़ी देखकर अपनी दोनों मुट्ठियाँ बाँध लीं और तनकर स्टेज पर खड़ा होकर कुत्ते की तरह भौंकने लगा, तो मरिया इसे बर्दाश्त नहीं कर सकी।

"फ्रांस का ख़राव-से-ख़राब ऐक्टर भी इससे अच्छा पार्ट कर सकता है।" मरिया ने बॉक्स से उठकर पीछे के कमरे में जाते हुए कहा—"आप भी अन्दर आ जाइए—आइए, बातें करें!"

सैनिन उसके पास जाकर बग़ल के सोफ़े पर बैठ गया।

मरिया ने सैनिन की ओर देखा। "रंग रेशम-सा निखरा हुआ है! आपकी स्त्री बड़ी भाग्यशीला होगी।...वह मस्खरा," उसने उस चिल्लानेवाले ऐक्टर की तरफ़ पंखे से इशारा करते हुए कहा, जो एक शिक्षक का पार्ट कर रहा था—"वह मस्खरा मुझे अपने नवयौवन की याद दिलाता है; मुझे भी एक शिक्षक से प्रेम हो गया था। वह मेरा पहला...नहीं, दूसरा यौवनोन्माद था।" पहली बार मुझे एक महन्त से प्रेम हो गया था। तब तो मेरी उम्र बारह वर्ष की ही थी। एक दिन रविवार को मैंने उसे देखा—वह मखमली पोशाक पहने स्त्रियों के पास से गुज़रा—बड़ी विशाल और जादू-भरी आँखें थीं उसकी।...मेरे शिक्षक का नाम था गैस्टन। वह बड़ा विद्वान् और कठोर स्वभाव का आदमी था—रहनेवाला स्वीडन का था। डील-डौल का तगड़ा था, पर उसकी मूँछें बड़ी भयानक थीं। मैं उससे बहुत डरती थी। जीवन-भर में मैं और किसी पुरुष से नहीं डरी। वह मेरे भाई को पढ़ाता था, जो डूबकर...मर गया। एक कंजड़ स्त्री ने मेरे लिए भी भविष्य-वाणी की थी कि मैं पानी में डूबकर मरूँगी, पर इन बातों में मेरा विश्वास नहीं है। सिड्राइच के

हाथ में तलवार देखकर जरूर मरने की सम्भावना हो सकती है !"

"तलवार के अलावा दूसरी चीजों से भी मौत हो सकती है।" सैनिन ने कहा !

"ये सब फ़जूल बातें हैं ! आप अन्ध-विश्वासी तो नहीं हैं ? मैं यह बातें बिल्कुल नहीं मानती। जो होना होगा, सो होगा। गैस्टन मेरे ही मकान में रहता था। कभी-कभी आधी रात को मेरी नींद खुलती, उसके पाँवों की आहट सुनाई देती थी — वह बहुत रात बीत जाने पर सोता था। मेरे दिल में अनेक भाव उठते थे। मेरे पिता मुश्किल से लिख-पढ़ सकते थे, पर हम सबको उन्होंने खूब पढ़ाया-लिखाया था। मैं लैटिन भी जानती हूँ !"

"अच्छा, आपने लैटिन-भाषा भी सीखी है !"

"हाँ, मास्टर गैस्टन ने मुझे लैटिन-भाषा पढ़ाई थी। मैंने लैटिन की अनेक किताबें पढ़ी हैं। ऐनील्ड का वह प्रसंग आपको याद है जब दीदो और एनियास जंगल में थे ?…"

"हाँ-हाँ, मुझे याद है।" सैनिन बहुत पहले ही भूल गया था; पर ऐनील्ड के कथानक की धुँधली स्मृति उसके मस्तिष्क में अब भी थी।

मरिया ने सैनिन को तिरछी नजर से देखा और फिर ऊपर देखने लगी। "आप यह न समझ बैठिएगा कि मैं कोई बड़ी विदुषी हूँ—मुझ में कोई विलक्षण प्रतिभा नहीं है। मैं मुश्किल से लिख-पढ़ लेती हूँ…सच कहती हूँ; मैं अच्छी तरह पढ़ भी नहीं सकती; प्यानो बजाने में भी दक्ष नहीं हूँ, न सिलाई आदि स्त्रियोचित शिल्पों से ही परिचित हूं—ऐसी ही हूँ मैं !"

उसने फिर हाथ बढ़ाकर कहा—"मैं यह सब एक तो इसलिए बतला रही हूँ कि जिससे हम लोगों का ध्यान उन मूर्खों की ओर न जाए (उस समय स्टेज पर ऐक्टर की जगह एक ऐक्ट्रेस पार्ट कर रही थी और वह भी एक्टर की तरह जोर-जोर से चिल्ला रही थी),

दूसरे मैं आपकी ऋणी हूँ,—क्योंकि आँप अपने सम्बन्ध में कल बतला चुके हैं।"

"मैंने तो आपके प्रश्न करने पर बतलाया था।" सैनिन ने कहा।

मरिया सहसा उसकी ओर मुड़ी। "और आप यह नहीं जानना चाहते कि मैं किस प्रकार की स्त्री हूँ? कोई ताज्जुब नहीं।" उसने सोफ़े पर झुकते हुए कहा—"जिस आदमी की जल्द ही शादी होने वाली हो, प्रणयिनी के प्रति जिसका नया प्रेम हो और जो द्वन्द्व-युद्ध कर चुका हो···उसके विचार दूसरी ओर कैसे जा सकते हैं!"

इसके बाद वह बिल्कुल चुप हो गई और अपने सफ़ेद दाँतों के नीचे पंखे की डँडी दबाकर कुछ सोचने-सी लगी।

सैनिन के दिमाग़ में वही मादक विचार फिर चक्कर लगाने लगे, जिन्होंने गत गत दो दिनों से उसे उद्विग्न बना रखा था।

दोनों में बातचीत बहुत धीरे-धीरे हो रही थी; इससे सैनिन की विकलता और भी बढ़ गई।······

इस अवस्था का अन्त कब होगा?

निर्बल लोग किसी अवस्था का अन्त नहीं करते—वे सदा अन्त की प्रतीक्षा करते हैं।

स्टेज पर किसी ने ज़ोर से छींक मारी। लेखक ने छींक का पार्ट श्रोताओं को हँसने के लिए रखा था, और सचमुच इस छींक से दर्शक हँसकर लहालोट हो गए।

सैनिन को यह हँसी भी कान फाड़नेवाली प्रतीत हुई।

ऐसी अवस्था भी आई, जब सैनिन स्वयं इस बात को नहीं जान सका कि वह क्रुद्धावस्था में है या मुग्धता की दशा में; प्रसन्न है या खिन्न। यदि जेमा उसे इस हालत में देख पाती!

"सचमुच अजीब बात है," मरिया ने फिर कहा—"एक आदमी सर्द-मुहरी के साथ कहता है कि 'मैं अपनी शादी करने जा रहा हूँ।' पर भला कोई किसी से सर्द-मुहरी से यह नहीं कह सकता कि

'मैं समुद्र में कूदने जा रहा हूँ। फिर भी इन दोनों बातों में कितना महान् अन्तर है ? सचमुच अद्भुत बात है।"

आखिर सैनिन कुढ़ गया। "बड़ा अन्तर है श्रीमती मरिया !" उसने कहा—"अगर कोई तैर सकता है तो वह अपने-आपको यों-ही पानी में नहीं डाल देता; इसके अतिरिक्त······रही विवाह की विचित्रता, यदि आप इसके सम्बन्ध में······"

वह रुककर अपने होंठ चबाने लगा।

मरिया ने अपनी खुली बाँह पर पंखे की चोट की।

"कहते चलिए मित्री पॉलोविच, सुनाते चलिए—मैं समझ गई आप यह कहने जा रहे थे—'अगर आप इसके—अर्थात् अपनी शादी के—सम्बन्ध में विचार करें, तो इससे अनोखी और कोई बात न जँचेगी······आपके पति पोलजो को मैं लड़कपन से ही जानता हूँ!' क्यों आप यही कहने जा रहे थे न ?—आप तैरनेवाले ठहरे!" मरिया ने कहा।

"माफ़ कीजिए!" सैनिन ने कहना शुरू किया······

"क्या यह सच नहीं है ?" मरिया ने बीच ही में टोककर कहा—"मेरी आँखों की ओर देखकर कहिए कि मेरी बात ग़लत है!"

सैनिन चकरा गया कि अब क्या जवाब दे। "अच्छा, अगर आप ज़िद ही कर रही हैं।" आखिर उसने कहा।

मरिया ने सिर हिलाकर कहा—"बिल्कुल यही बात है। आपने, जो ऐसे तैराक हैं, अपने अन्तरात्मा से पूछा कि एक ऐसी स्त्री के हक़ में जो दरिद्र भी नहीं है······और बेवक़ूफ़ भी नहीं है···साथ ही कुरूपा भी नहीं है ऐसी विलक्षण बात का कारण क्या हो सकता है ? शायद इसमें आप दिलचस्पी नहीं लेते। मैं आपको कारण अभी नहीं फिर बता दूँगी, पर इण्टर्वल खतम हो चुका है। मुझे डर है कोई इधर न आ जाए।······"

मरिया अभी अपना वाक्य मुश्किल से समाप्त कर पाई होगी

कि किसी ने आकर दरवाज़ा खोला और बाक्स पर एक सुन्दर, सुडौल, अधेड़, पर दन्तहीन पुरुष पसीने से तर आँखों पर सुनहरा चश्मा लगाए आ पहुँचा। उसने मरिया की ओर देखकर बुरी तरह से खीसें निकाली और सिर झुकाया··· ।

मरिया ने अपना रूमाल हिलाते हुए कहा—"मेरी तबीयत ठीक नहीं है······"

वह आदमी सूखी हँसी हँसने और हिचकी-सी लेने के बाद कुछ बड़बड़ाकर वहाँ से चला गया।

"यह क्या बला थी ?" सैनिन ने पूछा।

"वीसबादन का एक समालोचक है—साहित्यिक अभिरुचि का आदमी है—भाँड़ों की तरह अमीरों की तारीफ़ करता फिरता है—एक सट्टेबाज़ के यहाँ नौकर भी है। ऐसे आदमियों की नस-नस में ज़हर होता है। मुझे भय है, ऐसे आदमी शरारत करने से भी नहीं चूकते। जाकर सब जगह कह आएगा कि मैं थियेटर में हूँ। ख़ैर, इससे क्या हो सकता है।"

गाने के साथ पर्दा फिर उठा······फिर स्टेज पर शोर-शराबा जारी हो गया।

"अच्छा," मरिया ने फिर सोफ़े पर बैठते हुए कहा—"आप अपनी भावी प्रियतमा का सहवास छोड़कर मेरे साथ बैठकर मुझे बाधित कर रहे हैं—इस तरह तिरछी नज़रों से न देखिए—मैं आपको समझती हूँ और आपको अभीष्ट स्थल पर जाने देने की प्रतिज्ञा भी कर चुकी हूँ; पर अब मेरी आत्म-कथा सुनिए। आप जानते हैं, मुझे सब से अधिक क्या चीज़ पसन्द है ?"

"स्वतन्त्रता।" सैनिन ने साहसपूर्वक कहा।

मरिया ने अपना हाथ सैनिन के हाथ पर रख दिया।

"हाँ, मित्री पॉलोविच," उसने एक ऐसे स्वर में कहा, जिसमें सहृदयता और गम्भीरता की पुट थी—"स्वतन्त्रता सर्वाधिक और

सर्व-प्रथम प्रिय वस्तु है। यह न समझिये मैं गर्व कर रही हूँ—कोई प्रसंसा की बात नहीं कह रही हूँ, पर मैं जब तक जीऊँगी यह(स्वतन्त्रता) मेरे साथ रहेगी। मैं समझती हूँ, बचपन में मैंने ग़ुलामी के भीषण दृश्य देखे हैं और ग़ुलामी के दुःख स्वयं भी उठाए हैं—मेरे शिक्षक गैस्टन ने मेरी आखें खोल दी थीं। अब शायद आप समझ गए होंगे कि मैंने सिड्रोइच से शादी क्यों की। उनके साथ मैं स्वतन्त्र हूँ—पूर्ण स्वतन्त्र और हवा की तरह स्वतन्त्र!······शादी के पहले भी मैं यह जानती हूँ कि उनके साथ मैं कॉसेक्सों[1] की-सी स्वतन्त्रता का उपयोग करूँगी।"

मरिया बोलते-बोलते रुक गई और उसने पंखे को अलग फेंक दिया।

"एक बात मैं आपको और बतलाऊँगी। विचार करने में मेरी काफ़ी रुचि है···इसमें बड़ा आनन्द आता है और सच पूछिए तो हमें मस्तिष्क दिए ही इसीलिए गये हैं कि हम विचार करें, पर मैं कभी इस बात पर विचार नहीं करती कि मैं क्या कर रही हूँ, कष्ट आने पर मैं अपने ऊपर तरस भी नहीं खाती—ज़रा भी नहीं। इस संसार में मुझसे कोई जवाब तलब करने वाला नहीं है और स्वर्ग में (उसने उँगली ऊपर उठाकर कहा)—जो होगा सो होगा, जब वहाँ मेरा विचार होगा तो मैं 'मैं' नहीं रहूँगी! आप सुन रहे हैं मेरी बात? आप उकता तो नहीं गए?"

सनिन झुककर बैठा था। उसने सिर उठाकर कहा—"मैं उकताया बिल्कुल नहीं हूँ श्रीमती मरिया, उत्सुकतापूर्वक आपकी बातें सुन रहा हूँ। सिर्फ़ मैं···यह ज़रूर सोच रहा हूँ···कि ये सब बातें आप मुझसे क्यों कह रही हैं?"

१ कॉसेक्सों (कज्ज़ाक-लोगों) की स्त्रियाँ बिल्कुल स्वतन्त्र रहती हैं; उन पर पति कोई बन्धन नहीं डाल सकता।

मरिया ज़रा सरक कर सोफ़े के किनारे बैठ गई।

"आप को ताज्जुब हो रहा है ?···आप अनुमान करने में सुस्त हैं, या लज्जा का अनुभव कर रहे हैं ?"

सैनिन ने अपना सिर और ऊपर उठा लिया।

"मैं यह सब आपको बतला रही हूँ," मरिया ने स्थिर स्वर में अपने मुखाकृति के भावों के प्रतिकूल कहा—"इसका कारण यह है कि मैं आपको बहुत चाहती हूँ, आप आश्चर्य न कीजिए, मैं दिल्लगी नहीं कर रही हूँ—जब से आपसे मुलाकात हुई है, मैं देखती हूँ तभी से मेरी ओर से आपकी कुछ अरुचि-सी है······अरुचि भी नहीं, ·· इस पर मैं ध्यान भी न देती······। इसीलिए मैं आपको यहाँ लिवा लाई और अकेली बैठकर आपसे ऐसी खुलकर बात कर रही हूँ······ हाँ, ऐसी खुलकर ! मैं झूठ नहीं कह रही हूँ। और देखिये, मैं जानती हूँ कि आप दूसरी स्त्री के प्रेम में पड़ चुके हैं और उससे शादी करने भी जा रहे हैं····· मेरी तटस्थता पर दया कीजिए ! अब आप ख़ुशी मना सकते हैं !"

वह हँसने लगी, पर सहसा रुक गई। वह इस प्रकार चुप हो गई मानो उसे अपनी ही बात पर आश्चर्य-सा हुआ—उसकी साहस और सुन्दरता से रंजित आँखों से कुछ-कुछ भीरुता और उदासीनता के भाव टपकने लगे।

"साँपन है यह रमणी, साँपन!" सैनिन मन-ही-मन सोच रहा था—"पर कैसी सुन्दर साँपन है यह !"

"मुझे ज़रा दूरबीन तो दीजिए," मरिया ने सहसा कहा—"मैं देखना चाहती हूँ कि यह ऐक्ट्रेस क्या सचमुच ऐसी कुरूपा है। मेरी बात सुनकर लोग यही समझेंगे कि इस (ऐक्ट्रेस) को ऐसी बदसूरत इसलिए बनाया गया है, जिससे नवयुवक दर्शकों के दिमाग़ न पलट जाएँ।"

सैनिन उसे दूरबीन देने लगा तो मरिया ने दूरबीन के साथ उस

का हाथ भी अपने हाथ में पकड़कर खींच लिया।

"कृपया क्रोध न कीजिएगा," मरिया ने मुस्कराकर धीरे-से कहा—'मुझे कोई बन्धन नहीं डाल सकता, पर देखिए, मैं भी किसी को बन्धन में नहीं डालती। मैं स्वतन्त्रता को प्रेम करती हूँ, पर मैं कर्त्तव्य को कोई चीज़ नहीं मानती। ज़रा इधर खिसकिए, जिससे तमाशा अच्छी तरह देखा जा सके।"

मरिया ने दूरबीन आँख से लगाई। सैनिन ने भी उसके बगल बैठकर स्टेज पर दृष्टि डाली, पर वास्तव में वह मरिया की कही हुई सारी बातों पर—विशेषकर अभी क्षण-भर पहले कही हुई बात पर—विचार कर रहा था। इच्छा न होते हुए भी वह मरिया की सम्पन्न और सुगन्ध-सिंचित देह उष्णता और सौरभ ग्रहण कर रहा था!

४०

खेल घण्टे-भर बाद समाप्त होने वाला था। मरिया और सैनिन ने कुछ ही देर बाद रंग-मञ्च की ओर देखना बन्द कर दिया और परस्पर पूर्ववत बातचीत करने लगे, अन्तर केवल यही था कि इस बार सैनिन पहले की तरह कम चुप रहा। भीतर-ही-भीतर वह अपने-आप पर और मरिया पर क्षुब्ध हो रहा था। उसने मरिया के सिद्धान्तों का खण्डन करना इस प्रकार शुरू किया! मानो मरिया सचमुच कोई सिद्धान्तवादिनी थी। उसने मरिया के साथ तर्क करना शुरू कर दिया। मरिया इस पर मन-ही-मन खुश हुई कि जब तक आदमी चुप और उदासीन रहता है, तब तक उससे कुछ आशा नहीं की जा सकती, पर जब उसने बहस करना आरम्भ किया तो जल्दी या देर में ज़रूर जाल में फँस सकता है। सैनिन चारे पर मुँह मार चुका, और धीरे-धीरे लज्जालु-भाव त्याग रहा था। मरिया ने उस

की बातों का जवाब दिया, हँसी, स्वीकार किया, ख़ुश हुई, और उस पर आक्रमण भी किया ।···इस बहस के समय दोनों के चेहरे एक-दूसरे के पास-पास हो गए, सैनिन अब उसकी आँखों से आँखें मिलाने में भी नहीं हिचकिचाता था !···वे आँखें अब उसकी ओर और तरह से देखती मालूम होती थीं ! जवाब में सैनिन भी मुस्कराने लग गया—मुस्कराहट सभ्यतापूर्ण होने पर भी मुस्कराहट थी । मरिया के लिए यह एक ऐसा अलभ्य लाभ था कि अब वह व्यक्तिगत सम्बन्ध, कर्त्तव्य, प्रेम और विश्वास की पवित्रता पर बातचीत करने लगी !···यह स्पष्ट है कि किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इस प्रकार की बातें आरम्भ में···बड़ी उपयोगी सिद्ध होती हैं ।···

जो लोग मरिया को अच्छी तरह जानते थे, उनका यह दृढ़ मत था कि यदि कभी वह स्त्रियोचित लज्जा और सुशीलता के भाव प्रगट करती थी (यद्यपि ऐसा अवसर बहुत ही कम आया करता था) तो फिर अवस्था बड़ी ख़तरनाक हो जाती थी ।

सैनिन के लिए प्रकटतया अब यही अवस्था आ गई है ।···यदि क्षण-भर के लिए भी उसे एकाग्र चित्त होकर विचार करने का अवसर मिलता, तो उसे अपने ऊपर घृणा हुए बिना न रहती; पर अब उसे एकाग्र-चित्त होने पर अपने ऊपर रोष प्रकट करने का अवसर ही नहीं मिला ।

मरिया ने अवसर नहीं गँवाया । सैनिन को वह अवस्था बहुत अच्छी लगी । यही कहा जा सकता है कि कोई भी मनुष्य अपने निर्माण और विध्वंस को नहीं जानता !

खेल समाप्त हुआ । मरिया ने सैनिन से शाल उढ़ाने के लिए कहा और उसने चुपचाप उसका कोमल शाल मरिया के सुन्दर कन्धों पर लपेट दिया । फिर मरिया ने सैनिन का हाथ पकड़ लिया और दोनों दरवाज़े से निकलने लगे । अकस्मात् उसी दरवाज़े से डनहाफ़ भी उनके सामने भूत की तरह आ निकला—मरिया ने पीछे मुड़कर

देखा, तो वोसबादन का वही समालोचक, जो बॉक्स के पीछेवाले कमरे में उसके पास गया था, क्रूरतापूर्ण दृष्टि से देखते हुए आता दिखाई दिया।

"मैं आपकी गाड़ी लिवा लाऊँ महाशया ?" फ़ौजी अफ़सर डनहॉफ़ ने हृदय के असली भाव को दबाते हुए कृत्रिम नम्रता के साथ मरिया से पूछा।

"नहीं, धन्यवाद," उसने जवाब दिया········" मेरा आदमी लिवा लाएगा—ठहरिए !" अन्तिम शब्द उसने गर्वपूर्ण धीरे स्वर में कहा और सैनिन का हाथ छोड़कर वह आगे बढ़ गई।

"तुम मुझे क्यों घूर रहे हो ? भाड़ में जाओ !" डनहॉफ़ ने समालोचक को डाँटकर कहा। वह किसी-न-किसी पर अपना क्रोधोद्गार प्रकट करना चाहता था।

समालोचक कुछ बड़बड़ाकर वहाँ से खिसक गया। मरिया का चपरासी फ़ौरन् उसकी गाड़ी लिवा लाया। वह जल्दी से गाड़ी में जा बैठा। सैनिन भी उसके पास ही जा बैठा। गाड़ी के दरवाज़े बन्द हुए। मरिया क़हक़हा लगाकर हँस पड़ी।

"आप हँस क्यों रही हैं ?" सैनिन ने पूछा।

"अच्छा, माफ़ कीजिएगा,······पर मुझे एक ख़याल आ गया—अगर डनहॉफ़ के साथ······मेरे लिए······आप फिर द्वन्द्व-युद्ध करें ··क्या यह आश्चर्यजनक बात न होगी ?"

"क्या आपकी डनहॉफ़ के साथ मित्रता है ?" सैनिन ने पूछा।

"उसके साथ ? उस लड़के के ? वह तो मेरे चेलों में से है। आप उसके लिए फ़िक्र न करें ?"

"मैं फ़िक्र बिलकुल नहीं कर रहा हूँ।"

मरिया ने कहा—"अच्छा, तो कल सुबह हम दोनों घोड़ों पर शहर के बाहर चलेंगे। बढ़िया घोड़े ले चलेंगे। फिर हम लोग घर आकर सब व्यापार की बातें खतम कर देंगे, और फिर समाप्त !

आश्चर्य न कीजिए, इसे सनक या पागलपन न समझिए—इसकी पूर्ण सम्भावना है, | पर केवल यही कह दीजिए कि स्वीकार है !"

मरिया ने अपना चेहरा सैनिन की ओर कर दिया। गाड़ी में अँधेरा था; पर उसकी आँखें चमक रही थीं।

"अच्छा, स्वीकार करता हूँ।" सैनिन ने ठण्डी साँस लेकर कहा।

"ओह, आप तो साँस खींच रहे हैं !" मरिया ने मुँह बनाकर कहा—"इसका यह अर्थ है जिस तरह आपने आरम्भ किया है, उसी तरह अन्त तक निभाइए। पर नहीं, नहीं······आप बड़े मोहक, आकर्षक और अच्छे हैं ! मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा। यह है मेरा दाहिना हाथ ! दस्ताना निकाल रक्खा है। लीजिए, पकड़िए और इसके संस्पर्श पर विश्वास रखिए। मैं कैसी स्त्री हूँ, यह मैं ख़ुद नहीं जानती, पर इतना जानती हूँ कि मैं ईमानदार हूँ और मेरे साथ व्यवहार किया जा सकता है !

सैनिन ने एक अज्ञात अवस्था में पड़कर उसका हाथ पकड़कर होठों से लगा लिया। सहसा मरिया शान्त हो गई और गाड़ी के खड़े हो जाने तक कुछ नहीं बोली।

वह गाड़ी से उतरने लगी।······यह क्या ? मालूम नहीं सैनिन की कल्पना थी या वास्तविक तथ्य, उस (सैनिन) को ऐसा मालूम हुआ जैसे किसी ने उसके गाल पर उष्ण चुम्बन की छाप लग दी।

"अच्छा, फिर कल !" मरिया ने गाड़ी के बाहर निकलकर ज़ीने पर खड़े-खड़े कहा। सुनहली पोशाक पहने हुए दरबान ऊपर से रोशनी का लैम्प लेकर उसके पास आ गया था।

सैनिन ने अपने कमरे में आकर देखा तो मेज़ पर जेमा की भेजी हुई एक चिट्ठी पड़ी थी। क्षण-भर के लिए उसके हृदय में अद्भुत निराशा छा गई, पर उसने तुरन्त आत्म-प्रवंचना के साथ प्रसन्नता का ढोंग रचकर पत्र खोला। पत्र में केवल कुछ ही पंक्तियाँ थीं। जेमा

ने बातचीत के 'सफल आरम्भ' पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए उसे धैर्य धारण करने का आदेश दिया था। साथ ही यह भी लिखा था कि घर पर सब सानन्द हैं और उसके वापस आने की बाट देख रहे हैं। सैनिन को पत्र कुछ रूखा मालूम पड़ा—तो भी उसने काग़ज़ कलम लेकर...' पर फिर इरादा बदल दिया—"क्यों लिखूँ ? कल ही तो वापस जाना है.....!"

वह बिछौने पर पड़कर सोने की चेष्टा करने लगा। अगर वह ठहरकर सोचता तो ज़रूर ही उसके मन में जेमा का विचार आता, पर किसी कारण से वह उसके...सम्बन्ध में सोचने से शर्माता था। उसकी आत्मा भीतर-ही-भीतर आन्दोलित हो रही था; पर यह सोच कर उसने अपने हृदय को आश्वासन दिया कि कल सब झगड़े दूर हो जाएँगे और इस पर-दार दिमाग़वाली स्त्री से छुटकारा मिल जाएगा और इस तरह की बेवक़ूफ़ी से पिण्ड छूट जाएगा...!"

दुर्बल-हृदय लोग अपने-आप से मानसिक वार्तालाप करते हैं, जिसमें वे बड़े-बड़े प्रबल भावों को उत्सुकतापूर्वक प्रकट करते है।

४१

सैनिन जिस समय बिछौने पर लेटा, उसके मन की स्थिति वास्तव में ऐसी ही थी; पर दूसरे दिन प्रातःकाल जब मरिया ने आकर अधीरता-पूर्वक घोड़ा हाँकने के कोड़े से उसका दरवाज़ा खटखटाया, तो उसके हाथ में कमर-पेटी, कन्धे पर नक़ाब, घुँघराले बालों पर छोटी टोपी और होठों तथा आँखों में आमन्त्रण-सूचक मुस्कराहट देख कर सैनिन के मन में क्या विचार उठे, यह वर्णनातीत है।

"आप तैयार हैं ?" मरिया ने आनन्द-मग्न स्वर में पुकारकर कहा।

सैनिन ने कोट में बटन लगाए, और चुपचाप सिर पर टोपी

रखी । मरिया ने उसकी ओर चमकती हुई नज़र डाली और सिर हिलाकर ज़ीने के नीचे उतर गई। सैनिन उसके पीछे शीघ्रतापूर्वक दौड़ा ।

ज़ीने के नीचे घोड़े कसे-कसाए प्रतीक्षा कर रहे थे—एक पली हुई सुन्दर घोड़ी मरिया के लिए थी, एक मोटा-ताज़ा और बड़े क़द का सुन्दर घोड़ा सैनिन के लिए, और एक और घोड़ा साईस के लिए था । मरिया फुर्ती के साथ घोड़ी पर सवार हो गई। घोड़ी ने नई होने के कारण कुछ अड़ियलपन दिखाया, पर मरिया एक चतुर अश्वारोहिणी थी, उसने उसे क़ाबू में कर लिया । उन्होंने पोलज़ो महाशय से बिदा ली, जो झरोखे से इनकी बाहर जाने की तैयारी देख रहे थे । सैनिन भी अपने घोड़े पर चढ़ा । मरिया ने पोलज़ो को प्रणाम किया और फिर घोड़ी को एक चाबुक लगाई । चाबुक लगाते ही घोड़ी ने अगले पाँव ऊपर उठा लिए। सैनिन ने पीछे से मरिया की ओर नज़र डाली उस समय मरिया का लावण्यमय शरीर स्फूर्ती से भरा हुआ था और वह सवारी का पूरा कौशल दिखाकर घोड़ी को आगे बढ़ा रही थी । मरिया ने आँखों के इशारे से सैनिन को घोड़ा पास ले आने को कहा । सैनिन घोड़ा आगे बढ़ाकर उसके पास ले गया ।

"देखिए, यह कैसे मज़े की बात है," मरिया ने कहा—"मैं आपके जाने के पहले अन्तिम बार कहती हूँ—आप बड़े ख़ूबसूरत हैं, और आपको इसके लिए अफ़सोस भी न करना पड़ेगा ।"

यह कहकर उसने इस ढँग से सिर हिलाया, मानो वह अपने शब्दों पर पूरा ज़ोर देकर उनका समर्थन करना चाहती है।

इस समय मरिया ऐसी प्रसन्न नज़र आती थी कि सैनिन को इससे बड़ा आश्चर्य हुआ । उसके चेहरे से बच्चों की-सी वह तुष्टिदायक हँसी टपक रही थी, जो बहुत अधिक प्रसन्न होने पर दिखाई देती है । शहर-पनाह के बाहर निकल जाने तक वे घोड़ों को धीरे-धीरे ले गए, पर बाहर निकलते ही ख़ाली सड़क पर तेज़ी से दौड़ने लगे।

वसन्त का सुन्दर-सुहावना समय था—हवा के तेज़ झोंके उनके चेहरों को स्पर्श कर रहे थे और कानों में गूँज रहे थे। इस दौड़ के लिए समय, अवस्था और परिस्थिति सब-कुछ अनुकूल थी, इसलिए दोनों इसमें काफ़ी आनन्द ले रहे थे।

मरिया ने घोड़ी की चाल धीमी करदी और टहलने की रफ़्तार पर चलने लगी। सैनिन ने भी वैसा ही किया।

"यही चीज़," मरिया ने गम्भीर और आनन्द-सूचक साँस खींचकर कहा—"यही चीज़ जीवन के लिए आवश्यक है। अगर हम अपनी अभीष्ट चीज़ प्राप्त करने में सफल हो जाएँ, तो फिर असम्भव कुछ भी नहीं होता—दिल और आत्मा के आवेग के साथ आनन्द-रस की अन्तिम बूँद तक को पीना चाहिए!" उसने अपना हाथ अपने गले पर रखते हुए फिर कहा—"इसके बाद हृदय में आनन्द और सौन्दर्य की भावना भर जाती है! इस समय मैं···ऐसे ही आनन्द का अनुभव कर रही हूँ! मेरे हृदय में समस्त संसार को आलिंगन कर लेने की भावना जाग्रत हो रही है! नहीं, समस्त संसार को नहीं ·····उस आदमी को मैं अब······।" उसने अपने कोड़े के इशारे से सड़क के किनारे चीथड़े लपेटकर बैठे हुए एक बुड्ढे आदमी को दिखाते हुए कहा—"पर मैं ऐसे आदमी को ख़ुश कर सकती हूँ। यह लो!" उसने जेब से रुपयों की थैली निकाली और जर्मन भाषा में पुकारकर बुड्ढे के पास फेंक दी। थैली सड़क पर गिरते ही खनक उठी। बुड्ढा आश्चर्य-चकित होकर खड़ा हो गया और मरिया ने तेजी के साथ घोड़ा आगे की ओर बढ़ा दिया।

"आपको घुड़सवारी में इतना आनन्द आता है?" सैनिन ने अपना घोड़ा मरिया के बराबर ले जाते हुए कहा।

मरिया ने घोड़े की चाल धीमी करादी।

"मैं बुड्ढे के धन्यवाद से बचना चाहती थी इसीलिए आगे बढ़ आई। अगर कोई मुझे धन्यवाद देता है तो मेरे आनन्द का नाश हो

जीता है। देखिए, मैंने यह काम उस बुड्ढे के लिए नहीं बल्कि अपने लिए किया है। वह मुझे क्यों धन्यवाद दे ? मैंने सुना नहीं, आपने क्या पूछा था ?"

"मैंने पूछा था......मैं यह जानना चाहता था कि आज आप इतनी प्रसन्न क्यों हो रही हैं ?"

"आप जानते हैं," मरिया ने सैनिन के प्रश्न की उपेक्षा करते हुए कहा—"मैं इस साईस से तंग आ गई हूँ, जो हम लोगों के पीछे आ रहा है—इसे हम लोगों की हरएक बात पर आश्चर्य होता है। इससे कैसे पिण्ड छुड़ाया जाए ?" उसने जेब से फौरन एक पाकेट बुक निकाली। "एक चिट्ठी देकर इसे शहर भेज दें ? नहीं......इससे काम नहीं बनेगा। वह सामने सराय-सी क्या दीख रही है ?"

सैनिन ने उसकी बतलाई हुई दिशा में देखकर कहा—"हाँ, मेरी समझ में सराय ही है।"

"बहुत अच्छा। मैं इसे वहीं ठहराकर हम लोगों के वापस आने तक शराब आदि पीने के लिए कह दूँगी और हम आगे चले चलेंगे।"

"पर इससे वह क्या सोचेगा ?"

"क्या पर्वाह है ? और वह सोच ही क्या सकता है ? बैठा-बैठा शराब पीएगा—बस। आग्र सैनिन, (पहले-पहले उसने सैनिन को इस रुप में सम्बोधन किया) बढ़ाओ घोड़े को ?"

जब वे सराय पर पहुँचे तो मारिया ने साईस को बुलाकर उपरोक्त आदेश दिया। साईस अंग्रेज़ जाति का था। उसने चुपचाप टोपी पर हाथ फेरा और घोड़े से उतरकर उसे सराय की ओर ले चला।

"अच्छा अब हम स्वतन्त्र हो गए, जैसे चिड़ियाँ आज़ाद होकर हवा में उड़ती हैं..." मरिया ने धीर से कहा—"किधर चलना चाहिए अब हमें ? पूरब, पच्छिम, उत्तर या दक्खिन ?—मेरी ओर देखो ! मैं वैसी ही लगती हूँ, जैसे ताजपोशी के समय हंगरी का बादशाह था। (कोड़े को चारों ओर घुमाते हुए)—चारों ओर मेरा साम्राज्य

है ! नहीं,—देखो वह पर्वत और जंगल का रमणीय दृश्य ! चलो वहीं चलें—वहीं पहाड़ पर !!"

सड़क छोड़कर मरिया अपनी घोड़ी एक तंग रास्ते की ओर ले गई, जो पहाड़ों की ओर जाती थी। सैनिन ने भी घोड़ा उसके पीछे लगा दिया।

४२

धीरे-धीरे वे दोनों वहाँ पहुँचे, जहाँ रास्ता बहुत तंग हो गया था और कुछ दूर आगे जाकर एक पहाड़ी जल-धारा के किनारे समाप्त हो गया था। सैनिन ने लौटने की राय दी; पर मरिया ने कहा—"मैं पहाड़ तक पहुँचना चाहती हूँ ! हम लोग सीधे चले चलेंगे, जैसे पक्षी उड़कर पहुँच जाते हैं!" और उसने घोड़ी को कुदाकर धारा पार कर ली। सैनिन को भी वैसा ही करना पड़ा। धारा के उस पार एक बड़ा मैदान था, जो पहले सूखा-सा नजर आया, पर बाद में कुछ गीला और दलदल-पूर्ण मिला। जगह जगह पानी के चोहले भरे थे। मरिया बेरोक अपनी घोड़ी आगे बढ़ाती जा रही थी—आखिर उसने सैनिन से हँसकर कहा—"आओ, हम लोग शरारती बच्चे बन जाएँ !"

"जानते हो ?" उसने सैनिन से पूछा—"इस तरह की सैर का क्या अर्थ है ?"

"हाँ।" सैनिन ने जवाब दिया।

"मेरे एक शिकारी चाचा थे," मरिया ने कहा—"मैं उन के साथ वसन्त ऋतु में शिकार को जाया करती थी। कैसा मज़ेदार समय था ! आज मैं तुम्हारे साथ हूँ।" कठिनाई सिर्फ़ यही है कि तुम रूसी होकर भी इटैलियन लड़की से शादी करना चाहते हो। तुम्हारे लिए यह अफ़सोस की बात है ? ···यह क्या ? दूसरा नाला आया ! इसे भी

कूद चलें !" घोड़ी कूदी । मरिया की टोपी नाले में गिर पड़ी और उसके घुँघराले बाल छूटकर कन्धे पर बिखर गए। सैनिन टोपी निकालने के लिए घोड़े से उतरना चाहता था; पर मरिया ने चिल्लाकर कहा—"रहने दो । मैं ख़ुद निकालूँगा ।" और सचमुच काठी से ज़रा झुककर उसने कोड़े की नोक से टोपी निकाल ली और उसे पोंछकर सिर पर रखलिया; पर बाल ज्यों के त्यों बिखरे रहने दिए। फिर घोड़ी आगे बढ़ाई और नीची-ऊँची ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पार करते हुए दौड़ाना जारी रक्खा—सैनिन ने भी घोड़ा उसके बग़ल में लगा दिया और वह आश्चर्य के साथ उसकी ओर देखने लगा। अद्भुत स्त्री है ! सीधे सामने की ओर देखती है और ऐसा मालूम होता है कि जिस चीज़ पर इसकी नज़र पड़ती है, उसी पर क़ाबू कर लेती है। "सैनिन !" उसने चिल्लाकर कहा—"बढ़े चलो, ढीलापन न दिखाओ······मैं जीवित हूँ !" उसने पूरे शौर्य के साथ अपनी घोड़ी दौड़ाई। ऐसा मालूम होता था कि वह भय और थकावट के साम्राज्य से बाहर विचरण कर रही है !

आखिर मरिया की घोड़ी बहुत थक गई। सैनिन का घोड़ा भी हाँफते-हाँफते बेज़ार हो गया।

"तुम्हें यह काम पसन्द है ?" मरिया ने एक अद्भुत और धीमी आवाज़ से पूछा।

"हाँ पसन्द है।" सैनिन ने अपने उबलते हुए ख़ून के वेग को रोकते हुए कहा।

"अभी इतने ही से बस न समझलेना, ज़रा ठहरो !" उसने अपना हाथ उठाया। लगाम खींचते-खींचते उसका दस्ताना फट गया था।

"मैंने तुम्हें बतलाया था कि हमें जंगल और पहाड़ तक चलना है······वह देखो, पहाड़ दीख रहे हैं !!" जंगल से ढका हुआ पहाड़ अब वहाँ से केवल दो सौ गज़ की दूरी पर रह गया था।"देखो, इधर

से सड़क गई है—इसी पर होकर आगे चलना चाहिए। अब सिर्फ मामूली चाल से चलेंगे। घोड़े भी ज़रा सुस्ता लें।"

दोनों आगे बढ़े। मरिया ने अपने बालों को समेटकर पीछे कर लिया, फिर उसने दस्तानों की तरफ़ ध्यान दिया, और उन्हें निकाल लिया। "मेरे हाथों से चमड़े की बदबू आएगी," उसने कहा—"इसका ख़याल न करना ?"……यह कहकर मरिया मुस्कराई, सैनिन के भी होठों पर मुस्कराहट आगई। दोनों की इस संयुक्त सैर ने उन में मैत्री-भाव पैदा कर दिया था।

"तुम्हारी उम्र क्या है ?" सहसा मरिया ने पूछा।

"बाईस बरस।"

"सच ? मैं भी बाईस बरस की हूँ। अच्छी उम्र है ! दोनों को मिलाओ। आपकी उम्र ज्यादा मालूम होती है। गर्मी बहुत है शायद इसलिए भी, पर मैं तो लाल हो रही हूँ, क्यों?"

"गुलाब-जैसी !"

मरिया ने रूमाल से अपना चेहरा पोंछा। "ज़रा जंगल में पहुँच जाएँ तब ठंड मिलेगी। यह जंगल पुराने दोस्तों की तरह पुराना है। तुम्हारे कोई दोस्त है ?"

सैनिन ने ज़रा सोचने के बाद कहा—"हाँ,……बहुत थोड़े, वह भी सच्चे दोस्त नहीं हैं।"

"मेरे सच्चे दोस्त हैं—पर पुराने नहीं हैं। यह घोड़ी भी एक दोस्त है ! किस सावधानी के साथ ले चलती है ! बड़ा अच्छा मौसम है ! क्या यह सम्भव है कि मैं परसों यहाँ से पेरिस के लिए रवाना हो जाऊँ ?"

"हाँ,……सम्भव है !" सैनिन ने धीरे से कहा।

"और तुम फ्रैंकफ़ोर्ट के लिए ?"

"मैं तो ज़रूर जाऊँगा।"

"अच्छा, क्या हर्ज है ? ईश्वर तुम्हारी तक़दीर चेताये। कुछ

भी ही, आज तो हम लोग साथ हैं……साथ……!"

घोड़े जंगल के किनारे पहुँचकर उस में घुसने लगे। बन की सघन और शीलता छाया ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया।

' पर, इधर तो देखो यह तो स्वर्ग है !" मरिया ने चिल्लाकर कहा—"और आगे सघन छाया में चलो।"

घोड़े धीरे-धीरे और आगे बढ़े। छाया सघन होती जा रही थी और रास्ता तंग। वृक्षों से स्पर्श करती हुई फूलों और वनस्पतियों की अनेक प्रकार की शीतल मन्द सुगन्ध से दोनों के मस्तिक भर गए। रास्ते के दोनों तरफ़ पर्वत-श्रेणियाँ थीं, जो हरियाली से ढकी हुई थीं।

"ठहरो !" मरिया ने कहा—"मैं इस मखमली घास पर बैठकर सुस्ताना चाहती हूँ। मुझे घोड़ी से उतारो।"

सैनिन अपने घोड़े ने उतर पड़ा और दौड़कर उसे उतारने के लिए गया। मरिया उसके कन्धे पर झुककर नीचे उतरी और घास से ढके हुए एक चौरस ख़ित्ते पर बैठ गई। सैनिन दोनों जानवरों की लगामें पकड़े उसके सामने खड़ा रहा।

मरिया ने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा……"सैनिन क्या तुम इसे भूल सकोगे ?" उसने कहा।

सैनिन को कल थियेटर से लौटते समय गाड़ी में घटित…घटना की याद आ गई।

"मुझे अपने बाल ठीक करने हैं।" मरिया ने फिर कहा। उसने अपनी टोपी उतार ली और चुपचाप गम्भीरता-पूर्वक बाल सँवारने लगी। सैनिन उसके सामने खड़ा हो गया……इस समय उसका सारा शरीर महीन कपड़े के अन्दर दीख रहा था।

सैनिन काँप उठा और घबरा-सा गया। उसे ऐसा मालूम हुआ कि वह अपनी चेतना-शक्ति खो रहा है……सचमुच वह मन्त्र-मुग्ध-सा हो गया और उसके हृदय में केवल एक चीज़…एक विचार, एक

इच्छा बाक़ी रही। मरिया ने अपनी उत्सुक दृष्टि उस पर डाली।

"अब सब ठीक है," उसने सिर पर टोपी रखते हुए कहा—"क्या तुम बैठोगे नहीं ? यहीं ! नहीं, जरा ठहरो। ......मत बैठो ! यह क्या ?"

पेड़ों की ऊँची चोटियों से गर्जने की एक अजीब आवाज़ आई।

"क्या बिजली गिरी है ?"

"ऐसा ही मालूम होता है।" सैनिन ने जवाब दिया।

"ओह, यह तो बहुत अच्छा हुआ ! इस की तो और ज़रूरत थी !" मरिया ने कहा एक बार फिर सुनाई देने के बाद वह आवाज़ बन्द हो गई। "शाबास ! तुम्हें याद है, कल मैंने 'एनील्ड' की चर्चा की थी ? वे भी जंगल में तूफान के झोंके में आ गये थे। पर अब हमें यहाँ से चलना चाहिए।" वह खड़ी हो गई। "मेरी घोड़ी इधर लाओ......अपना हाथ मुझे दो। हाँ मैं कुछ ऐसी भारी नहीं हूँ !"

वह चिड़िया की तरह फुदककर घोड़ी पर चढ़ गई। सैनिन भी घोड़े पर सवार हुआ।

"क्या अब घर चल रही हैं ?" सैनिन ने अशान्त स्वर में पूछा।

"हाँ, ज़रूर !" मरिया ने लगाम खींचते हुए ज़रा हुक्म-सा चलाते हुए कहा—"मेरे पीछे-पीछे आओ !" वह बढ़कर सड़क पर आ गई और एक लाल रंग के क्रॉस को पार करके नीची जगह पर पहुँचीं, जहाँ से कुछ चढ़ाई के बाद सड़क का चौराहा मिला। चौराहे से फिर दाहिनी ओर मुड़कर वह पहाड़ की ओर बढ़ी...।

चार घंटे बाद तीनों—"मरिया, सैनिन और घोड़े की काठी पर ऊँघता हुआ साईस—वीसबादन के होटल को वापिस आए। पोलज़ो ओवर-सियर के लिए लिखा हुआ पत्र लेकर सामने आया। ध्यानपूर्वक मरिया के चेहरे की ओर देखकर वह कुछ नाराज़-सा होकर बोला "आप यह नहीं कह सकतीं कि अपने बाज़ी जीत ली है ?"

मरिया ने जवाब में सिर्फ़ खवे हिला दिये।

उसी दिन दो घंटे बाद सैनिन अपने कमरे में मरिया के सामने एक अभागे पतित की भाँति खड़ा था······

"तुम कहाँ जाओगे प्यारे ?" मरिया ने पूछा—"पेरिस या फ्रैंकफ़ोर्ट ?"

"जहाँ कहीं तुम चलोगी वहीं चलूँगा और जब तक तुम मुझे खदेड़ न दोगी तुम्हारा साथ न छोड़ूँगा।" सैनिन ने निराशापूर्वक कहा और हाथ आगे बढ़ाकर मरिया को गोद में पकड़ना चाहा। मरिया ने सैनिन के सिर के बाल पकड़कर उसे दूर हटा दिया और इस प्रकार अपने आपको छुड़ा लिया। इसके बाद उसने अपने बिखरे हुए घुँघराले बाल समेटकर होठों और आँखों से विजय-गर्व प्रकट किया। जिस प्रकार बाज़ छोटी चिड़ियों को चंगुल में पकड़कर गर्वान्वित होता है, वही हाल मरिया का था।

४३

यही वह बात थी, जिसे मित्री सैनिन अपने सुनसान कमरे में काग़ज़ात उलट-पलटकर देखते समय, वह क़ीमती क्रॉस मिल जाने पर सोच रहा था। जिन घटनाओं का वर्णन यहाँ किया गया है, वे क्रमशः उसकी मानसिक दृष्टि के सामने से गुज़रीं······पर जब उसे श्रीमती पोलज़ो के सामने अपने उस विनीत भाव से प्रार्थना करने की याद आई, और अपनी इस गुलामी का स्मरण हुआ, तो उसने सोचना बन्द कर दिया। यह बात नहीं थी कि शेष बातें वह भूल गया था, इसके बाद की घटनाएँ तो और भी सजीव रूप में उसके मस्तिष्क में भरी थीं; पर इतने वर्ष बीत जाने पर भी उसकी याद से लज्जा के मारे उसका दम घुट रहा था और वह आत्म-घृणा से जल रहा था। प्रबल जल-प्रवाह की भाँति उसकी विचार-धारा उसके रोके नहीं रुक रही थी—वह उन विचारों से पीछा छुड़ाने की भर-

सक चेष्टा करने पर भी सफल नहीं हुआ। उस अपने उस धूर्तता-पूर्ण और करुणाजनक पत्र की याद की, जो उसने जेमा को लिखा था और जिसका फिर कोई उत्तर नहीं मिला।······क्या इतने असद्-व्यवहार के बाद उसके पास फिर जाना, उससे मिलना, उचित है ? नहीं, नहीं ! उसके अन्दर इतनी सज्ञानता और ईमानदारी शेष है । इसके अतिरिक्त अब उसे अपने-आप पर विश्वास नहीं रहा है, न आत्म प्रतिष्ठत का ही कोई अंश उसमें बाकी है। किसी भी बात में वह आत्म-विश्वास के काम नहीं लेता था। सैनिन ने यह भी याद किया कि किस कायरता के साथ उसने पोलज़ो का नौकर भेज कर फ्रैंकफ़ोर्ट से अपना सामान मँगाया था। किस तरह उसके दिमाग जल्दी से जल्दी पेरिस भाग जाने की बात चक्कर लगा रही थी, किस प्रकार मरिया के आदेश पर उसने सिड्रोइच को खुश करने का प्रयत्न किया, डनहॉफ़ से दोस्ती की और उसकी उँगली में एक वैसी ही अँगूठी देखी जैसी मरिया ने उसे दे रखी थी। इसके बाद उसके मस्तिष्क में और भी खराब और डरावने विचार आए···नौकर ने आकर उसे एक विज़िटिंग कार्ड दिया जिस पर 'पैंतलिवन सिपातोला का नाम छपा था। उसने छिपने की कोशिश की। कमरे से निकलने पर सामने ही बुड्ढा मिल गया, उसकी क्रुद्ध मूर्ति और उसके मुँह से निकलते हुए अभिशाप—यहाँ तक कि 'बदमाश' और 'धोखेबाज' के शब्द भी उसके कान में गूँज उठते हैं। सैनिन आँख मूँदकर सिर हिलाता है और बार-बार उभक-ऊभककर इस विचार से पिण्ड छुड़ाना चाहता है, पर वह अपने-आपको गाड़ी के अन्दर छोटी सीट पर बैठा हुआ पाता है···पीछे की आराम-देह सीट पर मरिया और सिड्रोइच (पोलज़ो) बैठे हैं। चार बलवान घोड़े वीसबादन से पेरिस जाने वाली सड़क पर उसे खींचे लिए जा रहे हैं।···सैनिन फल तराश-तराशकर दे रहा है और सिड्रोइच खा रहा है ! मरिया अपने गुलाम सैनिन की दशा देखकर मुस्करा रही है। वह हँसी प्रेमिका की नहीं,

मॉलिकिन की, अधिष्ठात्री की है,······पर हे भगवान् ! यह क्या ? शहर-पनाह के बाहर सड़क के चौराहे पर वह कौन खड़ा है ? फिर वही पैंतलिवन। उसके साथ दूसरा कौन है ? एमिल तो नहीं है ? हाँ, वही है—वही उसका प्यारा और भक्त लड़का ! कुछ ही काल पहले उसका चेहरा सैनिन के प्रति श्रद्धा से ओत-प्रोत था। वह उसका आदर्श था; पर आज उसका सुन्दर मुखड़ा, जिसे मरिया ने भी गाड़ी के बाहर मुँह निकालकर देखा, क्रोध और घृणा से जल रहा है। उसकी आँखें जेमा की आँखों से मिलती-जुलती थीं, सैनिन की ओर टकटकी लगाकर देख रही हैं, और उसके बन्द होंठ अब खुलकर सैनिन को धिक्कार रहे हैं······।

पैंतलिवन सैनिन की ओर उँगली उठाकर तारतालिया को दिखाता है। तारतालिया सैनिन को पहचानकर भौंकने लगता है। सैनिन को ऐसा मालूम हुआ, मानो वह कुत्ता भी उसे धिक्कार······और लानत दे रहा है

और फिर, पेरिस का जीवन और सब तरह का तुच्छतापूर्ण व्यवहार, दासता की घृणायुक्त अवस्था के बाद अंत में फटे-पुराने कपड़ों की तरह अलग फेंक दिया जाना···

इसके बाद स्वदेश लौटकर अपने घर जाना और विषमय और नष्टप्राय ज़िन्दगी गुज़ारना, ज़रा-ज़रा-सी बातों के लिए चिन्ता, दुःख अफ़सोस और व्यर्थ की उदासीनता। यह एक ऐसी सज़ा थी, जो प्रकट न होकर भीतर-ही-भीतर अनवरत रूप से छोटे, किन्तु असाध्य रोग की भाँति, या उस महत ऋण की तरह थी जिसे कौड़ी-कौड़ी करके अदा करते रहने पर कभी चुकती होने की संभावना नहीं रहती।······

प्याला भर चुका था।

दूसरे दिन सैनिन ने अपने मित्रों को यह सूचना देकर आश्चर्य में डाल दिया कि वह फिर विदेश जा रहा है।

४४

सैनिन ने अपने मित्रों से तो कह दिया कि वह विदेश जा रहा है, पर निश्चित स्थान किसी को नहीं बतलाया कि उसका इरादा कहाँ का है। पाठकगण समझ गए होंगे कि वह सीधे फ्रैंकफ़ोर्ट को रवाना हुआ। रेल जारी हो जाने की सुविधा से लाभान्वित होकर सैनिन रवानगी के चौथे दिन फ्रैंकफ़ोर्ट पहुँच गया। सन् १८४०ई० के बाद उसने फ्रैंकफ़ोर्ट फिर नहीं देखा था। सैनिन इधर-से-उधर तक अनेक बार उस सुपरिचित मकान की खोज में फिरा, पर उस का कहीं कोई पता नहीं लगा। पुरानी इमारतें टूट गई थीं और नये-नये ख़ूबसूरत मकान तैयार हो गए थे। अब वह क्या करे? कैसे पता लगाए? तीस वर्ष का समय कुछ कम नहीं होता—एक तरह से दुनियाँ बदल चुकी थी। जिस किसी से उसने पूछा, उसने यही कहा कि उसने रोज़ेली का तो कभी नाम ही नहीं सुना। होटलवाले ने उसे पुस्तकालय की शरण लेने की सलाह दी और कहा कि वहाँ पुराने सामाचार-पत्रों की फ़ाइल मिल जाएगी, पर अखबारों से क्या बनना था? निराश होकर सैनिन ने हर क्लुबर के सम्बन्ध में जाँच की। होटलवाला क्लुबर का नाम भली-भाँति जानता था, पर केवल नाम जानने से क्या काम बनता? क्लुबर महोदय ने तो बड़ी धूमधाम के साथ पैसा कमाया, सट्टा खेला और आखिर में जेल के अन्दर उनका देहान्त हो गया।......इस ख़बर से सैनिन को तो भला अफ़सोस क्यों होने लगा था? वह यह सोचने लगा कि उसका फ्रैंकफ़ोर्ट आना व्यर्थ हुआ......पर एक दिन वह फ्रैंकफ़ोर्ट की डायरेक्टरी उलट रहा था कि अकस्मात् उसकी नज़र एक नाम—'रिटायर्ड मेजर डनहॉफ़'—पर पड़ी। वह फ़ौरन एक गाड़ी में बैठकर डाइरेक्टरी के लिखे हुए पते पर पहुँचा, यद्यपि उसने अपने मन में

इस बात का विचार भी नहीं किया कि यह 'डनहॉफ़' वही डनहॉफ़ है; जिसने अब से तीस वर्ष पहले उससे द्वन्द्व-युद्ध किया था, और अगर यह वही डनहॉफ़ था तो इस बात का क्या निश्चय था कि वह रोज़ेली-परिवार का कोई पता बता सकेगा ? पर डूबते को तिनके का सहारा ही बहुत होता है।

रिटायर्ड मेजर डनहॉफ़ घर पर ही मिले। उनके बाल सफ़ेद हो चुके थे; पर थे यह वही सैनिन के पूर्व-कालीन प्रतिद्वन्द्वी महाशय। डनहॉफ़ और सैनिन ने एक दूसरे को पहचान लिया। मेजर साहब बड़े ख़ुश हुए, क्योंकि इस सम्मिलन से उन्हें अपनी जवानी के दिन याद आ गए। सैनिन को मेजर से मालूम हुआ कि रोज़ेली-परिवार बहुत दिन पहले फ्रैंकफ़ोर्ट छोड़कर अमेरिका चला गया था और जेमा ने न्यूयॉर्क के किसी व्यापारी के साथ शादी कर ली थी। मेजर ने यह भी बतलाया कि उनका एक व्यापारी मित्र जेमा के पति का नाम और पता आदि बतला सकता है, क्योंकि उसका अमेरिक से बहुत बड़ा व्यापारिक सम्बन्ध है। सैनिन की प्रार्थना पर मेजर ने जेमा के पति का पता मालूम कर लिया, जो इस प्रकार था—

मि० जेरेमी स्लोकम,

ब्रॉडवे नं० ५०१,

न्यूयॉर्क (अमेरिका)

सन् १८६३ ई० में उपरोक्त व्यापारी का यही पता था। उसी दिन सैनिन ने श्रीमती जेमा स्लोकम के नाम न्यूयॉर्क को एक पत्र डाला, जिसमें उसने लिखा कि वह उसका पता लगाने के ही उद्देश्य से फ्रैंकफ़ोर्ट आया। उसने यह भी लिखा कि उसे उत्तर पाने की आशा करने का कोई अधिकार नहीं है, और वह अपने को उससे क्षमा पाने के योग्य नहीं समझता। फिर आशा प्रकट की कि अच्छे वातावरण में पड़कर अब वह उसके अस्तित्त्व को भूल चुकी होगी। उसने यह भी बतलाया कि एक ऐसा अवसर आ गया जिसके कारण

उसे अपने जीवन की पूर्व घटनाओं को याद करना पड़ा। अपने वर्तमान जीवन का हाल बतलाते हुए उसने लिखा कि अब वह बिल्कुल एकाकी सन्तानहीन और आनन्दहीन जीवन व्यतीत कर रहा है और प्रार्थना की कि वह उस पत्र के लिखने का आशय ठीक समझ ले, क्योंकि वह अपने हृदय की उस ज्वाला को क़ब्र में जाने के पहले निकाल देना चाहता है और उसे उसके कुकृत्यों का बदला भयानक दुःखों के रूप में पहले ही मिल चुका; और अगर अभी तक कोई चीज़ नहीं मिली तो वह है उस (जेमा) की ओर से क्षमा। उसने अन्त में यह भी आशा प्रकट कर दी कि यदि उस (जेमा) का नाम-मात्र को भी उत्तर मिला जाएगा और वह अपने जीवन, और नई दुनिया का अल्पतम परिचय भी दे सकेगी तो उसके सुख की सीमा न रहेगी। पत्र के अन्त में ये शब्द थे—"मुझे एक शब्द लिखकर आप अपनी उच्च आत्मा के अनुकूल काम करेंगी, और मैं अपने जीवन के अन्तिम श्वास तक आपका धन्यवाद देता रहूँगा। मैं यहाँ उसी 'ह्वाइटस्वान' होटल में ठहरा हुआ हूँ और वसन्त-ऋतु तक आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।"

आखिर छः हफ़्ते के इन्तज़ार के बाद अमेरिकन डाकखाने की मोहर लगा हुआ एक पत्र उसके नाम आया। लिफ़ाफ़े पर लिखे हुए अक्षर अंग्रेज़ी शैली के थे।······सैनिन उसे पहचान नहीं सका, और क्षण-भर के लिए उसका हृदय गम्भीर पीड़ा से दब गया। वह फ़ौरन् लिफ़ाफ़ा नहीं खोल सका। खोलने पर उसने नीचे हस्ताक्षर देखा—'जेमा'। सैनिन आँसुओं के प्रबल वेग को नहीं रोक सका—पूरा नाम न लिखकर केवल जेमा लिखने के कारण सैनिन के हृदय में जेमा की ओर से क्षमा और पुनर्मिलन की आशा जागरित हो उठी! उसने नीले रंग का पतला काग़ज़ खोला, एक छोटा-सा फ़ोटो उसमें से गिर पड़ा। बड़ी शीघ्रता से उसने उसे उठाया—और आश्चर्य-चकित हो गया। जेमा! मूर्तिमती जेमा, जैसा उसने तीस

वर्ष पहले देखी था ! वह आँखें, वही होंठ, वही चेहरा ! फोटो के पीछे लिखा था— 'मेरी पुत्री मरियाना ।'' सारा पत्र दयालुता और सरलता से पूर्ण था। जेमा ने सैनिन को इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि उसने पत्र लिखने में हिचकिचाहट नहीं की और उस (जेमा) पर विश्वास किया । उसने इस तथ्य को नहीं छिपाया कि उस (सैनिन) के गुप्त हो जाने पर कुछ दिनों तक उसे बड़ा कष्ट हुआ; पर तो भी उस (सैनिन) का मिलना और परिचित होना उसके (जेमा के) लिए अच्छा ही सिद्ध हुआ, क्योंकि उसके कारण वह क्लुबर की स्त्री बनने से बच गई और इस प्रकार उसने वर्तमान पति के साथ विवाह किया, जिसके साथ वह गत अट्ठाईस वर्ष से पूरी शांति, आनन्द और उन्नति की अवस्था में है। न्यूयार्क में उनका मकान प्रसिद्ध है। जेमा ने सैनिन को यह भी लिखा कि इस समय वह पाँच सन्तानों की माँ है—चार लड़के हैं, और एक है लड़की, जिसकी उम्र अठारह वर्ष की है और जिसकी शादी भी होनेवाली है। फ़ोटो भेजने के सम्बन्ध में जेमा ने लिखा कि वह इसलिए भेज रही है कि लोग उसे जेमा की प्रतिमूर्ति कहा करते हैं। जेमा ने एक दुःख-पूर्ण घटना भी लिखी जिसकी चर्चा उसने अन्त में की । न्यूयार्क में फ्रां लीनोर का देहान्त हो गया, क्योंकि वह अपनी लड़की और दामाद के साथ अमेरिका आ गई थी; पर पोते-पोतियों का सुख भोगने के लिए बहुत दिनों तक जीवित रही थी। पैंतलिवन भी उनके साथ अमेरिका जाना चाहता था; पर फ्रैंकफ़ोर्ट से रवाना होने के कुछ ही दिन पूर्व उसका देहान्त हो गया था।"हमारे प्यारे एमिलियो ने अपने प्यारे देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़कर सिसली में वीरगति प्राप्त की, जहाँ उसने इटली के महान् देशभक्त गेरीबाल्डी के नेतृत्व में देश के शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए थे। हमें अपने उस परम प्रिय और अमूल्य बन्धु के अवसान का महान् शोक हुआ, पर हमारे आँसुओं में उसके शौर्य और देशभक्ति के अभिमान की मात्रा भी कम नहीं

थी। हमें सदा उस पर गर्व रहेगा और हम सकी पवित्र स्मृति से अपने मन-मन्दिर को सदा पवित्र करते रहेंगे। उसकी उच्च और निस्स्वार्थ आत्मा एक शहीद के ताज की अधिकारिणी है!" इसके बाद जेमा ने खेद प्रकट किया कि सैनिन का जीवन ऐसा असफल रहा और उसे शांति और आनन्द प्राप्त करने की कामना प्रकट की। उसने यह भी लिखा कि यदि कभी फिर उस से मिलने की सम्भावना हुई तो वह बहुत प्रसन्न होगी, यद्यपि वह जानती है कि इस (सम्मिलन) की सम्भावना नहीं है……।

पत्र को पढ़कर सैनिन के मन में कैसी-कैसी भावनाओं का उदय हुआ, उसका वर्णन करने की चेष्टा हम नहीं करेंगे, क्योंकि उन भावनाओं को व्यक्त करना शब्दों का काम नहीं है; वे बहुत ही गहरी, दृढ़ और अस्पष्ट हैं। केवल संगीत ही उन्हें तरंगित कर सकता है।

सैनिन ने पत्र का उत्तर तुरन्त दिया, और "मरियाना स्लोकम (जेमा की लड़की) को किसी अज्ञात मित्र की ओर से" एक मोतियों के हार में वही जेमा का दिया हुआ क़ीमती क्रास जड़वाकर विवाहोपहार के रूप में भेजा। यह भेंट बहुत मूल्यवान होने पर भी उसे अखरी नहीं, क्योंकि फ्रैंकफ़ोर्ट की पहली यात्रा से अब तक—इस तीस वर्ष में उसने काफ़ी धन एकत्रित कर लिया था। मध्य ग्रीष्म में वह पीटर्सबर्ग लौट गया, पर केवल कुछ-ही दिनों के लिए। अफ़वाह है, कि अब वह अपनी सारी ज़मीन बेचकर अमेरिका जाने की तैयारी कर रहा है।